प्रसिद्धकर्ता नंबर १

नदलालजीमेता मु उदेपुर
दे मेवाड जि राजपुताना

–पुस्तक मिलनेका पता
श्री जैन श्वेताम्बर साधुमार्गी जैनसभा
मु पो मन्दसोर जि मालवा–

[illegible] फागुजी कमाल इनमें गौरीशंकर छापखाना
[illegible]

विज्ञप्ती

प्रिय बन्धुओ इस ग्रंथमे अक्षरोंकी व पदच्छेद व ह्रस्व दीर्घकी अशुद्धिये बहोत ही रह गई है सो इसका कारण ये हैं की ये ग्रंथ ग्रंथकर्त्ताके समक्ष न ग्रंथकर्त्ताने अपनी हाथसे नहीं लिखा क्योंकी ग्रंथकर्त्ता और देशमे थे और ये ग्रंथ और देशमे छपा इस लिये इसमे जो जो अशुद्धिय रह गइ उसका दोष ग्रंथकर्त्ताकि व छपाने वालेके जुम्मेवार नहीं है इस लिये सज्जन पुरुष इस सुधारके पढे–इति.

प्रस्तावना

विदीत हो कि श्री परम तिर्थंकर श्री महावीर वर्द्धमान स्वामीके शासन प्रवर्त्ति—इस विषम और दुषम कालके अनेक प्रकारके कपोल कल्पित ग्रंथ—पुस्तक—बनाकर फिर उनका प्राचीन पूर्वाचार्योंके बनाये हुए ग्रंथोंमेंसे नाम धर दियाहै। और पूर्वाचार्य रचित ग्रंथोंमेंसे जि तात्विक पदार्थोंका तथा समकित—नय—निक्षेप—उत्सर्ग और अपवादादिक विचार और विवरण किया है। परन्तु अपने मत—पक्षके मकड पेंचसे उस प्रकरणको विष मिश्रित बना दिया है। वर्तमान समयमें हिंसा धर्मी रतन विजय, धर्म विजय, अमर विजय, वल्लभ विजय, चिदानंद, शान्ति विजय और सागर प्रमुख अनेक मतोंमें ग्रंथ बनाये हैं। उनोंमें कई प्रकारके अर्थका अनर्थ कर उलटा पुलटा प्रपरूप गोटाला कर दिया है। यह देखकर विचार किया तो वे अनेक प्रकारके फन्द मालु है ऐसा मालूम हुआ।

एक समय हमने महात्मा चिदानंदका व्याख्यान—भाषण सुना। उसने ऐसा बयान किया कि (धम्मो मंगल मुक्किट्ठं अहिंसा—संजमो तवो) हे भाइयों! धर्म परम—उत्कृष्ट—मांगलिक है। और धर्मका क्या स्वरूप है? "अहिंसा संजमो तवो" नहीं है हिंसा बिना संजम और तप। हे भाईयों! बिना हिंसाके धर्म होताही नहीं। मुग्ध लोग श्रवन कर बोले कि हे महाराज! आप बडे महात्मा हैं, पवित्र राज हैं। तब हमने विचार किया कि यह कैसा कुगुरु है! आप खुद उलटा पंथ पडे हुए है और बिचारे भोले लोगोंको संसार सागरमें डुबाते हैं। इसी रीतिसे सूरि सागर विजय इत्यादिक भोले लोगोंको संसार रूप भ्रम पाशमें डा रखे होंगे। इतनेमें कितनेक दिनके बाद पालनपुर निवासि—हिंसाधर्मी निर्वा वरी—रीखवचंद उगमचंद कृत "स्थानकवासी साधुमार्गीनी सत्यतापर

कुपराको " तथा हिमाचर्मी पितांबरी अमरविमय कृत " धर्मना दरवाजाने जोवानी दिशा " और " हृदय नेत्रांजन " नामक पुस्तकें हमारे हस्तगत हुई अर्थात् हमें मिली। उसमें देखा गया तो ज्ञात हुआ कि वे अनेक कुतर्कोंसे और अपनी कपोल कल्पना करके रचना की गई है। उनोंमें महासती पु सरस्वतीजी श्री पार्वतीजी तथा श्रावक वाडीलाल तथा कुन्दनमलजी–जेठमलजी–माधव मुनी–आदि अनेक उत्तम पुरुषोंसे दुष वचन द्वारा दोषित करनेकी अनिष्ट चेष्टा कर बताई है। ऐसे समयमें भी संघकी तरफसे दोनों कॉन्फरन्साके द्वारा लिखा-पढी से संप करनेकी कोशीश करनेमें आती थी। समाह हो रही थी। परन्तु संप करना तो कहां ही रहा मगर अधिक तर कुसंपका कारण प्रगट किया। विचार करनेसे समझमें आया कि " जैसा वैष वैसीही पुजा होनी चाहिये " और अमार भावि मित्रोंके हितार्थ " दुर्वादी हितशिक्षा सुमति प्रकाश " नामक इस छोटीसी पुस्तक की रचना करनेमें आइ है।

इसके अवलोकन करनेसे और पढनेसे सत्यता या सत्य और असत्य का निर्णय हो जायगा। जैसे सराफ लोग सुवर्ण और पित्तल इन दोनोंमेंसे सुवर्ण कौनसा है और पित्तल कौनसा है? इसकी परीक्षाके लिये उसको कसोटीपर कसता है और कह देता है कि यह सुवर्ण है और यह पित्तल। यह स्पष्टतया और निश्चय करके तुरतही कह देता है।

अगर चक्षुहीन–अंध मित्र हो–उसको तो प्रकाश बिल्कुल नहीं मालुम होता। फिर यह दीपकका प्रकाश हो चाहे सूर्योदय हो अथवा चंद्रोदय हो उसका काम नहीं आता। उसके लिये उत्तम ऐसा भी प्रकाश है निरर्थक है। किन्तु सहारेके लिये उसके हातमें एक लकडी दी जाय तो व बिचारा व्यवस्था हुआ चला जाय। अतएव अंध–नेत्रहीन मनुष्य हृदयमें–अंतःकरणमें लकडी रूप सुमति प्रकाश होना जरूरी है। क्योंकि

लिये यह " सुमति प्रकाश " सीत मन हितकारक है। बस यही प्रयोजन इस पुस्तकका समझ लेवें।

इस ग्रंथके तीन विभाग किये हैं। प्रथम भागमें हिंसाधर्मी पीतांबरी रीखवचंद टमकचंदका बनाया हुआ—झूठसे भरा हुआ कुहाडा उसके विषय में उल्लेख किया है।

द्वितीय भागमें हिंसा धर्मी अमर विजय कृत धर्मना दरवाजाने ओघानी दिशा शास्त्रमें देखनेसे विचार तो न दुर्गतिना दरवाजाने जावानी दिशा बताई है। और ढूंढक हृदय नेत्रांजन की किताबमें अमरविजयने जो झूठा बकवाद किया है—भास पाठ बताया है—उक्त किताबोंका यथा तथ्य खंडन किया है।

तृतीय भागमें हिंसाधर्मी अमरविजय और वल्लभविजयादिक निंदकोंके लिये हितशिक्षाके वास्ते लघुशिक्षा और बडीशिक्षा आदि अनेक स्तवनोंका संग्रह तथा सूत्रके पाठ सहित हितशिक्षा निंदकोंको दी गई है। स्वकृत श्री शास्त्री

प्रकाशक,
मुनि—नन्दलाल

॥ ॐ नमो वितरागाय ।

दोहा

अरिहंत सिद्ध प्रणमी करी, गणधर प्रणमुं पाय ॥
सत्यासत्य निर्णय भणी, कसौटी प्रेम के भाय ॥
वीतराग वाणी नमुं, प्रणमुं सद गुरु पाय ॥
धर्म दरवाजे पेखवां, मोक्षतणा सुख पाय ॥२॥
मतरूप नानाविध कह्या, तिण मांहे बहु फेर ॥
मति मिथ्याई मनतणी, मांहि मिथ्यायो जेहर ॥३॥
राखे जिनकी आसथा, पड़े जो भवजल कूप ॥
खरी वाणी वितरागकी प्रगट सूर्य सरूप ॥४॥
अरथांको अनरथ करे, झूठाको करे साच ॥
साचाको झूठ करे, नाचे बहुविध नाच ॥५॥
दरवाजे पूरब दिसे, पश्चिम खोजे जाय ॥
किण विध पहोंचे नग्रमें, भवगति मोया खाय ॥६॥
सबमें मुख गुरुदेव है, कुंचीदार कहेवाय ॥
धर्म दरवाजे खोलके, मोक्ष नगर पहुंचाय ॥७॥
साच्या देव गुरु ओळखो, दयाधर्म प्रतिपाल ॥
नकलीस तिरणो नहीं, बालकको यह ख्याल ॥८॥
असल नकलकी पारीखा, भणी रत्न ना काच ॥
[illegible] खोजना, नहीं [illegible] ॥९॥

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१९८	११	इंद्रया	इन्द्रि
१५८	२१	अताथि	अनाथी
१५९	१९	चरण	पुण्य
११	७	परोरे	पापारे
११	१३	नानबगा	मानुषगा
११	१४	मेहग्र	सटक
१६२	१४	पोवरु फरवे	पापा करत
१६२	१	अध्यप	आश्चर्य
१६४	१	भास्छ	भाद १ ॥
१६५	१८	इहासी	याहा न
१६६	१८	करव मे	करव हु
१६७	२	मोक्ष मार्गी	मोक्ष मागकी
१६७	४	मनाइ	नमाइ
१६७	९	मरी	मुर्दा
१६७	१९	तन	तम
१६८	२१	घरम	घरते
१७०	१०	इप परमजी	अपरमरमी

॥ अनुक्रमणिका ॥

दुर्पादि हित शिक्षा सुमती प्रकाश की अनुक्रमणिका

सुमती प्रकाश प्रथम भाग

द्वितिय भाग

तृतिय भाग

इस लिये सत्यासत्य समझ निर्णय करना उचित है। शास्त्रोक्त धर्म यथा —

आचारांगजी सूत्रका अध्ययन–उद्देशा पहेलामें पाठ कहा है सो लिख मुजब समझना।

" सेवेमि जे अईया जे पडुपन्ना जे आगमिस्सा
अरहंता भगवंता ते सव्वे एव माईखंती एव
पन्नवेंति–एवं परुवेंति– सव्वे पाणा–सव्वे भूया
सव्व जीवा–सव्वे सत्ता–न हंतव्वा–न अज्जावे–
यव्वा–न परिघेतव्वा–न परीतावेयव्वा–न उद्दवेयव्वा–
एस धम्मे–सुधे: णीइए–सासए–इत्यादि "

भावार्थ —भूत कालके, वर्तमान कालके और भविष्य काल (आगे होने वाले) के अनंता अरिहंत भगवंतोंका फुरमाना इसी मुजब है कि सब प्राणी व इन्द्रियादिक–सर्व भूत–वनस्पति–सब जीव–पंचेन्द्रि–सब सत्व–पृथ्वी–पाणी अग्नि–वायु–इन जीवोंको नहीं हणना–छेदन–भिदनमारणादि उपजावणा नहीं। यह धर्म शुद्ध नित्य और शाश्वता है। इसको कोई हटाने समर्थ नहीं है।

अहो भव्य जीवों! यह शास्त्रोक्त धर्म स्वीकार करने के योग्य है।

शिष्यका गुरु प्रत्ये प्रश्न—

शिष्य—हे स्वामिन्! यह यथोक्त–शास्त्रोक्त धर्म आपने कृपा करके मुझ कहा परन्तु दुषम कालके प्रभावसे कई कुमती पीतांबरी (रीखबचंद उत्तमचंदकोरह) जिनोंके मन कल्पित १ नया ग्रंथ बनायाजिसमें ऐसा बयान किया है कि उत्तम जनोंको वे न तो पढने योग्य है और न सुनने योग्य है। पीतांबरी रिखबचंद उत्तमचंद कृत " साधुमार्गी सत्यधर्मपर

कुआदो ?—और पीतांबरी अमर विजय कृत धमना दरशामाने नावामी दिग्ग-दुरुक हृदय नेत्राजन-इत्यादिक सुनकर मेरे दिल्में बडाही भ्रम पैदा हुआ।

उत्तर—हे शिष्य ! इसमें कोइ आश्चर्यकी बात नहीं है। क्यों कि श्री भद्रबाहु स्वामी चौदह पूर्वधर और श्रुत केवली थे। राजा चंद्रगुप्तने सबी रात्रिमें १६ सोलह स्वप्न देखे। जिसका अर्थ भद्रबाहु स्वामीने फरमाया है जिसका स्वप्नमें पहलाही भद्रबाहु स्वामी फरमा गये हैं सो पाठ नीचे मुजब

" चउथे अन्न हाले कोउ लेहि भूया नचर्शा रामफल
तेण कुमति जणा परपरा गमण बदिया मर्छन्न स्परिया
सर्वमव सेंजमाया आगाम पढे याइ बनीष मन्नामीणा
भग पुत्ताइय दुवर्भग धाणिण जय तसेय सुव अय मव
गाहिया—उक्तेणीयां—मपतेणीया—सुलभणीया—भय ते
णीया—भूया—इव—नचीसन्दि—कुन्देन—कुगुरु नमामतीए" ॥इत्यादि॥

सम्यार्थ—चोथा स्वप्नाके फलमें एसा कहा है कि—कुमति जन परंपरा गमणं-कर्ता परंपरागम सूत्र चारित्र धम रूप कहनेवाले स्वयमत मजम अर्थात् गुरु बिना मन्त्र संकर समझी माम धारेंगे। फिर आगममेंमे पढ हुए गामकी तरह निर्दय-दया रहित वाणीके प्रत्यक्ष-थंप्याक पुत्र समान-हिंसाधम भाषण करनेवाले द्रव्यलिंगी जहां तहां सूत्र—अर्थके चार, तपके चार, और वचनके चार, कुमत, कुगुरु, कुधम मानकर मूरखी तरह मर्वेगा। सा यह प्रत्यक्ष पीतांबरी कुगुरु हिंसाधर्मी दिखाइ देते है।

स्थानकवासी साधुमार्गी मस्वता उपर कुहाडाका देता हिंसाधर्मी रामबंध उत्सर्पेद पृष्ठ ३ में लिखता है कि—' महावीर स्वामीना बखतमां शासन

नो सत्र गोशालाके हता वर्तमान समयमें वाढीलाल छ ? ऐसा लिखना मर्हा फक्त है। क्यों कि गोशालाके मनहरूमेंतो कम पटेतो आधाकर्मी आहार करना, कच्चा मल पीना, सचीत बीज खाना, स्त्री सेवन करना इनोंमें कुछ दोष नहीं है। ऐसा सुयगडांग सूत्रस्थ श्रुत २ अध्ययन ६ में कहा है। साधुमार्गी वाडीलाल प्रमुख ऐसी प्ररूपणाहो नहीं करते। कामन तो पीतांबरी रिखवचंद उगमचंदके पुस्तकमेंका है। कि कारणसे आधाकर्मी आहार करना कच्चा मल पीना, सचित बीज खाना, स्त्री संग करना, जूते पहनकर रस्तेमें माना, स्वारी करना, मोजे पहनना, मदिरप दरखत होवे तो परर बालना, धर्मके द्वेषी मनुष्यको मारना, प्रतनीवके वास्ते देह धारण करना इत्यादिक विरुद्ध प्ररूपणा करते हैं। अतःएव अवलव्यान पुस्तकम माल्लुम होता है कि यह रिखवचंद उगमचंद इत्यादिक पीतांबरी गोशालाके मताउसार शासनके द्वेषी हैं।

पेज इन्हावेके पृष्ठ ९ में पीतांबरी लिखते हैं कि साधु छ कायाकी यतना करे तो स्नाव–पीव–इनुनीत या पडीनीत करे या नहीं उ रे–मृतक शरीरकी दग्ध क्रिया करे तो हिंसापाय (इत्यादिक) अहारे मूड लोगों साधु आहार विहार–विहार करे वा वस्त्र व्यवहार है। आचारांग ज्ञाता अध्ययन २ में खुलासा फरम है। भगवतिमी उत्तराध्ययन आदि अनेक सूत्र–सिद्धान्तोंमें लिखा है सो विचारो! जन्म भरमें भी नहीं पता लगा। उनके गुरुने कभी सुनाया भी नहीं होगा। तब ऐसा लिख मारा है। जो कोई दरसन करनको आवे उसको मोमन कराना यह भावकोंका छांदा है। मगर साधु तो मन दरक भला नहीं जानत। और उसका उसवयभी नहीं देवे। मृतक शरीरका अग्नि दाह सस्कार करना ये संसारीयोंका व्यवहार है।

उत्तर—वाह, मूरखमी वा !!! अच्छी तुमारी बुद्धी तुमारी अवलकी क्या तारीफ करें। जो प्रतिमाकी पूजा–प्रतिष्ठा–गुरुकी अग्नी संस्कार किया

महाराजका कहना और करना एकसा है । और साधुका आचार सो भी श्री दश वैकालिक सूत्रके अध्ययन ६ में कहा है जिसकी गाथा—

> दस अठेर्य ठाणे रहीं जाइ बाल्लो वरजई सत्य ॥
> अनयर ठाणे निगया ताऊ मासई ॥ ७ ॥

भावार्थ—१ और ८ य १८ स्थानक जो बाल अज्ञानी सेवित यान विराधे उसका निग्रन्थनस उस अस्थानसे भी वीरप्रभुन उसकी भ्रष्ट कहा हैं। य १८ स्थानक कौनस सो कहते हैं । व दशवैकालि सूत्रकी ८ मी गाथामें कह है सो नजर मालकर लेना ! यथा

> वय छक्के काय छक्के अकपो गिहि भायणे ॥
> पर्ली अंक निसिज्जाए सीणणं सोभ वज्जणं ॥ ८॥

भावार्थ—है पूत जिनमें पहल व्रतमें स्थया प्रकारसे हिंसाकी निवृति —तीन करण और तीन जोगसे—१—झूटकी निवृत्ति तीन करण और तीन जोगसे—२—चोरीकी निवृत्ति तीन करण और तीन जोगसे—३—मैथुनकी निवृत्ति तीन करण और ३ तीन जोगसे—४—५परिग्रहकी निवृति ३ करण और तीन जोगसे—५—रात्रि भोजनकी निवृत्ति तीन करण और तीन जोगसे—६—पृथ्वी कायके हिंसाकी निवृति तीन करण और तीन जोगसे—७—एसही अपकाया—८—एसही तेउकाया—९—एसेही वायु १० एसेही वनस्पति ११ एसेही त्रस कायाकी—१२—अकल्पनीक यानि सदोष आहार—वस्त्रपात्र भोगते नहीं—१३—गृहस्थके भाजन (बरतन) उपयोगमें न लेवे—१४—पलंग—मांचा,मांची, कुरसी, मुंडा न भोगवे—१५ गृहस्थके घरमें जाकर न बैठे—१६ स्नान देशतकी हाथ—पैर—मुख—धोवे नहीं, सर्वथकी सारे शरीरसे स्नान करे नहीं—१७—शरीरका शृंगार करना समारना—काजल—टीकी—अत्तर फुलेल कच—कांसक्या—इत्यादिसे शरीरादिकको विभूषा याने सजावट यानी

-गारे और नौबत किस वास्ते बजते हैं? जिन्दा भैसाको मारकर उसकी ताजी खालका बनाते हैं। उसके बजानेसे धर्म है ऐसा कथन करना यह अरिहन्तोंका धर्म नहीं है मगर ये काम मूर्ख और अज्ञानोंका काम है। रोशनी जो करते है जिसके अन्दर मच्छर-पतंग-डांस वगेरह सैंकडों जीवोंका बध-हिंसा होता है और यह लोग ऐसी हिंसाका उपदेश करते हैं कि मन्दिरमें रोशनी करना, ढाल नगारा बजाना, धूप-दिप करना इत्यादि। इतने कहते-करवाते और उपदेश देते हैं तो भी और फिर कहते हैं कि हम जैनके साधु है। इस जगह पर अकलमन्द पुरुषोंने विचार करना चाहिये कि जैनके मुनि-साधु ऐसा उपदेश कदापि नहीं देते। और जो देते हैं उन्होंको जैन साधु-धर्मके उपदेशक कैसा माना जावे! कदापि नहीं माननेमें आवे।

१२ अरहन्तनीक वस्त्र-पात्र मोलके मंगवाकर लेते हैं। आहारके वास्ते ताजा-ताजा माल बनवाते हैं। इनके भक्त लोग इनकी तरफसे या तो उन्होंकी तरफसे अगाउसे घरमें जाकर कहे कि हे भाइ! आज महाराज आपके यहां (घर) पधारेंगे। और आपका तथा आपके घरको पावन करेंगे। आपको तोरेंगे। फिर उसका भाव हो या न हो, विचारेको करना ही पडता है कि हे महाराज! आज मेरे यहांकी भावना है। अतएव यह लोग सबे उपाससे करते उसके घर जाते हैं, सुजता-असुजता कुच नहीं पूछते जैसे (भगीवादीम मदकी मवीता) भमि आदम और सुख सम ही को मसाकर भस्म कर देती है इस ही प्रकार सुजता असुजता यह कुछभी नहीं पूछते। जल्दी जल्दीसे पात्रा भरकर ले जाते हैं। पाणी इनोंके लिये घर घरमें दयाके ठाम उकलते हैं। इनोंके लिये इनोंके भक्त जन जो मकान बनाते उसमें यह निडरपन उतरते हैं-रहते हैं।

१३ गृहस्थके भाजन यह पीनोंकी लोग अच्छी तरहसे भजाते हैं।

यदि काइ दलील कर कि क्योंमी ! यह क्या भाजन मामते हैं ?

उत्तर—देखिये ! धर्म धामके लिये गृहस्थके यहांकी थाली कुवाडीयादि मोटे-माटे भाजन और छाट जो गिलास प्याला दवाईयोंके वास्ते निरपन अच्छी तरहसे मोगते हैं मगर प्रभुके हुक्मका तो इनोंको बिलकुल डर ही नहीं है । वलिये ! यह पीताम्बरी कुछ नहीं समझते । बिचार क्या कर मूर्तिके आसरेसे पत्थर ल्याते हैं ।

१४—खीर्पक-पलंग-खोलिया-कुरसी-बैंच-मुड्डा-पर्म-म्यानेमें-रलमें यह पीताम्बरी बैठते हैं

१५—गृहस्थके घर जाकर बैठते हैं ।

१६—स्नान करते हैं, हात-पैर-मुख रगड रगड कर धाते हैं और कुल्ला करते हैं ।

१७—शरीरका शृंगार करना-कंगमा-इत्तर-फुलेल वगेरह करते हैं । यह अठारह स्थानक संपूर्णम् ।

हे पीताम्बरीयों ! यह बेशतर ना १८ स्थानक कहे जिसमेंस एक भी तुमारी अंदर नहीं पाते हैं । और शास्त्रोंमें गुरु नाम कहाकर निर्दोषी शुद्ध मुनि कहते हा और शास्त्रकार वक्ता तो यह प्रतर्लिगी भ्रष्टाचारी नजर आते हैं ।

प्रश्न—क्योंमी ! मनुष्य इनको क्यों मानते हैं ?

उत्तर—इन पुजेरोंके अंदर संयमका गुणता बिलकुल पाते ही नहीं । और बिचारे मूर्तिके आसरेसे उदर पूर्ण करते हैं । देखो चंद्रगुप्त राजाके ५ में स्वप्नमें क्या लिखा है सा पाठ नीचे मुजब है—

रिद्र प्रभाव बनाकर मन और द्रव्य एकत्र करेंगे। उन मार्गमें पड़े हुए जो कोइ शुद्ध मार्ग प्ररूपक साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका-उनकी हील्णा निंदणा खींसणा करनेवाले कुमती मन होवेंगे।

ऐसा कुमती नन प्रत्यक्ष पीतांबरी रिखबचंद उमगचन्द परम नजर आता है। सो साधु मार्गीनी मसता उपर कुहाडो नाम पोथी याथी बनवाकर बनाकर श्रावक श्राविकाओंको दुवचनसे हिलणा निंदणा-खीसणा इस किताब करी है। इससे माळुम होता है कि भद्रबाहु स्वामीन जो हिंसा धर्म फरमाया है सो ओर नहीं है यह ही है। एसे महामूढ अज्ञान जिनोंमें मूल हुए हैं। एसे हिंसाधर्मी इस लोकके स्वार्थी इन्द्रियोंके पोषक-धमका नाम लेकर लाखों रुपैये खर्च धरक हिंसारूप आरंभ मसुल बोते हैं। फिर विशेष वस्तुकी इच्छा हो तो दादाजीका बनाया हुआ सिषपट्टामें देख लेना। फिर भस्म ग्रहके प्रभावसे अथवा दुषम कालके प्रभावसे-यथा दसमा अच्छराके प्रभावसे (असाधु पुजमंती-साधु न पुजमति) इसी कारण वास्ते आडंबरी-पाखंडी हिंसाधर्मी-तत्पर सावधान हो रहे हैं। कबीरजीकी एक साखीमें भी कहा है कि—

> जैनमें फल पैदा हुआ पेलका दरद तो जाय नहीं
> कण बिना कुकस सदा कुल्य रह कर करमकी मरमाहा
> दया मुखसे कह सदा निर्दयी रहे। तोडस जीननर
> जीव पूजे कहत कबीर हो जनमके आपसे सारे और
> झूटको नाहि मूजे ॥ १ ॥

झूठे कुहाडके पृष्ठ ९ पर पीतांबरी रिखबचन्द उमगचन्द लिखता है कि १९३२ के साल पहले एकसे कालगमी पहेला जैन धर्मना मूर्ति

उत्पादक हुता ऐसा लिखना साफ झूठ है क्यों कि जब खरतर गच्छ स्थापन हुआ तब तब अनहलपुर पाटनमें राजाकी सभामें ८४ चैत्यवासीसे चरचा करी वहां चैत्यवासीयोंने सूत्रके पाठकी चोरी करी। उनकी पाठकी चोरीको देखकर राजाने चैत्यवासीयोंको झूंठा कहा। और कहा कि अतीखरा ताते खरतर नाम हुआ। इसलिये ये भी दया धर्मी था। दादाजीका बनाया हुआ संदेहदोलावली ग्रंथ देखनेसे मालूम होता है कि वह भी मूर्ति उत्पादक थे और तुमारे आत्मारामजी लिखते हैं कि अभयदेव सूरिजी दादाजीको अन्यमती समझकर पाट नहीं दिया। अतएव साबित होता है कि दादाजी मूर्ति उत्पादकके पक्षके थे।

और स्वामीने दीक्षा लेनेकी आज्ञा मांगी तब वीरजी वोरा बोला कि लोंका गच्छमें दीक्षा लो तो आज्ञा दूं नहीं तो नहीं। तब स्वामीने लोंका गच्छमें दीक्षा लेकर फिर निकल गये। अब मरा पक्ष -में देखकर झूठ्यका नेत्र खोलकर देखो कि लोंकागच्छके सिवाय और भी दया धर्मी साधु मौजूद थे। जब वोरा स्वामीने कहा कि और गच्छमें दीक्षा लो तो आज्ञा दूं नहीं ता नहीं दूं। हां, यह बात जरूर है कि मूर्ति पूजक बहुत थे और नहीं पूजनेवाले थोडे थे। क्यों कि भस्म ग्रहके प्रभावसे-जोरसे हिंसाधर्मी-मिथ्यात्वी और पार्श्वी बहुत थे। और दयाधर्मी थोडे थे। संवत १९१२ के सालमें दया धर्मकी बहुत तरक्की हुई। और हिंसाधर्मी घटे।

झूठे कुहारेके पृष्ठ १० में पाटपर सस्ती स्वामीए संप्रति राजाको उपदेश देकर चैत्य कराया। यह तो तुमारे मतवालोंका कहना है। कल्याण मंदिर स्तोत्र बनानेवाले बनते पार्श्वनाथजीकी प्रतिमा प्रगट भई। इत्यादिक। ओहो! मतमें अंध बने हुए मनुष्यों! ये कल्याण मंदिर स्तोत्रका करता दिगम्बर आचार्य था। और कल्याण मंदिर स्तोत्र

किसी कारण बरात् किया है। श्री पार्श्वनाथप्रभुकी प्रतिमा दिखाई दी इससे क्या मूर्तिकी पूजा करना ऐसा सिद्ध करते हो। हे मूर्ख जीवों! जैसे कोई पुरुष आंखोंमें अञ्जन कीया आंख सुंदर दिखानेसे विचारेकी थोडे अञ्जनके आंजनेसे ही आंखे खुल गई है तो फिर हात भरकर सारा ही मुखके लेपन करनेसे क्या व बहुत ही खूबसूरत दिखाई देगा? ऐसा विचार करके हाथभरके सारे मुहको वो अञ्जन लेपन करदीया जैसे तुम हो। तुमारे तात्पर्य-जो बुद्धिवानोंने स्थापन करी जैसे बालकको खिलौना देकर बालकका चित्तप्रसन्न हैं और मातापित अपना कार्य इनसे लेते हैं तैसे ही मुनि महाराजा थोडे रह गये। बहुतसे जैनी भक्त अन्य मतोंमें जाने लगे। तब लोगोंको बालक समान समझकर ख्याल रुप आलम्बन करके जैनमें रखा। दृष्टांत रूप यह समझ लेवे कि-लडकी बालपनेमें जैसे गुड्डा गुडीका खेल व समझमें करते हैं। फिर जब विवाहादिक कार्य हो जाय तब गुडा गुडीका खेल कामका नहीं है। ऐसे ही जैन धर्मका तत्व पहिचाने बाद मूर्ति पूजाकी जरूरत नहीं है क्यों कि फिर तो उसको मालूम हो जाता है कि यह मूर्ख लोग सीफ गुडा और गुडीका खेल खेलते हैं।

झुठे कुहाडेके पृष्ट १९ में लिखा है कि त्यागी मुनिनिरोए ता ते पुजा करवानी नथी पण श्रावको-गृहस्था मे मिथ्यात्व धनादि देव आगल मूर्त्ती पुजा करे छे ते ओम देव (महा उपगारीनी) भक्ति तरीके करे छे। जेम के कोई महाराजा आगल कोई गृहस्य जाय छे तो ते मना पण ते गृहस्थ बिना तरीके कांईक मूके छ ते गृहस्थ राजा आगल प्राय खाली हाथ जतोनथी तेम देव छ ते महान राजा करता पण मोटा छ ते मना आगल खाली हाथ नहि जातां कांईक द्रव्य मुकवुं।

उत्तर—यह लिखनेवाला महामुढ और दया सुक्ष्मिपात्र है। राजाके आगल धनाढ्य-जागीरदार—राजापति कोई धन भेट करता है कोई अध-

हाथी–घोड़ा–प्याला–पालखी वगरह मट करते हैं। कदाइ अपनी पुत्री भी राजाको भट करते हैं तो तुम भी कदापि इसको महाराजा समान समझकर इत्यादिक भट करते हो लेकिन कभी तुमारी पुत्रीका भी भट करते हो या नहीं करते हो ? अहो भव्य जीवों राजा तो मांगी है और प्रभु कदाचित् तो त्यागी है और त्यागी ही उनोंकी मूर्ति है तो फिर उनोंको क्यों और किस लिये मांगी बनाना ? त्यागीको मांग्य वस्तुकी भट करना यह काम मातोरक मनुष्यका है।

झूठ कुहाडके पृष्ठ १९—समवायंग सूत्रमां भगवानको समवसरणनी मांको मण आवे छे चौतीस अतिशयनो अधिकार छे ते अधिकारमां सुगंधी पाणीनी वर्षा थाय छे जल–थलमां उत्पन्न थएला फूलोनी वृष्टी थाय छे। भगवान सुवर्ण कमलपर चाले छे ए वगेरे वर्णन आवे छे इत्यादिक।

ऐसा लिखना अज्ञान हिंसाधर्मीका है यकीन होता है कि उसने प्रथम उपासक दशांग–रायपसेणी और जंबूद्वीप पन्नति की व्याख्या किसी गुरुके मुखसे नहीं सुनी है। और अगरचे सुनी होती तो ऐसा कदापि मूर्खपणसे नहीं लिखता। वहां तो जल–थलके उत्पन्न हुए कहा है सो उसका वाचक है। वास्तवमें तो वे वैक्रिय किये हुए हैं। सुगंध पानी कौनसी बावडीसे लाया और पुष्प भी कौनसे वनसे सरोवर से तोडकर तो नहीं लाये। मूर्खजी ! अगरचे वह जल–थलके पुष्प होते तो भावक मन पुष्पादिक समवसरणके बाहर धरकर क्यों आते ? तुमने पांच अभिगमका कभी सुने हैं ? ऐसी परम पवित्र वाणी नहीं मिली बुद्धिहीन को कहांसे मिलती है ! जल–थलके जो होते तो सूक गामेके बाद और भगवान के समवसरण के बाद पडे रहते होंगे ! सूके गामसे कूडा कचरा भी होता होगा ! अय पीतांबरीयों ! वह पानी और फूल सब देवके बनाये हुए होते हैं वे अचित होनेसे पीछेसे भिलस जाते हैं ! भक्तामर स्तोत्रकी ३१ वी गाथामें कहा है कि (उन्निद्र हेम नव पंकज

पुगकान्ति) हेम कदल सम कहा है । इत्यादि । नव पुष्प संख्या यथा नव सुवण मयी कमलाकार पुष्प देवता प्रभुके पांवके नीचे धरत हैं । वे पुष्प अनमने जल-थलके होते तो नव हेम सुवर्णका पुष्प नहीं कहते । क्यों! तुम विचार भोले मास मनुष्योंको उन्मत्त पुष्प अगडम् बगडम् समझाकर आपमा मत रूप भ्रम चक्रमें पडकर औरोंको क्यों डुबाते हो ? पाथ पोथ बनाकर मनमाना कल्पित अगडम् बगडम् लिखकर, लोगोंकि हृदयमेंसे दया निकालके निर्दयी और कठोर हृदयी क्यों करते हो ? क्या एक अपना मत चलानकीही रट पकडकर बठे हो ?

पृष्ठ कुन्दावक पृष्ठ १८ में लिखा है कि १२ गुण भगवताक लिखकर भगवताके प्रभावकी गुणी प्रतिमा धरी है । प्रतिमाका फूल चढानेमें बडा भारी धाम समझकर पृष्ठ १९ पर लिखा है कि तथी रीत करता फूलानां जीवोने अभयदान मले छ । यह लिखना अनाय धम बालोंका है । इसकी गवाह सूत्र आचारांगका उदेसा ९ और अध्ययन धार्मे देख लेना ।

अब देखिये । पीतांबरी आत्मारामजीने जैन तत्वा दर्शमें बड़ांन्हिके सबदमें (अहिंसा परमो धम) लिखवाया । अब उनका महात्मापी लिखता है कि जो फूल चढाया जाता है उनको अभयदान मिलता है । अब बुद्धिमान सज्जनोंका विचार करना चाहिये कि जैसे वेदानुयायी कहते हैं कि वेद मंत्र पढके बकरा अथवा अश्वादिक हवन करनम यज्ञादिमें वध किये जाते हैं उन पशुओंको स्वर्गवास होता है । इस ही तरहसे मुसल्मान कहते हैं कि जो कम्मा पढकर हलाल किये जाते हैं वह भिस्तिके पास पहुंचते हैं । एसे ही हिंसाधर्मी पुजेरोंका मत है कि जो प्रतिमाके फूल चढाये जावें उनोंको अभयदान मिलता है । हम उनोंसे पूछते हैं कि जब ऐसा ही है तब तो पानीके जीवोंको भी अभयदान मिलना होगा । और

जब उनोंको अभयदान मिलता है तो फिर पानी अनमकी क्या जरूरत है ? ज्यों ज्यादह जीवोंको अभयदान मिले वैसा करना। और प्रतिमाके आगे अग्नि धूप और दीपके काममें आती है उसके जीवोंको भी अभयदान मिलता होगा। अहो हे दुम्मती ! पीतांबरीयों ! तुमारा उक्त प्रकारका कथन सूत्रसे तथा अहिंसासे विरुद्ध है। और सूत्रमें कहा भी है कि—

> आरंभिय मुईरंभ विणासयंते बीया ईं असजत पाय दवे ॥
> आहुसे ल्याए मणूस धम्मे हरियादि जेही संधी आया सावे ॥९॥

सूत्र कृतांग सूत्र अध्ययन ७ मा गाथा ९ मी.

उक्त गाथाके अर्थमें देख लेना।

भावार्थ—वनस्पत्यादि जीवोंका वध करके धर्म माने उनको भगवान श्री वीर परमात्माने अनार्य धर्म कहा है। अनार्य धर्मी पीतांबरीयोंके समान कौन होगा ? अनार्य धर्मवाले यही पीतांबरी खुद हैं। जो फूल मूर्तिको चढाये जाते हैं उन जीवोंको अभयदान मिलता है, ऐसी विपरीत और शास्त्रसे विरुद्ध प्ररूपणा करके सारे जैन धर्मका दट्टा कर दिया है ! अब इन पीतांबरीयोंकी क्या गति होगी ? अफसोस ! नाश्व है इनोंका हमार बार !

और इस बेवकूफीसे भरे हुए झूठ कुठारकेके पृष्ठ २० बीससे ? तक आस पास ज्यों त्यों साक्षी बकवाद करके पाने भिने हैं और वे फलफे तथा वे समझसे अथवा अज्ञानतामें ग्लान पची करी है।

परमार्थ उनका यह है कि स्त्रीका चित्र देखकर जैसे काम विकार उत्पन्न होता है ऐसे ही हमें वीतरागकी परमात्माकी प्रतिमा देखकर वैराग्य उत्पन्न

होता है। इस मुताबिक इनोंका लिखना गलत हैं। वाहजी, वाह! कहन कुछ और करत कुछ और पूछनेसे तुरत ही रूक जाते है। जो आंकाका चित्र है अथवा जो प्रतिमा है या मूर्ति है उसकी किसी में प्रतिष्ठा नहीं करी है तथापि उसका दर्शनेसे क्रम विकार उत्पन्न होता है। अनेक प्रकारकी भिन्न प्रतिमाए जैसे कि काष्टकी, पाषाणकी, वगेर प्रतिष्ठा की हुइ, मंदिरोंमें अथवा मंदिरोंके बाहर, अनेक स्थानपर खडी हुई या बेठी हुइ, कारीगरसे निर्माण करी हुइ उस मूर्तिको दर्शनसे तुमको वैराग्य प्राप्त होता या नहीं होता? और उसकी पूजा करनेमें या उसका वंदन करनेमें क्या हरज है तो इस प्रश्नका उत्तर यह मिलता है कि वे सूरिमंत्रस प्रतिष्ठित नहीं हुइ हैं।

उत्तर—सूरिमंत्र करनेसे फूकनेसे क्या उसका रूप बदल जाता हैं? यहां स्त्रीके चित्रका हेतु लगाना तुमारा खाली मजवाद करना है। मूर्तीकी पूजा करनेसे, उसका वन्दनसे–उसकी सेवा भक्ति करनेसे या स्तवन करनेसे मोक्षके कार्यकी कदापि सिद्धी नहीं हो सकती। कहा भी है कि—

> त्यजेद्धर्मं दयाहीनं, विद्याहीनं गुरुं त्यजेत् ॥
> त्यजेत्क्रोधमुखीं भार्या, निस्नेहान् बांधवांस्त्यजेत् ॥ १६ ॥
> अग्निर्देवो द्विजातीनां, मुनीनां हृदि दैवतम् ॥
> प्रतिमा स्वल्प बुद्धिनां, सर्वत्र समदर्शिनाम् ॥ १० ॥

वृद्ध चाणाक्य नीति अध्याय ४ था

इसलिये! इस श्लोकमें भी कहा है अल्प बुद्धिवालोंके वास्ते प्रतिमा–मूर्ती है।

पृष्ट ३ दयाके द्वेषी लिखते हैं कि तमा पुकारा छा दयापण जैन मदिर यथा प्रतिमार्थां तमन इव छ तना मानवामां तथा पूजवामां हिंसाधाम छ एमी दया पाळा छो त कांइ बचारे नजर दखाती नहीं इस प्रकारसे तुमारा लिखना झूठ हैं। अहा ! हमार नाम मित्रों ! स्थानकवासी साधु या श्रावक किसीका भी जैन प्रतिमा उपर द्वेष नहीं है। जिन प्रतिमा तो हमार भगवानकी है। उसके उपर द्वेष कैसे करे ! लेकिन ठाकुरजी, शिवजी, हनुमानजी, माताजी, आदिक उपर भी द्वेष नहीं है। द्वेषी सो तुम खुद पुजेरेही हो ? हमारे जैन सिद्धांतामें हलन–चलन–भान जानमें भी हिंसा लाती है। उसकी आलोचणाके लिये प्रतिक्रमण करते हैं उसके आगे शुद्ध होते हैं। उसमें तुम हमार पर प्रवृत्तिका हेतु लगाते हो सो झूठ है। क्यों कि तुम भी पूजा करके करवाके आलोचणाका पाठ बोलते हो (जो में पुमीया–धुपीया नचावीया तस्स मिच्छामि दुक्कड) यदि तुम न बोलते तो ठीक था मगर तुम तो ज्यादह हिंसा करनेमें ज्यादा धर्म और थोडी हिंसा करने थोडा धर्म मानते हो। एसी तुमारी उत्सूत्र प्ररूपणासे तुमको मिथ्यात्व दृष्टि–अनाचारी और द्रव्यलिंगी हम कहेंगे। साधु लोग दया पालते हैं व तुमारे नजरमें नहीं दिखाई देती सो क्या तुमारे नत्र फूट गये है ? फूट गये हो तो हम उसका क्या इलाज करें। साधु जो दया पालते हैं यह तो अंग्रेज–मुसलमान–विष्णु वगैरह मतवाले लोग जानते हैं। किसी भी मतवालेको यह पुछ देखो कि ढुंढीया साधु दया पालते हैं या पीतांबरी दया पालते है ? तो हरेक साख कहेगा कि ये ढुंढिये साधुके बराबर दया पालने वाला कोइ नहीं है। और हिंसाधर्मी पीतांबरी मालुम रता रता कर मस्त हो रहे हैं।

फर पृष्ट ११ पर ढुरांगे लिखते हैं कि मेला गंदा सुगंधी पहेरी रास्तामां तथा अशुचि विगेर वासणमां तमो बचारे दया पालोछो

तवो मानता हो तो अघोरी लोको तम्हारा करता बघारे दया पाले छे इत्यादि।

अरे जिन वचनोंके द्वेषीयों ! जैन सिद्धांतोंमें साधुको स्नान करना और साबूनसें कपडे धोना कहा नहीं है। तुमार भी प्रतिक्रमण दरसन समकित की पातीमें कहते हो कि साधुके मलीन कपडा मलीन गात्र देखकर दुगंछा करी होय वे मिच्छामी दुक्कडं। अर अघो ! तुमको शर्म नहीं आती है जो सिद्धांत प्रवचनोंकी हिंसाएत करते हो और तुमारा कुहाडा तुमार पैरोंपर गिरता है ! तुमको मालुम नहीं है की तुमारे ग्रंथोंमें अशुची अभक्ष खाना लिखा है सो हमने यहां नहीं लिखा है। लेकिन तुमको मालुम है या नहीं तुम क्यों अपनी सिद्धांतों का उत्थापकर साधु मुनिराजाकी हेलना करके अघोर पाप कर्म उपार्जन करते हो। एसा अघोर पाप से अघोर आचरण करके अघोरी लोगोंसे ज्यादा तर अघोरी पीतांबरी रीखबचंद हमचंद और उनके साधु तथा उनका धर्मनमर भाता है

पृष्ठ ११ में लिखा है कि मुंहे मुहपति बांधवाथी बारह घडी बाद उसमें पंचेन्द्रिय समुर्च्छिम मनुष्य जन्मे और मरे। इत्यादिक।

यह भी लिखना असत्यवादीका है क्यों कि समुर्च्छिम मनुष्य उत्पन्न होनेके १४ स्थान कहे है। जिसमें मुंहका स्थान नहीं है। थुक तो मुखमें हमेशांही रहता है। कदाचित् मुखपती अगर झाग्से जीव उत्पन्न हो सके है। मगर बंधी रहनेसे मुखकी गरमीसे जीव कदापि उत्पन्न नहीं होवे है।

झेठ कुहाडा के पृष्ठ ११ से लेकर १८ तक कई गप्पें सप्पें लिखकर महा पुरुष धर्मसिंहजी प्रमुख मुनियोंकी न्यूनता हलकाई दिखानेको मनमें पर दी है। धर्मसिंहजीने लोंकागच्छसे बाहर करी दीया यह

लिखना झूठ है। गच्छकी शिथिलता देखकर अन्य गच्छमें जाय अथवा अलग रहकर शुद्ध संयम पाले तो उसमें किसी मतका दोष नहीं है। अनेक जैन सिद्धांतोंकी शाख है।

पृष्ठ ११ में मिथ्याभाषी लोंकागच्छवाले अपने में शामिल है एसी गप लिख दी है। सो नीचे मुजब—ढुंढीये साधु मुखपति बांधी रखे और लोंकागच्छका यती बांधता नहीं

१ लोंकागच्छकी प्रतिक्रमणकी क्रिया तपागच्छकी मिलती है।

२ लोंकागच्छका यति तथा श्रावक जिन प्रतिमा माने है।

हे पाठक वर्ग! विचार करो कि लोंकागच्छकी मर्यादा मुखपति मुख बांधने की कदीमसे है। व शिथील हो गये और अयोग्य कार्य करने लगे। तब मुखपति सहित अकारज करणा लौकिक विरुद्ध मालूम हुआ तब यती लोगोंने अच्छा विचार करके मुखसे मुखपति उतारकर हाथ में ले ली। मगर मुखपति मुखपर बांधनेका कदीमसे असली रिवाज चला आता है। यह वर्तमान समयमें शहर बीकानेर के लोंकागच्छ के तथा यती मतणी देखनेसे स्पष्ट मालुम हो जायगा।

जिस वक्त आत्मारामजी पीतांबरी बनके शहेर बीकानेर में गये और कहने लगे कि मैं ढुंढीयों की मुखपति उतार लूंगा। यह बात लोंकागच्छ के यतियोंने सुनी। तब आत्मारामजी से कहने लगे कि बाबाजी हाल हम यति लोगोंने मुखपति उतारी नहीं है और ढुंढीय साधु की कैसे उतार सकोगे? इतना सुनकर आत्मारामजी शरमिंदा हो कर पीछा भटकर नागौर आ गये। यहां का हाल लिखने की जरूरत नहीं है मगर लोंकागच्छमें मुखपति बांधनेकी मर्यादा असलिक

मौजूद है। लोंकागच्छके जति तथा श्रावक प्रतिमा मानते हैं ऐसा ३१ में पृष्ठ पर लिखा है सो भी विचार करनेके योग्य है। उक्त गच्छकी समाचारी प्रतिमा नहीं माननेकी है। लेकिन जति लोग महाव्रत रहित होनेसे स्थानकवासीयोंने सत्कार कम कर दिया और पुजेरे लोग आदर देते नहीं। इसी वजहसे कितनेक जति लोगोंने मूर्ति मानना अंगीकार किया तथापि गच्छकी मर्यादा तो प्रतिमा नहीं माननेकी है यह शहरोंमें लोंकागच्छके पुराने उपासरे मौजूद हैं जिसमें प्रतिमा है ही नहीं। रामपुरा भानपुरा तथा निमोद वगैरह अनेक ठिकाने लोंकागच्छ के पुराने उपाश्रय मौजूद है उसमें भी प्रतिमा नहीं है। अपने अपने गच्छके जति का गोंका आना जाना कम होनेसे, साधु लोगोंके दरसनके अभावसे कुगुरु पीतांबरीयों के फंदमें पडकर कई श्रावक प्रतिमा मानने लग गये तो क्या गच्छ इसका हो गया। नहीं मगर गच्छकी मर्यादा तो मूर्ति नहीं माननेकी है।

और रीखवचंद उगमचंद लिखता है कि लोंकागच्छकी प्रतिक्रमणकी क्रियाएं मिलती है। तो तुमारी आत्मारामजी वगरह संवेगी साधु अपनी किताबोंमें लोंकाजीकी तथा लोंकाके गच्छकी इतनी निंदा लिखी है सो सबकी सब यहां लिखे तो एक बडी भारी किताब बन जाय। हे भाईयों विचार करो कि गांव गांवमें धापरात सादरी वगेरह २ वगैरह तपागच्छोंके फिसाद बनती रहती है।

रीखवचंद उगमचंद अपने झुठ कुहाडेके पृष्ठ १७–१८ में पालणपुरके भाईयोंसे विनती करी है कि हे भाईयों ! ढूंढीयाकी संगत करना नहीं। सो यह अपनी दुकानदारी जमानेके लिये है। लेकिन बुद्धिमान पुरुषोंको तो असल और नकल दुकान और माल का विचार जरूर करणा उचित है। जैसे कोई मालजामी सराफ दो रुप सैकडेका व्याज लेता है और गांवोंमें कहता है कि हे भाइयों ! आप अन्योंके पास जाकर हुंडी नहीं लिखाना।

एसा करते एक वसावरी सरापने उसी ग्राममें एक दुकान करी और पावमी सिकोड़कर व्याज देता है। अब अपनी बुद्धिसे विचार करो कि बुद्धिमान लोग किसके पाससे हुंडी लिखाते हैं। एसही भव्य जीवोंने सुगुरु तथा कुगुरुकी परीक्षा करणी चाहिये। हिंसावर्मी कुगुरुकी जालमें नहीं आना। क्यों कि मोक्षरूप दरवाजा खोलनवाले सिद्धांतरूप कुंजीयोंके धरणवाले श्रीसतगुरु ही है। सतगुरु बिना मार्ग नहीं मिलेगा। पृष्ठ ४२ में हमारे भगवानकी नकल को पूजनेवाले लिखते हैं कि तुम पूजा, धूप दीपादिमें पाप कहते हो तो तुम स्थानक बनाते हो पच्चखाण वगैरह करवाते हो। इत्यादिक प्रकार की हिंसा क्यों करते हो क्यों करवाते हो?

हे भाईयो! स्थानकवासी श्रावक स्थानक बनावे जिसको साधु मन वचन काया नहीं सराहे। स्थानक बनानेवाला भी साधुके पास जाकर प्रायश्चित लेवे तो उसको साधु प्रायश्चित देते हैं। वैसे तुम भी तुमारे गुरु पीतांबरीके पास जाकर दंड प्रायश्चित मांगते हो तो वे देते हैं या नहीं देते!

अहो अज्ञानी जीवों! स्थानकवासी जो हिंसा कार्य करते हैं वो तो हिंसामें पाप ही समझते हैं। उनकी समकित जाती नहीं है। तुमतो हिंसा करके धर्म समझते हो पाप करके धर्मकी प्ररूपणा करते हो इससे तुमारे अहित अबोध और मिथ्यात्वका कार्य है।

साधु और श्रावकका आचार छोड़कर सुधर्म दवका ४७–४८ में पृष्ठपर पीतांबरी भाई लिखते है कि उसका अर्थमें पृष्ठ ४९ में पर लिखते हैं कि दुवाइपीया। तुमने तथा जीवाणं सम्यक दृष्टि वैमानिक देवता देवियोंमें आदरवा योग्य क इत्यादि! क्यों पुर्वे रीसकर्के उनमत्त एसा कल्पित अर्थ कौनसे पाठके अक्षरका किया है? या तुमने कौनसे पीतांबरी

योंके गुरुके पाससे धारण किया है? अथवा कुमार्ग विरुध ही कपोल कल्पित अर्थ किया है? पाठ तो नीचे मुजब होना चाहिये।

अनसि बहुणं समाणीयाणं देवानए देवीणए
अच्चणी जाऊ ॥

इत्यादिक ऐसा सुगमसा पाठका असर अर्थमें सम्यग् दृष्टि बमता देवी एसा कल्पित खोटा अर्थ बनाकर लिख दिया। श्री भद्रबाहु स्वामी कृत व्यवहार सूत्रकी चूलिकाका भाषा व्याख्यानका अर्थमें कहा है कि साधु नाम धराकर वे पाके पुत्र समान हिंसाधर्मके प्ररूपक बिना गुरुके सूत्र अर्थके चोर होवेंगे। तदनुसार सिवाय तुमारे सूत्र अर्थके चोर और नजर नहीं आते। हे दयालु प्रिया! यहां तो समुच्चय देवता देवीका पाठ है। अर्थ है और सूर्याभ देवसम सब वैमानिक, सर्व भवनपति–वाणव्यंतर–ज्योतिषी उपमती सम्यग पूजा करते हैं। बादर अग्निके पर्याप्ता, साता नारकीके नरइया, सर्व समुर्छिम मनुष्य भी ज्यादह तर देवता है। वह सब पूजा करते हैं। ईसाई तथा मुसल्मान शिवमती–वैष्णवमती बौद्धमती देवता होते हैं या नहीं? यदि होते हो तो वह कौनसे देवकी पूजा करते होंगे? जैसे कि सूर्याभने पूजा करी है। तदनुसार तुमभी करते हो। सूर्याभ देव तो दाढा पूनी पूजते हैं सो क्या तुम भी दाढा पूजते हो? हमने किसी जगहपर किसी मन्दिरमें दाढा नहीं देखी है। और सूर्याभ देव तो स्थम तोरण चौक सभा सिंहासन आदि अनेक वस्तुएकी पूजा करी है क्या व माननीय हेतु है?

अरे भाईयों! जरा सूत्रोंको तो छोड़ो अज्ञान दशाका परम्परा मानना दूर करो! जरा सद्गुरुका शरण!! कुगुरुको छोड़कर

सद्गुरुकी सेवा करो। फिर समका दरवाजा देखो इंसनसे मिलगा।

अनेक प्रकारकी असत्यता और झूठे कुहेतु करके असत्यताका कुहाडा चलाया वह वचनोंसे मालूम हुआ कि सत्य वचन रूप वस्त्र ऊसका कुहाडा निरादर रूप है। कोठरी रिखबचंद उन्मचंद पीतांबरीके मतानुसार पीतांबरी अमर विजयन भव्य जीवोंको भ्रम मार्गमें डालनेके लिये एक "धर्मना दरवाजाने जोवानी दिशा" एसी नामकी किताब प्रसिद्ध करी है। वह केवल भ्रम रूप है। अपना अभिमान–द्वेष और बुद्धिरूप मत विकारके दोषसे शुद्ध दरवाजा माने वालेको दोषित जैसी आचरण गधाना ढास्याका मेंडक इत्यादिक दुरवचन करके निरंकुशता करी है, लेकिन् सांचको किसी तरहकी आंच नहीं आती है। अवलोकन करनेसे अथवा श्रवनसे बुद्धिवानोंको तुरत मालूम हो जायगा सो किंचित मात्र लिख दिखाते हैं।

अमर विजय पीतांबरीने अपना धर्मना दरवाजाने जोवानी दिशा यह नाम है। परन्तु जैसा नाम है वैसा गुण नहीं है; परन्तु चारगतिना दरवाजाने जोवानी दिशा है।

इसके पृष्ठ ४ में लिखते हैं कि 'गणधर महाराजा जो थी पण इंदभी पवनीमी बुद्धि कितनी अगम्य दाखीने गइ छ केमके शास्त्रमा ता एह वातो रहेलु छ के एक सूक्ष्म अथ अनंत छ एवी महा गंभीरवाण। जो गणधर महाराजा भाक ए सूक्ष्मी गुंथणी करेली छ त महागंभीर वाणीने मेकल्ना पुन्य निरधकपल करना हरणा एको ही पण विचार करी होय! इत्यादिक

एम पीतांबरी अमर विजयका लिख्ना पाषंडीमी सद्दीम समस्त बीना

है। क्यों कि गणधर महाराजकी गुंथी अनती गंभीर वाणीको दोषित करनेको कोई समय नहीं है, लकिन् वक्ताके वंछित कार्यके वास्ते कहीं वस्तु कथा मात्र है। तुम्हारे पूर्वाचार्य टीकाकार भी लिखत हैं। यथा—

यत्र नाम स्थापनेने त्यादना द्रव्य ॥

सूत्र कृताग—टीका

एसे ही दशवैकालिक वृत्तिमें " नाम स्थापना सुने " इत्यादिक जहां वहां वंछित कार्यका अभाव होनेसे सुन लिखत हैं, यथा भगवतिजीमें ४ भांगा कहा है।

१ गुरु—२ लघु—३ गरु लघु—४ अगरु लघु

इन चार भांगाके आदिक २ भांगा पाते हैं। जरा विचार करो कि यद्वा—तद्वा—अगडम—बगडम लिखकर दूसरेको दोषित कर अपना अभिमान रखना क्या यह बडे आदमीयोंका काम है? नहीं नहीं। यह काम तो महा अधम और अल्प बुद्धिवालोंका है। एक कोई कवि कहा है—

मरिया सो दलक नहीं हलक सो आधा ॥
भरा सो मोंकि नहीं भोंकि सो गदा ॥ १ ॥

बड आदमी समझकर लिखते हैं।

फिर अमर विजय पीतांबरी ढूंढकोंका मुंहिलका शिष्य अपना धर्मना दरवाजान जोवानी दिशा के पृष्ठ ९ में पर लिखता है कि ढूंढिया

तेरा पंथी मूल विना एक डार रूप है। उसका किंचित् विचार लिखते हैं—

श्री भगवान महावीर स्वामीके पाटान पाट ४७ पाट आज्ञानुसार चले आय। पीछे बारह वर्षी काल पडनेसे धर्मका छिन्न भिन्न पडदसा हुआ सो एतिहासिक नोंध वस्तनेसे मलूम हो जायगा। पीछे कितनेक कालमें पाटधर तो श्रीपुज छत्र, चंवर और परिग्रह धारी हो गये। उनका व्यवहार सब लोग मानते ही है। कितनेक साधु अपना आचार पालते उनके शामिल रहे। बहोत विपरीत होनेसे संजम पालनेवाले साधु अलग होकर संजम पालते रहे उनको अमर विजय मूल विना एक डाल रूप कहते है क्यों कि उसका अपने बरकी कुछ भी खबर नहीं है। और आत्मारामजी को लिखते हैं श्रीमद्विजयानन्द सुरिश्वर सो उनसे हम पूछते हैं कि आत्मा राम किसके पाट परंपरा चले आते हैं? पाटधर तो श्रीपुज है। श्रीपुज परिग्रह धारी है और परिग्रह धारीका चला साधु होते नहीं। अगरच यह कहोगे कि समवगीके शिष्य हैं तो समवगी संवत् १७२१ के सालमें श्रीपुजके चला इर्षा के साथ पीळा कपडा पहरकर अलग निकल पडे। उनके पछे आत्मारामजी बने तो फिर सूरिश्वर किसका पसूक है? आत्मा रामजी को सुरिश्वर पद बिल्कुल आताही नहीं। अब वल्किय बिना मूलकी डाल कौन है? बेशक, तुमही नजर आते हो। तुमारे तपगच्छके तीन थुइ वाला राजेन्द्र सुरि तुमारे बाबत क्या लिखते है?

सावधान! सावधान!! सावधान!!!

पीतामरी पाखंड किया आगममें दंड ॥
मानन्द सागरका अपना सुणो मारा हुए मंड ॥
नहीं धर्म है इंड फिर पाप भरी पंड ॥

मुख्य रूप थम प्रमाण मान छ परतु तीमा प्रमाण मानवो नथी कमक बीना बधा प्रमाणानो एना पटामां समावश थाय छ माट मुख्य पण भिन्न रूपथीं प्रमाण मानवोन नथी '

और पृष्ठ १४ में पर लिखत हैं कि—साथा माथ प्रमाणना भेन मद करला छ १ गुण प्रमाण, २ नय प्रमाण अन भीमा सम्या प्रमाण य प्रथमो न गुण प्रमाण छ त हन ज्ञान, २ज्ञान भन चारित्र गुणमांथी ज्ञान गुण प्रमाणाए वगान करतां तमारा समेस्मा चार प्रमाण कहला छ पण ए ता पसगम जुवो छ जुदी प्रकारमा छ तहथी तुमारो तम्बम अगाग पम थयला छे, एमा हिमा धर्मी अमरविसय लिखत हैं।

पाठक वर्ग। अब विचार करो कि चारीकाल जब प्रत्य प्रमाण, मत्र प्रमाण, करल प्रमाण, नय प्रमाण, संख्या प्रमाण, इन उक्त प्रमाणोंमें चार प्रनाण लिखना तो अयाग हाव सा तो लिखा नहीं चान गुणमें चार प्रमाण लिखे वह कस अयाग्य है ' चार प्रमाण नहीं मानने वाबत तुमने दिगम्बर तथा माधवाचार्य बगेरह जैसा की साक्षी लिखी फिर नदीजी सूत्रका पाठ। पांच ज्ञानका लिखकरा और आप समुद्रके मेंडकको पक्तिमें शामिल होनेकी आशा करत हो।

अहो ' हमारे बालमित्र ' चार प्रमाण छद्मस्थ के बाधक बाम्न भगवती सूत्र शतक ५ उद्देशा ४ में भी गौतम स्वामी पूछते हैं कि—हे भगवंत! जैसे केवल ज्ञानी आत्म शरीरको संसार का अंत करण वालोंको जाने दखे—वैसे छद्मस्थ जाणे दखे या नहीं? तब श्री भगवान महावीर स्वामीने फरमाया कि हे गौतम ' छद्मस्थ नहीं जाणे और दखे। केवली आदिके समीप में सुणा हुआ जाण

तथा चार प्रमाणसे जाणे। उसका पाठ नीच मुजब है।

संकिंच पमाणे पमाणे चऊवीहे पणत्ता तंजहा।
पचक्ख अणुमाणे उवमे अगमे जाहा अणुउग धार तहा णेयव्वं।

मन विचार करने का स्थान है कि चार प्रमाण में छद्मस्थ मनुष्य का बोध होता है। इन चारों प्रमाणोंमें चौथा प्रमाण आगम प्रमाण है। आगम है सो श्रुतज्ञान है। और श्रुतज्ञान है सो परम उपकारी है। (उदेसो—समुदेसो—अणुनाय—) सर्व श्रुतज्ञान का ही है। श्रुतज्ञान नंदी सूत्रकी पाठमें अमर विजय पीतांबरी घमना दरवामान जावानी शिक्षाके पृष्ट ९१ और ९६ में लिखत हैं कि—

नाणं पंचविहं पन्नत्तं तंजहा आभिणी बोहिय नाण सुयनाण मन पज्जवनाण तस्मा सउविहं पन्नतं तंजहा पचखेय य परोख्खय २

इत्यादिक। और भगवतीजी में चार प्रमाण छद्मस्थ के बाध क चार कहा है। और अनुयोगद्वारजी में ज्ञान गुणमें चार प्रमाण कहा है। उस में भी आगम प्रमाण श्रुतज्ञान है। ठाणांगजी-व्यवहार-सूत्रमें पांच व्यवहार कहा है। उस में भी श्रुत व्यवहार कहाते श्रुतज्ञान सर्वोउपकारी है। इस लिये चार प्रमाण में आगम प्रमाण वा श्रुतज्ञान है। अगर जो तुम उस का अयोग्य लिखता कहते हो तो सात नयका स्वरूप तुमारा लिखना अयोग्य है। क्यों कि अनेक सिद्धान्तों में २ नय मुख्य कहे है। व्याहार और निश्चय-नय) द्रव्यार्थिक नय पर्यायार्थिक नय जैसे दो नय मे सात नय गर्भित है और मानने योग्य है। तैसे ही दो ज्ञान प्रमाण में ४९ प्रमाण भी गर्भित है और मानने योग्य है। उस योग्य लेख का उत्थाप करना। अपनी धृष्टता करके सबोको झूंठ ठहराना यह कैसा घोर पाप

है ' मोर उस घोर पापके तुम भागी बनस हो। इस पापसे तुम कब दूर होवोगे। एक रूढ के मेंडक होकर समुद्रके मेंडक की पंक्ति में बैठने की आशा करते हो। यह बात तो हरेक मनुष्य भी मानता होगा कि पादलिप्त से अमर विजय पीताम्बरी ज्यादह तर पढ़ा लिखा, होगा लेकिन अमर विजय पीताम्बरी हिंसाधर्मी तत्वका पूर्ण करणेको और अपनी झूठी बातको मच करणेको कैसा अज्ञानमें अंधा होकर चातुरी करी है। सो हम यहां लिख दिखाते है। पृष्ठ १९ में जो महावीर स्वामीके नाम निक्षेपके वर्णनमें कल्प सूत्रका पाठ लिखा है। देखो ! सो हम यहां लिख दिखाते हैं सो पाठ निचे मुजब है।

> "जप्प भिई रूणं अम्हे एस दारए कुच्छिंसि गब्भत्ताए
> वक्कंते तप्प भिई रूणं अम्हे हिरणेणं वड्ढामो ॥
> जाव पीइस कारेणं अईवर वड्ढामो जाए भवी
> स्सई तयाणं गुणं गुणं निप्फणं नाम धिज्ज
> करीं सामो ॥" (मद्दमाणुत्ति)

भावार्थ—भगवान श्री महावीर स्वामीना जन्म थया पहेलांज माता पिताने एहवा विचार थयो छे ज्यारथी भगवान गर्भमां आव्या छे त्यारथी अमारा त्यां सुवर्ण—रत्न—धान्यभाज विगेरे वृद्धिने प्राप्त थयां छे ते माटे ज्यारे बालकना जन्म थसे त्यारे ए बालकनुं नाम वर्धमान पाडी सुं।

इस कारणसे वर्धमान गुण नीष्पन्न नाम दीया गया। यह भी सूत्रके पाठसे लिख दिया था सो वो पाठ छोडकर एक कल्पित झूठा आप लिखकर मिथ्या पाठ छोडकर उपरका थोडासा पाठ लिख दिया सो लिखते हैं—यथा—

'दवाहि सण्णाम कये समणे भगवं महावीर' ॥

बस, इतना पाठ लिख दिया। क्यों हिंसाधर्मी पीतांबरीजी ! इसके पहलेका पाठ कहाँ गया ! क्या भूल ले गये ! कि जिससे तुमने नहीं लिखा। पीतांबरी कहते है के भूले तो नहीं ले गये लेकिन हमने नहीं लिखा। वाह धूर्तजी ! वाह !! वह पाठ लिखा देते तो तुमारा प्रकरण वृक्षका मूल जड से ही तुमारे हातके कुठारसे कट जाता। उस भयसे तुमने नहीं लिखा है सो पाठ यहां हम लिख दिखाते हैं।

श्रीवर्धमान स्वामीने संसार छाडकर संजम लेकर अचेलादि बाईस परिसह उपसर्ग सहन करनेसे देवताओंने महावीर ऐसा नाम दिया। समण भगवं महावीर ऐसा सूत्र अर्थमें है सो पाठ निचे मुजब है।

भिमा भए भेरवा उराल्म अचेल परास हैं
सर्दी देवादा नाम कयं समणे भगवं महावीर ॥

सूत्रमें तो ऐसा लिखा है और इनके प्रकरणमें ऐसा लिखा है कि भगवान बालपनमें देवताओंका पराभव किया इससे देवताओंने महावीर स्वामी ऐसा नाम दिया है। ऐसा अर्थ सम्म गुरुसे व्याकुल एस ना तुमार अचार्य हुए ह उन्होंने कहा है। उनके अनुयायि हिंसाधर्मी पीतांबरी अमर विजयजी न जाने इनके सिद्धांतोंमें इन बुद्धि है। इस लिये प्रकरणका नया प्रायः बाप्म सूत्रके पाठका छोडकर प्रकरण अथवा महावीर स्वामी ऐसा नाम सिद्ध किया है। पुनराक मतवाले स्थितामान, अधिक मनका सुधारने वास्ते प्रकरण-ग्रंथ-समान है और तीर्थंकरकी प्रतिमाको अधिक मानते हैं। यह इनोंकी ऐसी अज्ञानता और मूर्खता है ! भाइयो विचार करके देखो कि प्रतिमा तीर्थंकरके सरीखी कैसे हो सकेगी ! और यह मार्ग धर्मके नामसे कहते हैं कि हिंसाके बिना धर्म नहीं है। अगरचे पुनर मार्गोंका एक राग होता तो इनके पर मेरा मत लिखका विशेषतर सन्निपात हुआ है अब

बुद्धिमान मनो ! बताइये कि अब भी क्या किसी तन्हेका इल्म हो सकता है ?

भाइयों ! बरस्मित दव तथा करस्मित मय और हिंसामें ही यम येही कुपथ और कुमाग है । सा कि श्रीमान् भद्रबाहु स्वामी राना चंद्रगुप्तके ९ म स्वप्नके अर्थमें कह गये हैं वह प्रत्यक्ष—पुजारे पीतांबरी—हिंसाधर्मी महामूढ और अज्ञानी यही नजर आते हैं दिखाई दते हैं । सो कि सूत्र अर्थके चार और पाठक पान्को उठा दिया है । एस ही धूर्ताई—कुस्लिताईसे बाडीशाल्कन उनका, समकितका तथा सात नयका, चार प्रमाणको झूठ टहराकर आप सबे मन बैठ ह । (केई धूर्त सांप—घोडावनी मोर दुर्गवीका दरवाजा जोतानी दिशा बनाई है)

उस ही थापी पाथीके पृष्ट ७९ पर लिखा है कि—"मूर्ति सद्भावन छे केमके ज्यारे भगवान उपदेश दवान बेसता हता त्यार पद्मासन लगावीम अन नासिका उपर दृष्टि ठईने बसता हता अन अनंत अवस्था बरवत पण तवीज रीत ध्यानमां आरूढ थता हता अन हालमां पण तग प्रकारथी मूर्ति यानी आकृति बनाववामां आव छ त माटे असद्भाव नथी परंतु सद्भाव स्थापना करीन पूजीए छीए" एमा लेख अमर विजय पीतांबरी और हिंसाधर्मीका है सा झूट है । क्यों कि तुमारी मूर्ति अन्दभूत कुलिंगियोंकी है । श्री भगवान सिरके उपर जटा अथवा ता सिखा रखी नहीं है और तुमारी मूर्तिके सिरपर गाल २ तीन (पंक्ति) सिखा रूप है । क्या वह सिखा सलिंगीकी है अथवा अन्य लिंगीकी है ? जैन धर्मके सिद्धांतामें श्वेतांबर—दिगंबरके किसी (कोइ) भी शास्त्रमें मूर्तिके ध्यान सर्वोसे विस्मय दिये हैं सा क्या मूर्तीको मुद्रा पहनाइ है तथा कुंडल पनाया है ? य मुद्रा तथा तथा कुंडल सलिंगीके है या अन्य लिंगीके है ? जैन सिद्धांतमें श्वेतांबर तथा दिगंबरके काइ भी शास्त्रमें श्री भगवानने संयम लिये बाद कंदोराकछा लंगोट

और बाजारके पास जायगा तो अच्छे २ वस्र दिखावेगा। चरम कार के पास जायगा तो चमडे का तुकडा यनि संड दिखाकाा। मसा ह भी मुर्ख है तमा ही स्मिन दिखाया है। अह र अज्ञानी असद मुरती क्या काम करती हे। जेस पुगरा अपने घट को सिन्ध दता रहा क्या हममा मंदिरमी जाया करणा भगवानकी पुजा में काही दिन की भूल नहीं करणा। यही मास का दाता है, पुत्र का पिता का वचन प्रमण किया। और एक उक्त पिताका मी फाटु अपनी दुकानपर रख दिया। और अपने दिल में य नीश्चय कीया के मंदीर मे तो भगवान आर दुकान में सब्गी का फाटु बठाया हुआ है कोही दीनामें पीताका काम सुणामजुरा हुवा तद पीताका फाटु पर वीसवास किया के पातानी अपने दुकान में बर ह मुनीम गाकडीया नामा दार सब नव नव किया और मुनिन का कुंवरजी ने हुकुन दिया तुम जाकर सम दुकानोंका हिसाप समजकर आना तव मुनीम ने कहा के कुंवर साहम आपके हातासे दस्ता ख्त का क्या क्यों के हमारेका काही दुकानवाले मुनीम बगरा पीछान नहीं इस वास्ते आपका दस्कत की जरूरत ह। तव कुंवरजी कह के ह माइ दस्तखत की क्या जरूरत ह। पीताजी का रुप में दस्क म आओ मुनीम वास्ता के पीताजी कहां है ता कहा के दुकान के अंदर क्या हे मुनीम ने कहा के ये फाटु क्या काम दता हे चे चीध सा दखण मुजब ही ह तब कुंवर बहात हट किया के नही य पीताजीन ह तुम ले जाओ तब वा फाटु रुप में कहके म गय दुसरों की दुकाना पर गय वहां के मुनीमों स कहा क हिसाब बतलाओ। तव यहाक तुम कौन हो तुमका हम पीछानते नही कुवर साहब के दस्खत अभी आमी तद दस्खत भसय पास नहीं होने मे धका देद निकाल दिया। इस रीती म दुर्गी दुकान पर ताजी दुकान पर

महा गये ताहा पत्र त्या कर पीछे आ गये। कुंवरजी ने कहा के हम तो तुमारे कहने मुजब काम किया—लेकीन हिसाब किसीने नहीं बतलाया और पत्र दिया तब कुंवरजी ने कहा के वो फाडु दस्माया के नहीं (जी हा दस्माया) तब वो मुनीमादीक वाला के य फाडु तो पसा २ में बीकत फिरत हैं। हस्ताक्षर सभा तब कुंवरजी के हस्ता अक्षर लेकर दसावरोकी दुकानो पर गये वहां के मुनीमान हीसाब समझा दीया बहोत लाभ सकर छोटकर आए सब समाचार कहा। कुंवर ने सुन के विचार किया के जसा पीताम्बी का फाडु है तैसा मंदीर में कल्पीत भगवान है। जेसा मेरा हस्ताक्षर वसा सीर्घात हैं। सीर्घातो से ही तिरणा होगा। परतु नकली तसवीर समार से तीराने समरथ नहीं स्थापना नीक्षेप अज्ञान छोकरने वेस्थाकर समझया रूप है। दुरगती ना दरवाजाने ओलानी दीसा की पृष्ठ १९४ मा कुंकुम पत्री स्थानकवासी की छीलकर स्थापना निक्षेप सुज विरा हे परंतु परमारथ के व समझ है। परमारथ समझते ता पीताम्बरी हीसाधर्मी अमरबीजजीका हृदय के नेत्राका पाटा दूर हो जाता। जैस ये कुंकुमपत्री में यंत्र का जसा खिसा उस में उपास देखा लग्न वान्या पत्रोत्स्य आसीक का पकवान विगेरे बाबतो में हाव को समझाण के लिये यंत्र का नसा बनाया है। इसी मुजब रतनावली कनकावली भनाद्य पूर्वी नारकीका चित्र जंबुद्वीप का नसा ये सब कहा पुरुषोंकने समझाण मुवाफीक है पृष्ठ १९४ में स्थानक वासीया की बाबतो में तसरा हुए था कुंकुमपत्री मे लिखी जाती हैं उसकी नकल पीताम्बरी हीसाधर्मी अमरबीजजीने लिखी है।

इत्यादिक पाठक अर्थ बीचार करोगे तो तुमारा सरुप तुमको मालुम पड़गा। साधुमार्गी द्रव्य आवशक्य करनेवाले ढोंगिक पीतांबरी है। मोहो मिथ्यात्व मोहनीके उदय इत्यादि प्रज्वलितमान होकर सुत्रका पारस्परीनीको क्षेत्र तथा भावके बाईसमनका सम्य सटकीउ के भग्नान्तर भेद तथा पचीस वाल्मन बिचार तथा सात नयका सरुप ४ प्रमाणका सरुप चार नीक्षेप के निरण कियां तुम उत्तम के सकल आपना हटवाद कुतरकाको दूर हुए मिश्कत हो आर पास गया मारको भेदक होकर पुरावारीयाकी परमपरागत पणा रहे हो। तुमारा पुरा चारय कोन थे और तुमने तपागच्छ का नाम कैसा लिया। सो उत्पत्ती तुम साफ मानलही होगे। नहीं जानते हो तो सुनको हस जैसा तपागच्छवालेकी और खरतर गच्छवालेंके संवाद हुवा उसमें खरतर गच्छवाला तपागच्छवालेका उत्सुत्र भासी निन्हव ठराया उसकी विगत समत सोलम स सतरा के कार्तीक सुदी सप्तमी का सुधवारे श्री पाटण नगरे खरतर गछ नायक श्री चंद्रसुरी समस्त दरसनीकों एकत्र करी तपागच्छवाले धम सागर ने तेडाव्यो पीम छिप रया आत्या नहीं। कार्तीक सुदी १२के दिन आया चरचा करी मद दसमी ग्याटो माणया। धम सागर ने निन्हव थाप्यो। जिन दरसनथी बाहर किया जिससे कल्याणको मंतमती शाकहान कीण तपागच्छीया जिण उत्सुत्र भाषी नीनमसा वचन प्रमाण किया। अम जिन वचनका लोप कर ए आपना मनो समार बचारे के उतसुत्र परुपणा तपावालेका माता की गम उठाया। १ गमा

आचारंग-सुगडांग-ठाणांग-भगवति-ज्ञाताता उवाइग्नि में इत्यादिक (अहिय-पतेहिय) इत्यादिक भाव निरयुकति प्रमुख सब ग्रंथोमें

वामि अन बदल लेखो कयो। तथा सुमारा रत्नसवर सुरि कृत भा द्धविधि कि मुत्रि माहे श्रावकन चोमासा महि यासि लेवा निन्य या पमा सित्तग्रथमें निख्ये यो नहीं। अब तथा निखेन्ते हे। मागा रि बवाल्यिान बदल पण निखे दयो ते उत्सूत्र ४। तसणि जिमा मुननायक विश्न आगे सफरम पुना पत्पिते उत्सुत्र ९ तथा जिन मन्दिर म हे तरुणी बन्याना नाम्क– कराबी ते निरदास हैत उत्सुत्र ६ इण कालमें श्रावकन प्रतिमा बहेब कहि ते उत्सुत्र ७ ममायक उच्चरया पछे इरिया वहिना पडिकमवा ते उत्सुत्र ८ ये तथा उत्सुत्र मामि है। इनका उत्सुत्र पणा हमन किंचित लिख्या है निपात्रा दस्वणा हो तो श्रीगुण विनयोपाध्याय कृत कुमति खंडन ग्रंथ विचारय पुनरपि प्रभात्तर मांखिक्य–विद्यासागर न्यायरत्न केसरि श्री जन श्वेतांबर धर्मधारक गाबिया नथमल प्रविधिकनिक न्यालोक्य जवाब दम्मिर महेम गभिरमल्मि कि तर्फसे रतलाम मध्य श्री जैन प्रभाकर यंत्रालय में छापकर प्रसिध किया। फिर सवत २४६० मि मरतक दूरि ९ इस पुस्तक में भि तपागच्छवालोंकि उत्सुत्र पर-पणा प्रसिध कि है। मो किंचित लिख्त है।

श्री महावीर प्रभुक ७ कल्याण कहे। और तपावाला ९ मानत है न उत्सुत्र १– तपगच्छवाला का पुछना चाहिय कि प्रथा पहार का अच्छेरा हानस कल्याण नहीं मानत हा ता फिर भी मल्लीनाथ स्वामीका अछर म मानत हा क्या कल्याण मानत हा। अछरा कहा है ता फिर कल्याण किस तरहस हो सकगा अदी यहा कहक अच्छेरका मानत हा ता फिर उनक पाच कल्याण तीर्थंकर पणाका निसप प्राप्त होगा पर श्री रिषभदेव स्वामी १ ८ एक सौ आठक साथ सिद्ध हुय एक तेसा अछरा कहा है– अछरमें

सत्र संवाद वेस्यापवासीका सवाल है भाइ हमका हमारे पीतांमरी कहत है के हमता पुर्वा चारीयों के वेस्य प्रमाण करत है आर म्यानकवासी नहीं मानत है सो आचारजीकी परमपराके बाहार है। उत्तर म्यानकवासी का है भाइ ये वस्त तरा पीताम्बरीयाका पुर्वा आचारीयाका वेस किलनेक तो प्रमाण करते ओर ओर कीतनक नहीं करत आर इनक पुर्वा आचार्य भी किलनक उतसुत्र भासी हुवे है सा उपर लिख दिया है आर अभी वरतमान में तपागछमें कितन आचारय परमपरा गन चले आत है आर उन आचारजीक माहाम कितन है आर या पीतामबरी सीस उन आचारजीकी आग्या में है या आग्या के बाहार है आचारज ता भी पुनवाक है उनके माहाम त छत्र—चवर आरंभ परिग्रह सब लोक मानत ही है म्यानकवासीया का कहत है के हमारे असो प्रकाण शास्त्र मुजब है आर तपागछकी समाचारी में ४५ आगम मानणा लिखा है। ई भाइ इन पीतांबरीया क कम्प ग्रुपक क्या याना है। सो उपर लिख दिखाया ही है। सीहा अब मरका मालुम हुवा कि य बडे धूरत उतसुत्र भासी है पर मुझे मेरे दिलमें एक संसय आर भारी है। मबाब म्यानकवासीका क्या मेरे दिलका संसय होव सा कहना चाहिये। वरा पुन्य उदे होगा ता सुमती प्राप्त होकर संसय दुर हो जायगा। सवाल वेस्या वासीयाका हमारे गुरु पीतांबरी कहत है पहेले हिंसा पीछे धम जेस कोई राजी म्ताथरा ता मुनिराज माहाराज का प्रति जामगा जा मुंगणा (फुजन) जा कर दया पालगा ता दानका क्या लाभ उपारजन करेगे एसही पहली हींसा पिछ धम—(जबाब) म्यानकवासीवाका। हे भव्य जो प्रम हिंसा में धर्म मानगा तद ता चाथा आश्रव सवनम भी धम हा गा जस एक पुरस अब्रम्हचय का त्याग न कर लाभ उपाजन किया दुसर का भारी करी दा चार च्याव किया उसका च्याव

रनस ९।७ पुत्र पैदा हुए। उन पुत्राने ममन लेकर धम वरची री स्मसा भीवो का प्रतिसाव किया। उनके पीता मा सावी नहीं रता ता मशा अम प्रास कम हाता फर इसी वमस चोरी करनमें ी घम है काइ पुरुष वस्त्र धारके माधु का दान दिया एम परि ह में धर्म है क्यों क ५रिग्रह होगा ता तुमारे ७ ठिकाण धन स्वर । बरेगा ऐस पांचही अन्धर में तुमरे कहन स धर्म है। (त घ- पावासी कहन लगा नहीं नहीं आसवर में धम कमी हीं हागा (ज्याम) द हिस्मामें धर्म कैस होगा (चस्यावासीत्र स्वाह) भाइ माहेब प्रस्तकाग पृथ्वी काय अनक गाडीया भर सोवाते है कुवा वावडी त मव हाट हवेलि मकान वगेरे बनाव हे सकडे घडे सना नादिक नि सै पानी ढारत हे एम अग्नि वायुका भी आरम्भ करम में आता है। वनस्पति भाम वन्वाते हे अनक फल फूल नाम वगेरे कि घा त करत उसमें तरस जिव मि हण मात है ता क्या भगवानके मर पाराना पानि फूल बनानस क्या धुम नायगा। (उत्र या) ह वेवाणुप्रिया ग्रस्त पृथ्वी काय प्रमुख छ कायके जिवाकि हिंस्मा करने ह वा आगिकप्रि पांच कारणके लिये हिंसा करसे वा अस्वका अहित का हेतु है आर भा धम बुधिमानकर हिंस्सा करे उसका अहित मवाव मिथ्यात्वके कारण होगा।

श्री आचारांगजि सुत्र प्रथम अध्यनमें कहा हे ओर मि प्र तक्र पां प कारणों से हिंसा करन में आति है उसमें मि एमा मनारथ करते हे म क्रम्ये अरम को छोडकर मरि आतमा को निरारम्भिक कर कायाकर रस पाल मुगा फर भि अहनि चतुरदशि अनावा स्या पूर्णामसि चामासि सम्वत्सरि पजुसणा इन पर्वोकि दिनोंमें स्पा श कर फूलो प्रमुख जिवाकि वध करते है सो य मनका मरम न-

हीं है ता फर स्या य मतराइद है या धर्म क निन है ? अब न्यकी दयाका नियम करते हे ओर अमर पड़ा फिराते है। य पुजग हिंसाधर्मी ज्यादा हिंस्या करण में ज्यादा धम मानत हैं कहीं म स्य निके अनुकंपा हिरद मे आजाय ता उसकी दया निकम्मन को कुगति कुहेतुस न्या निश्चमनकी एस कहते ह के माइया धम करनमें हिंस्या नहीं सममनि एस कहकर मोकोंके हिरदका निडय कर देते हे भार आश्रव में (हिंस्यामें) लाम निजरा ह—

—गाथा—

सर्पपम जपे पुन्य महस्सं स विलेवणे ॥
सुय मह स्सीया मास्म अर्णता गिय पाईय ॥१॥

एम धम उपदेश नामा ग्रंथमें कहा—और मी निरमल जल स प्रतीमा का स्नान कराव ता मा उपवास किया का फल होव।

चंदन कमर कस्तुरी भतर कपूर गुलाब क गमस पमक मर्त ताक नरांगी धूपा करते हमार उपवास का फल हाय अथवा मगवतोक गमेंमें पच वर्ण पुप कि माम्म परेराव तथा चमली राय केकी चंपा मागरा मचकंद गुलाब मरवो इत्यादि पुष्पा का इगमा करे ता लाख उपवास का फल हाय, अथवा गीत गान-तान छतीस राय रागनी गाव ताल मृदंग वणा तंदुर-सारंगी आदि मगारा बाज न बजाव भार नृत्य करे ता अनत उपवासा का फल हाव।

॥ श्लोक—पुनर्पी ॥

दशमि पुफ माम्म मी सर्व्व बनुच्चि कि दता मार्ग दुक्कुर्ण

भ्रमात् पश्चात् पाक्षिके मासस्य द्विमासी त्रिमासी पञ्चमासिकात्

अथ–उस फूलोंकी माला भगवानके चढावे तो एक ८ उपवास ना फल मा फूलकी माला चढावे तो बेलका फल हजार फूलोंकी माला चढावे तो तेलाना फल लाखफूल चढावे तो एक पक्ष तपना फल होवे । दश लाख फूल चढावे तो एक मास तपनो फल होवे, क्रा ड फूल चढावे तो दो मास तपनो फल दस क्रोड फूल चढावे तो तीन मास तपनो फल एक कोडाकोड फूल चढावे तो छ मासी तपना फल कहयो । इत्यादि भ्रम महके विभ्रम मति बाल आवा र्योने भ्रम दखाया मापणमें अनेते तपकर लाभ होता है। अनंता तराता र्तिर्थकर भगवानके सिवाय आराका भही नाटीकम निर्थकर नाम गोत्र उपारमन करते हे इनके सिवाय और क्या लाभ होगा एसा लाम इच्छा मनको ही रहती है तुमारी माता भुवा मासी बन सभी सभको नचाकर माहा लाभ उपारमन कराना मुनासीब है।

(सवाल) क्या नहीं भाई साहब नहीं कीकर नाचना लाक विरुद्ध मालुम देता है। (जवाब) स्थानकवासी० क्या स्त्री तिर्थंकर गोत्र नहीं चाहती है। या कीके तीर्थंकर गोत्र बन्धता नहीं है। इसमें मज्यारा क्या क्रम है काइ बुरा काम तो हे नहीं जिस्से तुम हमीत हुवे हा सरे बजार चोकमें तुम का या स्त्रियोंका नाचना या नचाना याग्य है। ऐसे मा नाचण में तथा फुल चढा न में लाभ होता तो श्रीश्रेणीक माहाराजोकी राण्या कालीयादीक तथा कृष्ण माहाराजाकी राण्या तथा फरगुन कुमार समर कुमार शालीभद्र कुमार गजु कुमार खन्धक रिसी धना अणगार प्रमुख मुनीसरोने दुकर तपस्या करी उनोका सास्त्रमें बयान चला है सा सुनकर आपर मन कंपायमान होता है क्या उनोको फूल नहीं मील

द य क्या नाक्ना याद नही था वानिग्र मही मीन्म जिस्से उ नाका घोर तम्न्या करणी पड़ी दसा उत्ताध्येन अध्यन २९ मा तीयानर घोछोकर फल पूछा समायक चोउमीस्या वदन प्रतिक्रमण पच्चक्ख थवशुमग नमो त्थुणा थयावष आदि तियोंग्र थाक्षाका फल कहा उसमें रमारी समफ़ बोल सुत्रकारको क्या याद नही आया सा पुछ नहीं—

चेत्य करणेणं भंते कि फले १
बिंब प्रतिष्टाणेणं भंते कीं फले २
धमा दंड रोहणेणं भंते कीं फले ३
जलस्र रोहणेण भंते कीं फले ४
पुफ्र रोहणेणं भंते कीं फले ५
मालस्र रोहणेणं भंते कीं फले ६
धुपा राहणेणं भंते कीं फले ७
घग्गणेणं भते कीं फले ८
पार्जवेणेणं भंते कीं फले ९
नाग्केणेणं भंते कीं फले १०

तथा भगवतीजो ठाणायगंमी सुत्रमें रमारों प्रमोयग भराव है उस में मंदिर प्रतिमा पुजाका प्रश्न उत्र आया नहीं औ भगवती जी सुत्रमें तुंगिया नगरी के श्रावक श्रीपार्श्वनाथके संतानीयाका प्रश्न पुछा—संजमेग भंते कीं फले तवर्ण भंते कीं फले ऐसे तप संजम के फल का पुछा करी परतु मंदिर बनाना पुजा करना यात्रा मानता इत्या दासल पुछा नहीं। (हेमुत) मे तुमका समफाव किस दसाउं जो तुमार हिरद मन प्रगमीव होव तद तो तुमारा हाथोमें दपन व दिया

है सा तत्व स्वरुप ठेस क्षेणा अमर मग्नमह हो गये हातो दपनस्का क्या दास है। इति—

अब इहापर भव्यजीव अस्सक कर्मीयाको तत्वा तत्व स्वरुप दुम्न-नेका श्रीजैन सिद्धांत साक्षात दपन तुल्य है परतु जेशा मनुष्यका मरुप है तसेही दिखलाइ दता है। क्यो के सात ७ नय और ४ निक्षेपा उत्सग अपवादादि करके श्रीसिद्धांत गुथ हूव है यथा तथ्य समन यिना इच्छा मुग्म पंथ हे बेठत है अमरविजय पीतामबरी भी दुरगतीना दरवामा न माबानी दिशा पृष्ट ४२ मी पर लिखत है तथाच काव्य

> (बौधाना मुगुसुम तो भषम भुद्रे हातिना स्याहात
> सांख्यानां सवएव नैगमनयाद् योगम-वेशषिक
> ष्मम् ष्मम् विद्योषी षब्द नयत मर्वैर्नयेर्गुफिता
> जैनी दृष्टि रीतिह सारत रता मत्स मुद्यार्स्येत ॥१॥

भावार्थ—राहू सुत्र नय थी उत्पन हावा बोधमत वतमान पगान ग्रहण बर १ वदांतीक सग्रह नयनामत २ सांख्यमत पण मंग्रह नय ना मन नैयायिक वशषिकए दोय मत नैगम मयथी उत्पन हाबा ९ शब्द भेद अनाद्री बद वचन पणा थी रुब प्रमती चाली रही। ये भि मामीक जेमनी व्यप्निमत बाम्म बहाव है ६ जेन मत सब मयो थी गुंथीय होगेस सब मतास भेद ह पस अन्य दरसनी एक २ मय अवलवी रहा और जैन माग जैम सिधांत सात नयास अय किया जाता है परंतु तिर्थंकर महाराजाका जनम हुवा बाद दुजे तीज बास जनम का दिन आरापण कर छपन कुमारी आक जन्म किया की थी तथा इन्द्रादीक मेरुपर मगर्वंत को ले गय क्या वा क्या मे

ऱ्ही ममभत थ, तथा निरवाण कल्याण हुआ बाद तुम साल उमी मुवाफिक कर्म किया जस तुम करत हा तुमार निरीखे अन्नागत म्यावक गत ग्रत्मक तिर्थंकराक कल्याण क्मा दिनय व समस्त का मान कग्स में आरोपन कर अन्य भी हिंम्या टन्ट समाचर्ण करक क्या अधागति में निवास करत हो। जस चार कल्याण कि विधी तुम करते हो तस निर्वाण कल्याण भी टसी मुजम करणा चाहिय। एक शकल्प पनाकर उसमें मुरति बनाकर अगर तगर चन्नकी चिता में रखकर माकद धुमकर तक विधीकरणी याग्य है मा क्या नहीं करत हो। यम अपनी मनमानी नय मनाकर सत्र पंथा म्हड़ा कर न्यिा है भार सूत्र पत्का सत्ता दरणको कही सुत्राक पठ तुमन मडा ताड कर दिया है। कही सुत्राक अप भी झूठ झूठ मन्पनम लिख दिया प्ट १७९ भी आर्न्म भीक्र अधिकार म (गाथा)

गाथा

ना अन ठिर्याए अनताप्प वेवेय सह मदेवि विगरिए
कुदिर्पा पहि थंदामी नवा नमसामी ॥१॥
नर मग लिओ भस्मविमी नास स्मयेमी वह तेर्ही ॥
दंभिन ममाणाईय पसेमी नगम पुफा ॥२॥

य उपर लिखी हुई दाय गाथा वचनस ही बुधिवान पुरुषोंको मलुम हाता ह कि किसी मदबुधियाम सुमक पटका ताडकर भ पनी इच्छा मुजब गाथा बनाकर भर दि है उपसंग दशा सुत्रका पान्ना इस मुजब है सो लिख्ते हे

ना खलु—में भते कप्पई अज्जप्पभी यंये
अग ऊथियादा १ अग उथिय देव याणिवा २
मगउथि परिग्रही याणीवा अरीहत चेइयाई
पदंवीय वा नभसंवी एवा अल्वक्तियपना तेसी
असणंवा पाणवा खाईमंवा साइमंवा दाउवा
मणुप्प दाऊवा इति।

मर्थ—आनन्दजी कहते हे कि हे भगवान नही अन्य मुझको निश्च करके आज सिझ अन्य तिरथि प्रतमा अन्य तिरथिके देवा न अन्य तिरथि महन किया है ० हितके चैत्य भम माधु इस कि इन प्रत्य वंदना या नमस्कार करणा कल्प नहीं। अरिहंत चइयाई इस पाठके अर्थ म कुमति प्रतिमा बनाते है सो नहीं है क्यों के अगले पाठमें ऐसा कहा है कि उनासे बातु नहीं तथा उनको असनादी चार प्रकारका आहार में दुनको अन्य पासथी द बाद नहीं यहां जो प्रतिमा कहोगे तो क्या प्रतिमा बोलती है और असनादीक आहार क्या प्रतिमा लेती है। अर्थात नहीं। अ रिहंत चेइयाय पुरवोक्त पाठमें भम साधु—जो अन्य तीरथीम मि ल्या हुवा अर्थात अन्य तिरथीका महन किया तिनोसे बोलना त था असनादीक देना कल्प नहीं।

आनन्दजी श्रावकको तुम लोग कहते हो के अन्य तिरथी की महीं हुई प्रतिमाको नहीं कल्प सो क्या आनन्दजी का स्वतिरथीकी महीं हुई प्रतिमा को वंदना करना क्या हो तो पाठ दिखलाओ। भाइारे तुम मरा भ्रम खोलकर देखो आनंदजीका वंदन क्या से पाठ हम दिखलाते है।

एस तुम कहेव-हा परंतु ? य ता काही नहीं कहेगा भगवत कमा क-प्रतिमा नमा-कुमारी । बड़ी पीष्टना है भगवानका । प्रतिमाकी चापना किया वैरे हा चैत्य सद्दम प्रतिमा साध्य अर्थ करण हा काई जगे में निग्र टया में भी प्रतिमा अर्थ किया लिखा है सा किसी मत पक्षीन पिग्रम लिखा है। पृष्ट १९४ में पीतांबरी अमर विजयन अपनी मुर्खता प्रगट करी है आर लिखा ह क उवाई सुत्रमें तथा विपाक सूत्र में और अतगड सुत्र आदी सुत्रोंमें च्या पणोना मुर्ती महीरा वणन पाळेलु छ त्या पुणभद्र चैत्य आ दीना पाग्चीन वणन करेलु छ तेसिन रीते अरिहंत चैत्य पाठ धीनवणन करेलु छ जन तेना अथ महीर मुरतीना निग्र कराण तेमन टपा दवराण करेलु छ-इस ठेकाणे पीतांबरी अमर विजयनीस शाहल का अथ सुम रह ह वाडाळ उमीका छलतिहण बाराके कुहाडास उमीके हातोंसे कटति है। उवइनी सुत्रमे वरणन किया पुणाभद्र चैत्यका मो मिल्यागरी सुरिजीन रायप्रसनी कि टीकामें खुलासा लिखा है। जस च्या के पुणभद्र का वणन किया वसे अन्यन्न उमीके चैत्य दा वणन किया तत्र निग्र

"चित्रैर्लेप्यादिग एलम्य भाव कमवा
चैत्य तथ संज्ञाशब्दात्वात् देवता प्रतिबिंब
प्रसिद्ध सव सुदामूप सभूतस्य तेकरपया
गृह तदप्यपच्चाराद् चत्य तदेव व्यंतराय
तार न ग्राम्या नगु भगवता महर्षा मायतन ? ||

य उपर लिखी रायप्रसनीजी की टीका) म मिलयागरी सुरीजी लिखत है य यक्ष विश्व इसाके भायतन चामप्प है परतु भगवंत

कुम हो और स्वामी फरमाते हैं धोया पाया स्नानका स्वरूप जिसा मरणका परीवर्तन करने हो तो तुमार को अती गमीर सिद्धांत के अथ समझमें नही आवे तो दयारुप घुव तारेके सामने दृष्टी रखकर मुख पथ को धारन करो तब भी कुछ भला हो जायगा एस तीन मुर्नी समस्त रातोका वहा ह। (अगाय कम्माहि करह राय) य स्या रुप धुव तारक सीक है सुयडांग सी सुत्र अध्यन ११ गाथा २६

जय सुधा भतिकता जेय बुधा अणागया
भंति तेम पतिठाण सुयाणं जगई जहा ॥१॥

मावार्थ—जया कालके तिर्थिकर माहाराज वर्तमान कालके तिर्थिकर माहाराज आवत कालके तिर्थिकर माहाराज य तीनो कालके तिर्थिकर माहाराजको दयाका आधार है। जस जगतके प्राणीमात्रका पृथ्वी का आधार है तसही तिर्थिकर माहाराजको दया का आधार है

और प्रश्न व्याकरण सुत्रमें दयाका ६ नाम कहा है जिनमें पुजा रुपा है वो ही भगवतकी पुजा है एस अनेक जन सिधांत सुत्री है ग्रन्थोंमें भी दयारुप पुजा कहा है

(—श्लोक—)

अहिंस्या प्रथम पुष्पं, पुष्पमिं द्रीय निग्रह
सर्व भूत दया पुष्प क्षमा पुष्पं विशेषति ॥१॥
ध्यान पुष्प तप पुष्प ज्ञान पुष्पतु सप्तमं
सत्य चैवाष्टमं पुष्प, तेन तुष्यंति देवता ॥२॥

अस अनेक मतमें ग्रन्थोंमें दया पुष्प कही है स्वयं मुनीराज

मगन्य आत प्रवचन पांच सुमती तीन गुपती ये सुध आराधन करके मोस प्राप्त होत है आर व्याकरण छन्द काव्य सादवाद सप्तभगी त्रीभगी न्य निक्षेप पढ़कर सुध सजम बिना दयाके धारन क्रिया बिना अनत जीव दुरगती गये है आर जावेगा।

अहा भव्य जीवो काइ पुप वनविशो धुवके तार सामने द्रष्टी रख के सिधी सडकपर चलता होव को अगर में कोइ ठग या चार उस पंथी का आप धुवके तत्पादिक तार दिखलाकर चलताकी द्रष्टी उसकी पुरब देत है आर कहां वस्तुके स्थभ वृक्षाके माहान गहन वनमें माळकर कगड गिदनाके भक्ष जागा कर देत है इसा कमसे अमर द्रिष्य पितांवरी माश पथ चलते झाकके वेयाल्य धुम तार प द्रष्टा हे सा पुद्गलके मार्गमारत होयके आत दर्शात मष्ट १९६ स २११ तक जिकके दुरगतिना दरवाजा भावानी दिशा रची है तमा चार द्रष्टांत साधु आगमोन प्रथम दिशाकी बाधा आवश्यक वास्ते मैथर्मे पहिर भासरा जाया पड ता आप कायमभावाकी विराधन होव २ विहार करते नदी उतरे चामासमें गुरुके मात्रा या अनुमित प्ठावन अपद्रामको विराधना होव।

साधु—गाचरी गया मितवासी दवा पडा पकादी प्रमुख निर्दोष भात पणी लेना हाडीमेंस बराट निकले उनस बाउकायकी विराधन होव ए चारोंही काय करणास जीवाकी विराधन होव'सा द्रव हिंसा ह परन्तु भाव हिंसा नही गणवी भगवंतकी आगन्या है एसा अज्ञानी जिकक हे पुव पसा दया वाळेका कहेना —नदी उतरणकी आज्ञा कहते हा साधुके स्याहार करण में नदी आइ आर चाडीस दुरप पुरुसर उतरे या नदीक मध्में उगे पुरुसर उतरे ता मगवंत की आज्ञा भंग होता है क्योंक तुम। कहनेस एक मासमें ४

नदी उतरणीका आज्ञा तुम कहव हा उत्र पमी हिंस्या धर्मी कहते ह न्ही जयतक उ सक तब नदी नही म्मार्नी पुष पसीने अर हो दया धर्मके मामगा तुमना अग्याक पाटकी मालुम नहीं आर मनादीके पाठ की भी मालुम नहीं । आर साधुक वस्त्रमी ममम नहीं हा क्योंकि कदामहस तुमारी बुधी भ्रष्ट हो गई है नदी उतरणे की ना आज्ञा हाव ता साधु नदी उतरके इरियावही प्रतिक्रमण करव हा । इरियावही दाप प्राछित माहीला एक प्रायछित ह प्रायछित धर्म का हाता हे या पापका हाता ह । १ गमी रात्रमे ग्रहर मामग्रस आइर २ मात्रा दिक पठाकर ई गोचरीम आकर इरियावही प्रतिक्रमणा कहा ह । और गातमस्वामीजी सरीक निदाप आहार पाणी लनवाल को भी इरियावहा प्रतिक्रमण करी है । पुष पक्षा स्थानाना मात्रा परठाना नदी उतरना गाचरी जाना यमोक्त उत्सर्ग मार्गमे है या अपवाद मार्गमे है य स्थुल विषय मे भी तुमार का मालुम नहीं ता सुक्ष्म विषय नय निक्षेपादी क्या ममझ हो मनगुरीकी सगत तुम का नहीं मिली क्या स्वात्मा बनाय काम हो साधु आभिर दृष्टांत—एक नवदीक्षत सिष्यक गुरु माहा रामन कहा सिष्य सुनिर पढया कर कम गुरुजी क्या क्रम हि अमिना माहत है गुरुने कहा अर मुढ गुरुकी भक्तिम स्वम ह इसमें हिंस्या किंचित मात्र नहीं समजनी । कहुआ गुरुमी फट आउं । थाडा दरतद कहा नीत्को बात हाई पक्का कहा गुरनी माहार पाणी क्षान्त वह रहा ह गुरुने दहा अर मुढ फर तु ममझा नहीं । गुरुकी भक्तिम हिंस्यादक दाम नाही समजना । यकन कहाक कहा गुरुजी काहा अवमे स्मम गया । गुरुणकी जरुरत नहीं । कोइ निमाद चला गाचरी गया रस्त मे एक जिनमंदिर बनाय रूडा मरती कम दोनर पाव धा अस्मर जग्म मुर्तीक पखाल्न कर चंदन चढाय स पुना करी पुष्प ग्रहन लिया बिजा भा कर गुरुम निवदन किया । तद

उनाको दया धर्मसे भ्रष्ट कर दते है

पुव पक्षी—दया धर्मीका कहना ऐसा मुनो और तुमारा किसक्पना नरा हिरका पाठा दुर करके उसो भुम तृषा पिडीत मनुष्य तथा पशुका अन्न पाणीस तथा घास पाणीसे उनका दुःख दुरकर संतोष किया सो अनुकंपा हि व अनुकंपा है सो वे समकितका लक्षण है दु खित प्राणीयोका दुःख मिटानसे पुन्यका बन्ध है परतु तुम मुरतीको भगवान समझते हो मो भगवान नहीं मुरतीके आगे नवध धरत हो क्या मुरती भूकी है या पिपासी है। क्या गर्म होती सो चन्दन और केसर सति मार करत हो। क्या अंधेरेमें दिखता नहीं सो दिवा लगात हो पसु पक्षीका या मनुष्य का तो दुःख मिटाया जिसस तो पुन्य हुवा मुरतीका क्या दुख मिटाया और ना मगती विषयमें तुम दृष्टांत दिया है सो भि अयुक्त है क्योंकि साधर्मी श्रावका ि मद नि में तो आरंभ होता है उस आरंभ म तो पाप समजते हो और समकित मत पाषणमे धर्म पुन्य मानते हो तुम मुर्तीका कान्मा समकित पाषण करते हो

(उत्तरपक्षी) हिंस्या धर्मी कहते हम पुना करके हमारा समकित मत पाषण करते हैं पुव पक्षी दया धर्मीयोंका कहना। अरे मुढ निष्फल हिंस्या कर धर्म मानणसे तुमारी समकितका नाश होता है परतु पाषण नहि होता। दृष्टांत पुव परि दया धर्मीयोंका—एक श्रावक मुनी पुनके भगति में लिन हुवा अरव दिनमें माषा जसि दबकि भगति करणि तसहि गुरु कि भगति करणि सुनामिद है। ऐसा विचार कर नगरमें पढा भरके पिताबरिनिके धार्म्यान में आया मामिम मियाल कि थि सो नगरके घडा उन पितांबरियोंके सिर पर डार दिया और कुमारकि माला गलके अंदर डाल दि। एक अ

प्रथम मद्धिम सिरप रख दिया तब पितांबरि सम्यक भाग रखकर पुष्पार करे गुरु संग हमरि आसातना दरि। सनम हमारा छुट कि या और सितबर प्रसिद्धा दिया इनसे सु राज्यके कारण मुनष द जाका पात्र है तब मुर्ती पूजक भोला गुरां साहा म तो आपका भक्त हु परतु हेपि नहि। आपके पुस्तकके पृष्ट २०८ में लिखा है द्रव्य निक्षेप वालाको विदा महोत्सव करे तथा मृतक सरिरका माहात्म्य कर उसमें हिंस्या होति है वा गिणनि नहि। इस निक्षेपवाला उपादेय रुप भक्ति करणा योग्य है तो तुमारे सरिरं भावनिक्षेपावाले मुनि कि भक्ति करणमें कस चुकते? मद पितांबरि मि कहा। हमारे मूल दिखावाला वा आकृति है और मतक सरिर वा जड है। इसतो सजमि हैं मद मुर्तीपूजक भोला–गुराम्य हा ये मुरति समभि की है या ससार अवस्थाकि है मय पितांबरि यात्रा मगवान समासरणमें बिराम उस वखत कि है जब मुर्तीपुज रम कहाके मो कथा पानीसे फुलासे आपकी आसातना हुई आपका आसातना समझी और मेरेपर नाराज हुव तो भगवानकी आसातना नहीं हुई होगी क्या दन्तकम मागी नहीं होगा वाहवा ' वाहवा " वाहवा ''' तुमारी समझ ! लोगाका करता आर और करता आर ऱ्या लिखता आर ' मा मुरख होगा वो तुमारी भम जालमें फसगा। अब ए मिथ्यात्व स्तवन पामर्षत्र सुरी कृत लिखक प्रथम भाग संपूर्ण करता हु। भी ॥ शांती–शांती–शांती–

सुइके नाके सिदरोपावे वे कीम आगो पेसे ॥
जाव इणेन धर्म बताव सात्म सात्मनि पेसेंगे ॥१०॥ म
क्या पुर्पोंको नाम लिया थी फटे पाप मदसुवो ॥
क्या पुर्पोंको मेल उतारे असा कुम्भ माजायो पुर्वारे ॥११॥ म
पुच मीच हावी थार्सु तेमे कयो करीजा
मेतो थारी आत्मा तारी भिजा विचारी सीजो ॥१२॥ म
कहे पाशर्चंद जिन आग्यार्सु जीव दया धर्म पाम्यो ॥
हिंस्या धर्मी समर धारा मोक्ष मार्ग उजवारार ॥१३॥ म

इति

श्री दुर्योदी हींस सीक्षा सुमती प्रकाश

ग्रंथ का प्रथम भाग सपूर्णम ॥

श्री श्री श्री श्री शांती शांती शांती

प्रस्तावना

इस दुतिया भागमे अमर विनय पितामरी भट्ट दुवक हिरदे नेत्रांमनर्थ पायापोषा बनाया उसकी अभ्यासता इस दुतीया भागमे लिखित मात्र किस दिखाव है बा दुवक हिरदे नत्रांमन पुस्तकमे लिखित नये नीसेपारिक बणन करके अपना सोद्य पर्स सिव करणेको प्रिपत्न किया ओर अपनी त्रुटि मात मनी केरणका साखी पारवतीमीकी निंद्या कर अनेक दुर वचनमे गोपित कर तथा नत्रमलजी प्रमुख अनक उत्तम पुरषोकी निंद्या कर अनंत संसार वधा नेको तत्पर होकर उक्त पुस्तक बनाइ हे बा पुस्तक देखनसे एमा मालुम होता है–इस नत्रांननम फुलके रुप आक धतुरके रस मीठा दीया है काइ अजान पुरुष असे उस वैद्य तथा इनका बणाया नत्रांननको विस्वास रखके सेवी पर लगातो हिरदे नत्रकी किप्त रोसनी लागी वामा नष्ट होजायगी ओर घोर संसार सागरमे पतन होकर दुःखका भागी होगा उस अमर विनय पीताम्बरी ढंट वैद्यक कु अंजनसे बचानेके यह अमृतरूप अंजन दुतीया भाग बनाया है इसमे थोडेस सातरूप तत्व वताया गया हे क्योंकि ज्यादा बणन कर णेसे अल्पज्ञ पुरषोंको समझ आणा कठीन है ओर मती भ्रमित हो जाती है इस लिय संक्षेपतासे तत्व खुलासा दिखाया गया है अंजन ता थोडा ही श्रेष्ट होता है

इती

सबकीक तीर्थङ्कर माहाराज नमस्कार करते हैं—पुन गाथा

केवल्मीयाके स्नान नीमत—स्थान इन्द्र मानी सुपवीत ॥
नंदी प्रभुजा सुखमणी—भवें दीठी कोतक भणी ॥ ४ ॥इती

केवली माहाराजके स्नान मीमीत इसमे इन्द्रमी शत्रुजा नदी मानी है पाठक धर्म विचार करोके केवली भगवानमी स्नान करते है तो पीताम्बरीनी तो अवश्यही स्नान करते होंगे ऐसे ऐसे गपोड मन्द ने वाले इनके आचार्य—उपाध्या है फिर अमर विजयके गुरू आनंदविजय आत्मारामजी सम्कीत सल्यो द्वारमें श्रीगोतम स्वामीजीके पचास ह नार केवली लिखेहे ये कैसी गपहे श्रीमाहावीर स्वामीके तो सातसो केवली हुवे आर गोतम स्वामीके पचास हजार केवली कहते है तो छद्मस्त मुनी तो २ १ ४ क्रोड होगे—पुनः

वतमान समयमें—राजेन्द्र सुरी तीन पुस्तकम २९ क सक नीकल्या इसने कैई हजारो रूपे खर्च करवाके एक राजन्द्र कोस मागनी ग्रन्थ मुम्बइ रतलाम सहरमें छपवायाहे वो ग्रंथ २ स चारसो बरस मये मन्द बीजे देव सुरीजीके पाटानु पाटधर राजेन्द्र सुरी धनचन्द्र सुरीका कीया ग्रंथ प्रमाण मीना जायगा ओर तुमारे तपगच्छ—वालोके पुर्वा आचार्यकी पंक्तीमें गीणा जायगा—यहपर मोद विजयजीका सीष्य रत्न—विजय धन—विजय है फेर सान्ती वीजयनें मान व धर्म संहीता कीताबमें धर्मका द्वेषी मनुष्य होवे तो उसको मारडाले तो प्राश्चीत नही येमी तुमारे साधुओका लेख है अमर विजय पितम्बरी का गुरु केस वेसो नेशंमन प्रष्ठ २९ मी पंक्ती श्रीकी पाधमी या छपी उसमे मुरतीमेता हमने भगवानका केवल एक स्थापना निक्षेप ही लिया है ए क्हगी के रीसवसे

माद्धेय नाममी ऐसे दो नाम निक्षेप भी तो मुर्तमे रखते ही हा– हे दीचार सीख नाम देखते सो तो उस वस्तुकीही ये मुरती स्थापीन की हे उसकी पीछाण करनेके वास्ते हे इत्यादी—समीक्षा इस इसीकी साखी पंगतीमे आवती अनावती रूप अस्थापीत करा नक्षत्र नाम स्थापना निक्षेप हे अब पाठक वग वीचारकर मन दोनो वेसम फेनेसा लेस सवाहे मुख्यो मुख्यही रहेगा सबा कमी नहोगा नाम विना स्थापना निक्षेप कैसे हा सकेगा पहले नामकी अस्थापना की जाकाा ये बात सब लोग जानते हे एस घुर मुटे मत लिखनेवाले ग्रंथ बनाम वाले पुरवा आचार्य मीन नायक किनक इनक पुव आचाय म संजमका गुण नही उसकी मुर्ती पीताम्बरी अमर विनयके लेखस सिध होती हे भैगंजन की प्रष्ट १२ समीक्षा–पाठक वग समकृत प्रवीनता बचन सुनि नही होती हे यह बातता सिखही दे ओर जो गुरू मुखसे धारण करके उतनाही मात्र कहेताहे उनको बाधकारण कम होता हे गुरूका अनुयायी पणेही संजमम प्रतृती करताहे उनका मनममे कोई प्रकारका पापरा नही होता हे इत्यादी–पुटेराय मका लिखाहे—समीक्षा पाठक वग वीचार करो जेस बुटरायनी असंमीहि जेसा ही उनका गुरू दद गुरू परदाद गुरु असजमीय–एसा इन अमर विनयके लेखसे सीध होता हे उनका बनाया हुवा ग्रंथ प्रमाण कैस किया जायगा पाठक वग वीचार करो असावित्र पीताम्बरी मुटमोला असत्यवादि ओर्न्डाषाम प्रत्यक्षप्रमान हो रहा इसीका लेखसे सीध होता हे–भर्तांजन प्रन्थकाकी प्रष्ट १७ मी नीचे लिखता दे के ढुंढनीजीकी कुयुक्तीयोको तोर मेके सीवाय मतो अनुपदीवाकी तरफ मत दिवाहे और न तो वाय ढंक न्याके बाचने वालेको अथम उत्पन करनेका विचार किया हे

विम भन्याइ केसा केमा झुट लेख लिखताहे हमारा पहोदयमे कोइ भी ठीकाने मुर्तादीक पूजनेका उपदेश नही दिया या किसी श्रावकको मुर्तादिक पुजनेका नीयम नही कराया था ! पुनेर ! वा झुठ बोलनवाला होतो तुमारे सरीसाही हा क्योंके कीसीजगे या कीसी पुस्तकमे नहीं ओर अजब गजबका भरणा धरदिया एसा झुठ बोलनेवाला आजतक देखनेमे नही आया तम गुरू आत्मारामजीने चतुर्थ स्तुती नीरणेमे लिखाहेके श्रावकोंका इस देवकी पुजाका नीषेध नही हे तो आत्मारामने तुमारी वहनेस मुर्तादिक पुजनेका उपदेश दियाहोगा तो आत्माराम ओर उनक पीछे तुमही नरकरूप स्वरूमे तुमारे कहेनेसे तुम जाओगे यता हमका मालुम नहिके कहातक रहोगे–प्रस्तावना १८ मीमे अमरविजे फुट मीय लिखताहे के ढुढक पंथमे बहुतेक साधु ओर श्रावक बड बडे बुधीवान भी हुये होगे ओर वरतमान कालमेभी होगे परन्तु गुरू परमपराके ज्ञानके अभावसे न तो कोइ नीसेधकी दिशा मात्रको समझाहे ओर नतो कोइ नयाकी दिशा मात्रका भी विचार कर सकीयाहे केवल दया दयामात्रका झुठा प्रचार करत हुवे ओर जैन धर्मके सब मुख्य तीन रत्नोका विपरीतपणे ग्रहण करत हुव वीतराग देवकी परममन्य मुर्तीयोको ओर जैन धर्मके पुरन्धर सब माहा पुर्षोका निग्धे हुवे गुरू द्रोही पणेका माहा प्राचीन काही उठाते रहे हे (समीक्षा) इस लेखमे अमरा भन्याइ छिनता हे के सब हुंडीयोमे नता कोइ न्योकी समझने वालाहे नकोई भी सेराके भीमको समझने वालाहे ठीम तमका भी समझन वाला नही–क वह क्या दया पुकार करते हे ओर गुरु द्रोही हे आपका अमी पानरा मता भव होके केमा झुट लिखता हे प्रथम वा समर

शिष्यका गुरू कीसके पास पढा है सो अमर शिष्य जानता है या नही आतमारामको पढाने वाला ढुंढीयाही था और आप गुरु नोही होके औरोका गुरू बनही कहे ते आत्माराम—जीरे सहरमे आप करे पर मगुरिका ऊपर पुछा करना था उनको जीवणराममी माहाराजनेप्रम करके पढाया—फेर आमेशाहा रतनचंदमी माहाराज पढाया सत्ता तत्वका नेय निषेपाका आप पढाया लोकोमे पुमनीक लायक किया अर उन गुरुओके वाक्य उपर लिखा सुनम लेख लिखताहे बुद्धिवान वीचार करोके गुरु बाबी कानद गुरू बादी अमर वीज और अमर वीजका गुरुही हे गुरु बाहोका बडा भारी पापहे सा तुम लाग जानतेही हा—सो बुवकामे नेय नीषेपाका जाणना नहीं हाता तो तेरा गुरु कहासे सिख्या—अर सुद्र तु लिखताहे केदया दया पुकारतेहा दया वयाता अनंते तीर्थकर हि पुकार गये हे अनंत तीर्थकर दया ही पुकारेंगे और उनके वचनसे हमभि दयाही पुकारते हे लेकिन तुमको दयाका नाम नहि गम्या हे इससे जाना जाताहे क तुमही हिंसा धर्मी आर तुमको हिंसाही पीयारा हे आर तुम दयाके द्वेषी हा सो दयाके द्वेषी होतेहे जिसका पक्ष सिद्धांतम कहा हे—सुत्र सुगडांगजि सत खध दुसरा अध्येन छटा आद्रक ; मारके जधिकारम देखो (तत्पाठ)

॥ दयावर धम्म—दुगछमाणा
। वाहा वंह धम्म—पर्स समाणा
॥ एगपीने भायेयती—असीले
णायोणी भंजामी—पकऽपुरद ॥ ८ ॥

(भावार्थ) दयारूप प्रधान धर्म उसकी वुरगंछीया करने वाला मार हिमावमका प्रवृत्या करने वाला ओर उसको भोगनमी देनेवाला मुक्तीमे नही जायगा उसी पार्टीमे तुमभी सामील होतेहो क्यो के अनेक मत दया उठानेका प्रीयतन कियाहे अब मेरेको अछीतरे से मालुम होगइ के दया माताको तो उठानेवाले ओर हिंसाका पंडीता का पुष्ने वाले येही लोगहे—अमर विजे ब्रह्मापनीने नर्माननकी पुस्तक रची हे उसमे मुठही मुठ भरके भरीहे ओर प्रपन्न सर्व पाया हुआ ऊख्य रख दीयाहे तो सत्य कहन आने वाला हे

(दोहा)

॥ मुठ बोल्ना पाप हे । नही मुठका अंत ॥
॥ नियाकर सब संतकी । आरही आप महंत (८०)

ऐसा सरीही किताबमे मत लिख्या हे आर जानताहे क पापका मूल मुठ हे ता फीर क्यो मानकर महर म्याता हे हमता तेरको चेताते हे क मुठरूप जहर मत भक्षण कर—प्रश्न प्रस्तावनाकी ७ मीम अमर विजे लिख । ह क—परन्तु हमने यह जमानेका विचार करके ओर सी जातिकी दुरगाकी अपेक्षा करके सबता प्रकारस प्रीय मन्दोसही लिखनेका विचार किया ह (समीक्षा) अमर विज लिखता हेक हमने सबथा प्रकारसे प्रिय सन्नानेही लिखनेका विचार किया हे प्रथम इसी मेजम स्त्री जातीकी तफ्उआ की अपक्षा लिखना ये मट्ट प्रीय हे याममीय हे ये पटक बग वीचार करलेगे ऐसा प्राय दर्शन अज्ञानन्नमे तथा धमना दरवाजाने जाखानी दीशामे य दोनु किताबोम संख्या होतो केही मद मराय जाते हे लेकीन साधु बाकर ता म न इस्मा करनेवाले हे—ओर बुरा । समाव अप्रीय वचनस निंदा करनेवाही हे– (ईत्यादि)

अब कौशीन मात्र निक्षेपाका अधिकार लिखते है

घमना दरवाजान जाबानी दीक्षा प्रष्ट ९० मे पीताम्बरी अमर चिन्त लिखता हक बाईसिसल अरिहतस्म सङ्ग—माहमार निक्षेप उतारमानो कही बतायो अन तुंवनी एकज वस्तु माव चार निक्षेप उतार बाना कहे ७ त्यारे मंने केवीरीते मल्या तनो मत मा प्रभ वर्गम मल्वीन आपस वोपण अमारे सेतासन छे कमके हमा गयी एवा शुद्र मेलोमली सकला मधी मन उत्तर पण क्या सुधी लिल्या करीये (इती) (उत्तर) मी बाईसिसल मता भीक्षेपा शुद्रा जुदी वस्तुमे उतारना कहा भार पारवतीर्गानमी एकीम वस्तुम उतारनका कहा भार अमर बिनत कुर्कीगी लिखता हेक सुत्रकारका मन पण एकही वस्तुमे उतारणेका हे फिर मर्यामनकी प्रष्ट १४ मीमे निक्षेपाका बरणनमे दोहेरा लिखा ह सो यहा लिखत ह

वस्तुक जो नाम है—सोइ नाम नीक्षेप
वस्तुस रुपभिन देखके—मत करोपीत विक्षेप ॥१॥

जीस वस्तुका जो नामदिया जाता ह अथवा दिपागया ह सोही नाम निक्षेप यीस ह

(दोहा)

आकती जीस वस्तुकी—नामे थापना थोप
मा स्थापना नीक्षेपका—करा सीषाजसे लोप ॥२॥

जीस वस्तुका नाम प्रमका प्रतणम इस बीन बस्तलोका माहान ह

उस वस्तुकी आकृतीसे उनका बोध करणेका क्या न चाहगे कारण यह के उस आकृतीमे तो उसी वस्तुकाही किसम प्रकारसे भाव होताह सोइ स्थापना निक्षेप बीस हे

॥ दोहा ॥

कारणसे कारज सदा—सा नही त्याग्यू स्वरूप
द्रव निक्षेप तामे कह—सर्व तीर्थंकर भूप ॥३॥

अर्थ—वस्तु मात्रकी पूर्व अवस्था अथवा अपर अवस्था है वाइ कारण रूप द्रव्य हे उस द्रव्य स्वरूप को सिधांतकारोने द्रव्य निक्षेप का बोध समझाता हे

॥ दोहा ॥

नाम आकृती ओर द्रव्यका भावमे प्रत्यक्ष योग
तीनको भाव निक्षेपसे कहवे गज घर योग ॥४॥

अर्थ—भाव वस्तुका दुसरी जगेपे प्रकट किया हुवा नाम १ और उसकी वसी आकृती अर्थात मुर्ती २ ओर पुर्व अपर कारनमे दम्या हुवा द्रव्य स्वरूप ३ य तीनोकामी प्रत्यक्षपणे जीस भाव वस्तुमे रम जाणजेत सोइ भाव निक्षेपका किसम युक्त पदार्थ है (समीक्षा) इन दोहोंमे भी ऐसा लिखा हके एकही वस्तुमे चार नाक्षेपा उतारना और सिधांतकारने भी लिखा है श्री अनुयोग द्वार सुत्रका ९७

णीदिए गुण पुवर लिख हुवाहे तथा अपना अपना सास्त्राद्य देखन भी है ज सद्दास्त्र यथार्थ भाव प्रगट करवा वाली वस्तुमे आ प्रना अस्ता दुजी वस्तुमे अराप करण नीसका नाम नामनिक्षेप है वा नाम निक्षेप जोना वस्तुमे करी सकता है इस अनुसार कर पात्र अधमे जीव अजीव तथा जीव अजीव सामील जीन वस्तुमे नाम स्थपना किया जाय उसको नाम निक्षेप कहे ना स्थापना नीक्षेप अन्य वस्तुमे स्थापीत करता हा तद ही ना। नि क्षेप भी अन्य वस्तुमे स्थापीत कीयाजायगा तो इस न्यायस ता वादीलाल्का केम चुट नही ओर तुम वखाण के दरही वस्तुमे स्थापीत करना जस माहावीर स्वामीका निक्षेप तुमने थमना दखा जोन मावानी दीशाकी प्रष्ट ६९ मीमे लिखा हेसा वेना प्रथम जीवोके तीर्थंकरोना जीव अने अजीव रूप ते मना सरीर ए वम जीने जीव अजीव रूप एक वस्तुके तमा वमना माता पीना थ नाम निक्षेप कर छोडे (स्मशीस) इस तुमारी वखनस तो भाप गुण वाली वस्तु उसीके नीक्षेपा करना चाहिय ऐसे ही स्थाप ना उन सरीरकी आकृती सरीरकी चेष्टा वाली स्थापना निक्षप समजना चाहिय ओर द्रव निक्षेप तीर्थंकर भगवानका सरी है ओर भाव निक्षेप अन्त ग्यान दरसन चारीत्र चोतीस अतीस पतीस वचन गुण ये भाव निक्षेप मम उपादे रूप है आर तीन नी क्षेप हे वो यथा जाग उपादय हापस्न हे जिसका सास्त्र स्न्द मार किसके दिखाते हे जेसे श्री माहावीर स्वामीका वृषभान पुत्र प्रमा नामकीया उसवक्त साधु श्रावक उस नामस समण करते है या नही जो मद्दागके समर्ण करतेहे तो सिवाराय राजा सम श्रावक समकदृष्टि थय. पाठ

जसे मुर्तीकी प्रतीष्टा करती वख्त मनुष्योंको इन्द्राणी बनाते हो और अन्य पुन्यवाले मनुष्यको माता पीता बनाते हो मुरादकी माता बनाते हो ये भी नाम स्थापना अन्य करतुत क्रिये हे और तु मार उपास्यरूप हे अन्य मतमेभी राम लछमण रावण राधाकृष्ण वगेरे बनाते हे वो उनके उपास्यरूप हे जैसे तुम्हारे भी मुख आकृतीवाला मनुष्यका पुतला आसन बिठाकर तीर्थंकरोका नाम स्थापना करनेसे तुमारे समाहरना हेसो-करते नही या स्थापनाका तुमका उपदेशमी समुझना ओर तुमको यह कल्याणभी करा सकेगा और वस्तुमें अपने प्रीयवस्तुका नीक्षेप करना ये नजर आताहे जैसे मन्नद राजाने अपने पुत्रका नाम राणीके अनुरागसे मृगापुत्र नाम दीया तथा-श्रेणीराजा अपने पुत्रकानाम राणीके अनुरागसे हुरी कुमार नाम दिया हे तथा अन्य मतमें कृष्णभक्त अपने पुत्रका नाम राधाकृष्ण नाम देते हे सीवभक्त अपने पुत्रका नाम माहादेव नाम देते हे असेही जैनमे रीखबचंद नमीचंद रूखमणी राधा प्रमुख नाम देते हे उसमे क्या मनुष्यके आकृतीका नीक्षेप नही होसकता हे तो माहासतीभी पारवतीभीन सत्याथ घटाउचम लीख्या हे या सत्य हे तुमार अरीहंताका माव निक्षेपका आ रोपन कर रीखबचंद नमीचंद येभी प्रमुख तुमार वंदनयोग्य हे क्योंके नरोत्तमकी प्रष्ट ९१ मीमे अमरबीजे लिख्या हे ठाणायं गमा सुत्रके चार ठाणामे लिख्या हे सो देखो

नामसचे १ ठवणसचे २ द्रव्यसचे ३ भावसचे ४

अर्थ इस पाठमें चारोंही नीक्षेप सत्यरूपही ठराये हे परन्तु तुम अमरबीजे पीताम्बरीयाने इनका अर्थ यथातथ्य समजाहोता तो असी

द उत्तर मताग्म कहना

२ प्रश्न–द्रव त्यागी किम्वा भागी ?
उत्तर–द्रव त्यागी मुर्ती भागी.

३ प्रश्न–द्रव सयती किम्वा असयती ?
उत्तर–द्रव सयती मुर्ती असयती.

४ प्रश्न–द्रव सवरी किम्वा असवरी ?
उत्तर–द्रव सवरी मुर्ती असवरी

५ प्रश्न–द्रव वृती किम्वा अवृती ?
उत्तर–द्रव वृती मुर्ती अवृती

६ प्रश्न–द्रव त्रस्य किम्वा स्थावर ?
उत्तर–द्रव त्रस्य मुर्ती स्थावर.

७ प्रश्न–द्रव पचइन्द्रीय किम्वा एकेन्द्री ?
उत्तर–द्रव पचइन्द्री मुर्ती एकेन्द्रीय

८ प्रश्न–द्रव मनुष्य किम्वा तीर्यच ?
उत्तर–द्रव मनुष्य मुर्ती तीर्यच.

९ प्रश्न द्रव मनी किम्वा अमनी ?
उत्तर–द्रव मनी मुर्ती अमनी

१० प्रश्न–द्रव दस प्राणधारी किम्वा चार प्राण ?
उत्तर–द्रव दस प्राण धारी मुर्ती चार प्राण.

११ प्रश्न–द्रव छ प्रजाधारी किंवा चार प्रजा
उत्तर–द्रव छ प्रजाधारी मुर्ती चार प्रजा.

१२ प्रश्न–देव तीन वद् माहे सुवती किंवा भवनी ?
उत्तर–देव भवनी मुर्ती नपुसक वनी

१३ प्रश्न–देव यती किंवा गृहस्ती ?
उत्तर–देव यती मुर्ती गृहस्ती

१४ प्रश्न–देव मुन किंवा नमुने ?
उत्तर–देव मुन मुर्ती नमुन

१५–प्रश्न देव देखे किंवा न देखे ?
उत्तर–देव देखे मुर्ती नहा देखे

१६ प्रश्न–देव सुगधी मान किंवा न मान ?
उत्तर–देव सुगधी जान मुरती न मान

१७ प्रश्न–देव चले किंवा न चले ?
उत्तर–देव चले मुर्ती न चले

१८ प्रश्न–देव कवलाहारी किंवा रामाहारी ?
उत्तर देव कवलहारी मुर्ती रोमहारी

१९ प्रश्न–देव आकपाइ किंवा सरपाइ ?
उत्तर–देव आकपाइ मुर्ती सरपाइ

२० प्रश्न–देव सुवस लेसी किंवा किमन लेसी ?
उत्तर देव सुवस लेसी मुर्ती किमन लेसी

२१ प्रश्न देव तरव नवदव गुन ग्राण किंवा मथम गुन ग्राण ?
उत्तर–देव तरव नवदव गुण ग्राणे मुर्ती प्रथम गुण ग्राम.

२२ प्रश्न–देव कवली किंवा छदमस्त ?

उत्तर–देव केवली मुर्ती छद्मस्त

२३ प्रश्न–देव उपदेश देवे किंवा न देवे ?

उत्तर–देव उपदेश देवे मुर्ती न देवे.

२४ प्रश्न–देव तीसरे चौथे आरे किंवा पांचमे आरे ?

उत्तर–देव तीसरे चौथे आरे मुर्ती पांचमे आरे बनी

२५ प्रश्न–देव नगन किंवा उत्त कष्ट किंवा ?

उत्तर–देव नगन ? उत्त कछे १७ सार मुर्तिमे लाखा है आर धर धरम भरी है (इत्यादिक)

इन बोलोंके साथ विचार कर देखो तिर्थंकर भगवंतके शरीर की आकृती रूपगुण और मुर्तिकी आकृतीमे बहोतसा फरक है अब तुम बताओ के मुर्तिको पद्म आसण नामासन ऋषी ध्यानारूढ भगवानकी आकृती समवसर जिनेश्वर तुल्य समझते हो (उत्तर) पद्म आसण ध्याना रूपादी आकृती अन्य मनुष्य भी हो सकती है तथा सुंदर स्वरूपवाला पुरुष वा स्त्री पद्मासन ध्यानारूढ हो सकता है मुर्तीमें सो निराकार गुणवाला तिर्थंकराके सदृश पुरुष होता है उसकी स्थापना तुम क्युं नहीं करते हो जो अनुयोग द्वारजी सूत्रमें जीवकी स्थापना क्या तुमको मंजुर है जो मंजुर है तो इन्द्र इन्द्राणी तथा तिर्थंकरों के माता पिता सदृश्यामें क्या स्थापित करते हो क्या गुडीयाका खेल करते हो हे भाइयां ! जो तिर्थंकरों के शरीर की आकृती द्रव्य निक्षेपा पूर्वापर अवस्था जैसे उपादेय तुम्हें समझते हो उस मुजब मुर्तीको द्रव्य निक्षेप पूर्वापर अवस्था तुमारे को उपादेय होगी जब तुमको भगवान की मानका तथा पापणका द्रव्य निक्षेपा उपादेय समझके नमस्कार करण योग होगा तथा भावी कालके तिर्थंकरोंका नमस्कार करोंका कहन

हा ता अर्मस्यात द्रव्य तिथंकर च्तुर म्तीम विराज मान है उनको मी नमस्कार सुमक्त करना चाहिय तथा अनन्ता मन्या सिद्ध एकन्दरी म है सभीको नमस्कार करना चाहिय (समिपा) भा माव निपेप सहित है वह परम उपाधीये स्पहे नामस्थापना द्रव्य ये तिना निक्षेपा यथायाग्य ज्ञेय उपादेय समझना चाहत कठिनहे और मूर तीमें जो नाम स्थापना निक्षेप तुमने आरापन किया उनका वहुन पुमन करणा चाल्यतहे यथा भक्तामर स्तात्र श्रतिय का याव

> बाल विहाय जलस स्थित मीद विर्व
> मन्य कउछ–सिजन सह साम्र हितु

भावार्थ—जलमे स्थित हावा चद्र प्रतिबिंब उनका बालकबिना अन्य पुरु ग्रहण करनेकी इग कभी नहा/रगा किंतु बालक अज्ञ चद्र बिंब जलमे रया हाया उनको ग्रहन करवकि इच्छा करते है

इस मूम्न तुमारा कूरूपहे नद् पुजर फलेग चंद्र मंडल्या हा तामे भाव नही और मूरती प्रतीष्ठित नरक पुनवइ सा इमका भगतीस फल देनवालीहै क्याके जिनप्रतीमा जिनतुल्य समझतेहैं (उत्तर) ये कहेना तुमारा अयुक्तहै क्याकी जिनप्रतिमा जिन सरुप्य पुत्र मुनीराजान प्रमाण नही करी देखा भाद्रवाहा सुखमे पांच पां ढवोका सजम लेक अभीग्रहा धारणकीया जनतक धोननाथ भग वत्तका दरसन नहीहाव नहातक माम मास खमन तप करणा विहार करके हरि सिवरनप्र पवार गोचरी करता हुआ तिनाथ भगवानके निर्वाण सुभा गुरुस कहा तद गुरू माहाराज फरमाया आहार पाणीकरना याग्यनही वा आहार फ्टायक पाताह मुनीने न्यारा किया उस वखत मुरतीथी या नही जो मुरतीथी वा उसीमा दरसण करके आहार पाणी करणा याग्यथा जो क्या नहीकिया ना उसास

(आयासत पढ़ये) इतमादी पाठहे इसपाठका अथ सुंद्र आकारवाला तुरणी मराप्रवर महोतहे ऐस ऊरामीका पाठ रायप्रस्नीजीकी टीका म है सा प्रथम भागम लिख आयाहे

बाहा सुमामा दस छेना अमाउजीके अधिकारमे साठा पथी लिखता ह के प्रष्ट १ ७ अरिहंत ओर अरिहंतो की प्रतीमा को वंदना या नमस्कार करना रखा है प्रष्ट १ ८ पर लिखता है जैनक साधुको ता वंदना नमस्कार करनका अरथापतीस ही सिधरुप पड़ा हे (उत्तर) साधुका बंदना नमस्कार करना अर्थापतीस ही सिधरुप पड़ा तो अरी हंताका भी वंदना नमस्कार करना अर्थापतीस सिध होता है तो फर अरिहंतका पाठ क्यों लिखा अर सुरका समझमी आवताका स्वरुप ह अरिहंताका तथा अरिहंतक साधुवोका वंदना नमस्कार करना इमी मुजब आनंदजी सरावक तथा तुंगीया नगरी सावगी जाकर सावक समी समझना चाहिये परतु किसी भावगको मदीर बनाया नही प्रतीमा पुजी नहो स्वामी बच्छल करके तुमन पोथा पोथा बनाया है प्रष्ट १२४ दुरसक मुंडीतके मिथ्याका सीम अमर विजय चितांमपरी लिखता हे विवाह चुलीयाका अगला पिछला पाठ छोडके बिचमा पाठ लिख दिया लोकाक मगरुप अंधराम डालनेक लिय और प्रष्ट ११ म ११६ तक लिखा है विवाहे चुलियाका पाठ कीवत

> जईणं भते जिण पडिमाणं वंद माणे अच्चमाण सुयधम्म
> चरित्तधम्म लमेज्ज गोय माणो अणठ समठ

इस पाठके अथ—हे भगवान जीन पडिमाकी वंदना व पुजा करन होव श्रुत धम चारीत्र धम की प्रप्ती कर गातम नही बर इस पाठका अथ ठाम्प्रायके लिय अमर विजय केसा झुठ कहेके अनत संसार बधाणक प्रयत्न करता है प्रष्ट ११६ मी पक्ती १२ म लिखता है क्यों

क धर्म हे सा तीन प्रकारके हे १ सम्यक्त्व धम २ श्रुत धम ३ और चारित्र धर्म इन तीनो धर्मम से जो प्रथमका सम्यक्त्व धम हे उसकी प्राप्तिका हे तुम मुरतीका वंदन आर पुजन जिससे हे प्रम करनेका प्रयोजन मालुम होता है उसीका तो भगवंतने हाही कही हे ओर मा तिसरा प्रश्न श्रुत धर्म चारित्र धर्म की प्राप्तिका विण्यका था उसका ही प्राप्ती दान की जीन मुर्तीका वंदन पुजनसे ना कही हे कारण श्रुत-धम आर चारित्र धमका अधिकारी साधु पुरुष ए आर साधुका मुर्ती पुजनका सवथा निषेध हे (उत्तर) देखो अमरविन अन्याइ कैसा माह्य अनरथ किया हे भा तिर्थंकर माहाराजने धर्म २ प्रकारका कहाहे सुत्र ठणायगामी दुनियाठाणामे सुत्र धर्म चारित्र धर्म ये दो प्रकारके धम कहा हे श्रु१ धर्म तो द्वादसागकी वाणि जीनकी सरदहणा परुपणा य समकित धर्म हे ओर चारित्र धर्मका २ भेद सर्व चारित्र धर्म ओर देस चारित्र धम साधु श्रावकका धर्म चारित्र धम हे च दा प्रकारका धम भी शिर्पातो युक्त हे परतुं इस अमरविने कुनतिन अपणा नगम किन्हन का मे रहित हो शाहसीकपणा धर १ प्रकारका धर्म कहा हे सा सुत्र विरुध लेख लिखके कंस स्के मे गिरेगा—(शशार्प धुरत) भीसकी मालुमन्ही क्योंके भीमगवान २ रासी फुरमाइ आर श्रेरमी यान २ रासी कहीसो मीनवसीयातिम कहाहे अब इस अम रवीजेको कोणसा नीनम कहेना चाहीये अपना झुठापस सीपकरणका नीनपणा कीया परंतु झुठा आदमी सचाकभीन्ही होसकेगा—(समीक्षा) नर्शागिनकी १२४ भी प्रष्टमे जो वीवाह चुलीयाका पाठ लिखाहे उसका अगला पाठ छोडदीया वो पाठ यहा लिखतेहे सा वीचार कर देना

जिण पढी मार्ग जाव नागपडी माण्यंवे
अन्यमाये जाव नमसमाणेण वीपासमत.

सम्म बोह बोसमेइ सुए धम्म चरीत धम्म रुमेइ निनराकणइ दुल मवाइऊ सुनम बोइ उत्रवइ अमाणी उनाणी मवइ अचरीमाऊ चरीमाऊ मवइ अणत ससाराऊ प्रत सस्मार कमेइ गायमा नाइणठ सासमठे

मावार्थ—मनुष्यलोकमे अनक प्रकारकी प्रतीमाहे उसको वंदन पूजन करताहे भगवन जीव समरान पामे तथा बोधबीज श्रुतधम चारीत्र धम प्राप्तीकरे नीरजराकरे तथा दुरलम वाबीका सुलम्भबोधीहोव अथवा अज्ञानीका ज्ञानी अभरमका चरम अनन्त संसारका प्रतसंसार करे गा तम नहीतरे ऐसा बीवाह चुलीयामे लिख्याहे इतना पाठ अथ छोडकर थोडासा पाठ लिख मोबु लोकोको भ्रम नाखन वास्ते को तत्पर हुवाहे पाठकर्ता बीचारकरो इस अमरवीजे नीनसध दुरूकन गपोड याहरा बन्तक लिखे इसका युज्या अंकतेनको हमारी कलम समथ नहीहे क्योंके इनका मुठ इनके नाम मराहै प्रष्ठ ११९ म कमर मीलव बीसताहेके ढुंडको मकीन रूपमन हुव पीतर दावया मुतपक्षादी नित्य पुजनहे गोतु उस उतम माहमनवक की पास पीतरमुत पक्षादी दररोज पुजातीहे एसा कही प्रष्ठपर लिख्याहेके पारवतीजी ढुंढनीकु दव पुमानका ऊपदशदर्ताहे एसा मुठाकलंक अथवा दोम ढुंडके ऊपर लालताइ ओरे मुठ पारवतीजीतो कुदव पुजनका ऊपदश दतीनही आर हमा गुरू जेन तत्व दरसन मावक लोकोको दीनकरीम रात्री मा मनका ऊपदेश कियाके श्रावक लोकोने पीछली रात्रीके मम दुचपीना तथा नजपीना ऐसाही लेख तरा पुरवके साबधाचार्योका हे बीवक बालसमे बीनही रीतुमे स्त्रीको इसरीतसे बसकरणी हथा बीपय सत्या बाद पय पान करना तथा मानोवम संहीतामे लिख्याहे नींबुका सना योहरके दुधमे दवाइ पचाना मनुष्योको मारना इत्यादी लोटा लोटा मुठा ऊपदश पीताम्बरी सनेगी दवहे मकीन दया धर्मी भी

भवानपतीके भवनामे भार वाणव्यतरके नगरामे ज्योतसीयाके बीमानोमे देवतोकी रामधानीमे सवत्र स्थानामे भकसतीपि प्रतीमाहे भोर पुज्यरे कहतेके तीर्थंकराकीहे भार कभी कहतेहे की सीधोकीहे (उत्र) सीधाकी मतीमा ना तुम कहागेसो सीधाका तुम सागान साहरंगकी स्थापना सुत्र करी देसा तब काद्रमे नहीं बयुक बाहा कवरु एक पीमारंगकी हेमा भरीहंतोकी मुर्ती दहाग सो तीर्थंकर पाषाही भगध हावहे भोर तीर्थंकर दबोके हाथी तथा स्थनहाते नही तुमारे मत रन सबमे कियाहे तथा उवाइ सुत्रमे भी भगवान माहावीर स्वामीका सरीरका वरननकीया वहामी भगवानके स्थनके वरन नहीहे इससे मालुम हाताक देवताके देवलाकमे प्रतीमा तीर्थंकराकी या सीधाकी नही भोर बवाह सुत्रीयाका पाटमेभी ऊपर लिखाहेके सीधाकीवा तीर्थंकराकी केवलीयानही नाकहीह भार देवता नमास्थुणा दुनहसा सम्मस्तवाला तथा मीथ्यास्तवालाभी देखेहे इसे तुमारा कहेना सिध हो सक्तान्ही प्रष्ट ११७ म जंवाचारणका पाठ लिखासा भीचारवा याग्यहे इसके पहेल विद्याचारणका अधिकार चलाहे वहाका पाठ

विजाचारण स्मणंभत तीरियके वसियगयी बीमपयंच्नरे
गोमया सेमं इउ एगणं उप्पाएण माणुसुत्तर पवएं समासरण
करती माणु तहियेतीया इवदसी इत्यादी

भावार्थ—विजाचारण मुनी तीरछी गतीबरेखो पहेली स्मासरणमाणु देतपरवतपर भाके भहवर्वद इस्वबाहम्माणु देवपरवतपर सिधायतन मतीमा न्वादा बैसक वंदनकीया सुत्र ग्यणार्थगजी तथा दीप सागर पन्नतीममी सिधायतन कुट नहीं कीया बाहा भगवताका ज्ञानका स्तवन कीया यही मीप होवाहे जो तुम मतीमाका अर्थ करणदावा असंभवहै कयुक ना मतीमा हाहीतो उगत सिधायतन जगत तीन सदीमाआलाद

श्लोक अथ है अत्र पिनाम्बरी छोम यहा चेत्य शद्बका अर्थम प्रतीमा ग्रह्य है इप दानु अर्थका निश्चे कैसे हो सकता है

(समीक्षा) पाठक वग पाठसे ही विचार करने से मालुम हो सकेगा जरा पक्षापक्षका छोडके वसोके सत्रेन्द्र विचार किया पाठ"र पढ

तं महा दुर्ल सलुत हास्त्रयाणं अरहंताणं भगवन्ताणं
अण गारास्ताय भव्य सादण या ए विरुद्ध इत्यादि

भावार्थ—सत्रेन्द्रने विचार किया के मेने जो चमेर इप वज्र फ क जो माहा दुःख का करन अरिहंताका तथा भावित आत्मावाले मुनी को होगा जो मेरेको माहा आसातना रुप होगा इत्यादि अब बुद्धिवान तीक्ष्ण बुद्धी करके विचार करके पहेलम तीनपद कहे ओर यहां दो पद कहे सो अरिहंत तथा छद्मस्त अरिहंत एक ही पद्में गरभीत हुव हैं इस पाठ अयसे सिध होता है कै अरिहंत के चैत्य छद्मस्त तीर्थ कर ही है लेकिन जो तुम यहा चैत्य शब्दका अर्थ प्रतिमा करते हो सो केवल झुठ रुप है अब तुमको कहातक तुमारा झुठ दिमाग के मस सुर्य का हमशा प्रकाश करनकु अदभुत होता है परन्तु सुय गये बाद पीछा अंध रा भान पुसता है अंधेराका समाव यही है जैसे तुमभी कुयुक्ती कुतर्क कल्पीत ग्रंथ स्तोत्र अमरूप अंधेरा पुसेडवे हो परन्तु सुय के प्रकाश होनेक बाद सुख मत्रवाले मनुष्यके आगे अंधेरा कभी ठेहर सकेगा नही विचार कर देखा असुर कुवार देवता की पुछा श्री गातम स्वामीजी माहाराम करी है भगवान वीर छी गतीके किम असुर कुवार देवताकी कहा तक है हे गातम नदी सदीप तक गया जाव आर जावगा हे भगवान क्या कारणसे असुर कु मार देवता दी छदीप तक गया ओर जावगा हे गातम तीर्थंकरके जनम

ये ठगाणगआ फि मिश्यकारकी अभिप्रायस तुमारा सब तिथ शत्रु मय गिरनार सिरूतभी आबुनी शत्रुजय नदी चहर्यो तअइ सुरत क्ष नगर सब सावद्यही तिर्थ हे तुमको ससार समुद्र तारबा समय नही है हमारी सिम मानक गया टेलको छोड बो सा तिर मनवाग

पाठक वर्ग विचार करो सावद्य कर्तव्य करण से संसार समुद्र निर मिले नहीं आर सावद्य क परमण वाले सावद्याचाम्य हुवे या नहीं सावद्य करतव करन से तो समार का भिक्रमण रुप ही होगा देख तरा गुरु आत्मा राम जैन तत्त्वा दरस की प्रष्ठ ९९५ वा ९४ म ध्यानका अभिक्रम कहा हे क प्रतिमा कर्त पुजा करनेस क्रोड गुणा फल स्तोत्र पढन म हे भर स्तावसे क्रोड गुणा समणहे हे समणस ध्यान ध्यानसे सय लगानका मा" गुणा फल कहा हे मन्य जिवो इस आत्मारामजीक लेखपर विचार करो जस एक रुपयकी पद्म होणसे क्रोडा क्रोड धा ब्याम भादा हैं इस लिय दया धर्मी मायतौरप या निरवद्य पुजा क्रोड काव के फलवाला कर्तव्य छोडकर एक नफाही सावद्य रुपक सामस प्रमाण करेगा भरी तु नहीं करेगा ऐस अनेक सिधांन सुत्र टीर्थकरकाही प्रमाण हे सवीन ग्रंथ फानसे नहीं लिखा हैं तुमार कु सिवालिके पाठम मुर्ती पुज्या सिध नहीं होन स फक आत्माराम ग्रंथा की साक्षी तथा धरती माताकी साक्षी पृष्ट १७१ पर अमरविजे अन्याय लिखता है—

सिवालिस भी सम्मत और यह धरती माताका साक्षीस भी सम्मत (इत्यादि)

(उत्तर) अब वा दसो तुमारी धरती माताकी सम्मत की साक्षी तुमारी ही धर्म दगात है जैस पत्र माता २२ मी आक्रोश ना अक्रम निर्पे क्रमेण मदन

तथा सर्व पुर्वाचार्योंको सावद्य कहेती हे और फिर लिखना हे क बुद्दीया की मगत करना नहीं परन्तु बुद्धीवान पुप होगा वो इस अमरविन दपीका फन्दस बचाव करनेवाला होगा वा सत्य मुठका निर्णय करेगा (इति) अहा अमरविज पितांम्बरी हमको तुमारी अज्ञानता दुर करत हे सो तुम वा ज्ञा विनराग दवके वचनका विपरित सरदानस संसारका भय हाता ता विचार करक सुध सरदान पर आनवागे सैर । हाना या सो हो गया अब भी समझ समझ मावागे तो भी बहेतर हे जस एक कालुराम वर्मीनें कहा हे

(लावणी चाल तुणकी)

सेर

जैन धर्मका अब सुणलेना तुम बईयान जी ॥
साधु होक ईरीयासे या इनसान नहीं ईमान जी ॥१॥
सीलका छापा जो करे सो मागी भमर पहचानजी ।
जो ग्यान तो आने नहीं मुख सेच सानजी ॥२॥

(लावणी)

अब मन मुर्ख मु जरा सरम नहीं आता-माहाराज नाहक तेरा आनाम सेर हुआ सा हुवा अब भी फेर समज कर चलना जी

शेर

ये एक उलटुन मुख पंथ चलाया । माहाराज सवगी नाम धरायाजी ।
आर माहुगम म बदलक मुरख क्या फल पायाजी ॥

कहाती ह ओर अधिक तपास करणे की मरजी होवे तो मारवाड मालवा गुजरीयावाड दक्षिण आदीमे फिरके देख छे की मुलसे दया दया पुकारनेवाले रस घोय मजम किलन पडे ह–

(उत्तर) जी हा बराबर हमारे दया धर्मीका सनमका आचार पालना बाहत कठीन है नरासा स्थिल आचार देखके श्रावक छाक निरादर कर रह हे ऊसी ही कारणसे हमारे दया धर्म से भ्रष्ट हाकर पितामरीयोमे आ जाते ह वो हमारा उतारा हुवा तुमारा परम पुजनीक बन जाता है ओर भ्रष्ट हुवाबाद नसरा मी पहोत करत ह जस सनातन मुसल्मान होता हे वो तो हिंदु धम वालाकी निंदा नही करगा ओर थोडा बहोत रहेम भी आ जाता हे परतु हिंदुपणसे भ्रष्ट हाकर मुसल्मान होवा है वो जादावर हिंसक ओर निंदक होवा ह सो निंदा करके दया धर्मीयोकी निंदा कर क्यो भ्रष्ट हा ते हा पितामरीयाको सिक्षा (स्तवन)

स्तवन

(राग वंन जारा)

एक मन सोच सुध मरी । मन हाय दयारा वेरी ॥ दर
उद्यप जिन धर्म हिंसा । एरे धम करम प्रसंगामी ॥
घर छाड दुमत भेरी । मन हाय दया का वैरी ॥१॥
पहाड हिंस्या विर भना । मह सुध पात मिमर मजी ।
हिंसा एक दरस गेहरी । मन हाय दया का वरी ॥२॥
गाप पर महीमा टाव । मध टाम अप दही गावमी ॥
दर मुख एक दिवे फरी । मन हाय दया का वरी ॥३॥

भय अग्र पुरवी सिगात। मत द्दान भग प्रकादामी ॥
तम मिर नरक पुर सरी। मत होय दयाकर करी ॥४॥
अमृतम म्हेर मिल्याया। अपन मनको समझायाजी ॥
आग मुनीकन गमकी कचेरी। मत हाय दया कर करी ॥५॥
हिंसाम ना शुभ गती पाय। फिर दुर्गतमें कुन मायजी ॥
य समज मली नही तेरी। मत हाय दया कर करी ॥६॥
कहे कमीरदिन भव प्राणी। परमा निर यह जिन वानीजी ॥
नहा मोक्ष मिकन मे दरी। मत हाय दयाकर करी ॥७॥

य मिथ्या मुनक स्वीकार करना चाहिय इती

प्रश्न १९६ प अमरविज मिथ्या वादी लिखता है ओर रेलपे चडनका ना कलंक दिया है सो भी उन कुमती रूपण कुही आचरण किया है क्याके इम माहात्मान म ता कमी रलपर चडनकी इछा का है आर न तो इमपुर्वक कमी रेलमर चडन का भी ‌‌त्याग है ती फिर उस मुन कलंक चड नम कुछ कलंकीत म हो सकगा (इती)

(उत्तर) यह स्तीमी पारवर्तीमोका लिखना सत्य ही है मुन ही ह तु किसी स्तेमे पडे हुवा या सा तरेका माछुम नही परन्तु आतमाराम रेल में कर अमात्रस मुर्चीयान आया है य बात पंजाबमे मशुर है फर सत्य कम्म पाच का पुछ लेना सच का झुटा करना भयोर पापक मागीवनक अनमी अधोगतीमें निवास करोग–इसमे अचरज सो इतना हा हुवा है की तुम स्तिाम्बरी अपना ओर अपने अभीतोका धम बिगाडा कानवाले तुम सरीस पाठ ही नजर आते हैं क्योके महाममीय का प्रताया अपने संमची मा

कमगसे उन्मार्गगमणसे शु माग का नाश होय ओर ए साधु धमका उन मार्ग मलतेनसे ओर ए साधुरुप शुमागका प्रलोपन करनेसे महा असातना बधे तिसम अनंत संसार फिरना पडे इस वास्त हे गातम साधुयोको यह काम बेशा नही समजना (समीक्षा) द्रव्य पुज्याका करना करावणावर फल अनंत संसार की वृधी होय ऐसा क्या इसमें अमरविजे कुतर्क करता हे की साधुका द्रव्य पुजा करनेका निसेत्र ह परन्तु श्रावकको तो करनि चाहिये एसा कहना इनका अयुक्त हे (पाठ) (गोतमाएवं बुचइतव णाणत हति समणु भाणाम्मा) इस पाठका अर्थ अमरविजे अन्याइ समझा नही हागा या अब हम लिखकर समझाते हे श्रावक लोकोने मुर्तिका पुजन करना सम कार्यम जो तुमको माना हे ता साधुको मन्त्र नहीं समजना किस वास्ते भगवान फरमाते श्रावक समायक पोषद बत करते हे उनको साधु म्ध्य समझे या नहीं हां भी समजते हे तो फिर द्रव्य पुजाको मना क्यों नहीं समझना कहा और फिर अनंत संसार कि वृधी मिथ्यात्व बिना होती नहीं इस लिये तुमारा ही लेखसे द्रव्य पुजा मिथ्यात्व अनंत संसारका हेतु हे बिधमान धूतरम पिताम्बरी लोक द्रव्य पुज्या उपदेश दक कराते हे आर सम्यमी जानते हे तो अनंत संसार भ्रिमण क्यु नही करेगे किन्तु जरूर करेगे पृष्ट १६० से १६८ तक जिनदत्तसुरी कृत सगह दाक्षवकी मपण सभकी सच्ची समझी गाथाका विचार

। पाठ ।

गट हरिय पच्चाए आत्ते पच्चनयरं दीसय बहुजण ही
जिग गिह कारवणाइ सुम किच्चा असुधाय ॥६॥
सा होइ दव्व धम्मो अर हाणो भनिस्सुइ जणम्मद्दा

धम्मा वि मा मरी भो पदि सोय गामी हि ॥७॥

इन दानु गाथाका अथ अमरविज पिताम्बरी प्रष्ट २९९ म छिमे है अत्र जो गाथा का तात्पर्य है सो हम छिम दिखाते हे बहुत भाकाकी माथ मह माष्स गा बस्नवाले हो सो मी नमर म दिखनेम आव हे मदी रका बनाना भाविसुत्र विरुध भार अशुध है ॥६॥

अब सातमी गाथाका अथ–जो मदीरका बनाना भारी है सा द्रव्य धर्म है अमाधान हे निर्वृती मा मोक्ष स्मग्र दनवाला नही है आर मुख्य दुसरा गा भावधम है सा मती भावगामी मी साधु मी अर्थात द्रव्य धम स उलटे जानवाले साधुओन सथित किया है ॥७॥

इस सत्पमी गाथाका भावार्थमें अमरविज कुमतीन साधुका नाम कल्पित छिखा हे गाथामे ता साधुका नाम नहीं है (समीक्षा) इन गाथाका भावाथम ता एमा हे के मन्दीरका बनाना तथा द्रव्य पुजा है सा द्रव्य धम ह भार मोक्षस मार्ग मुख्य अन्तु भोतगामी संसारमे अमाणसाम्य ह आधमका कारणसे दुमा भाव धर्म अर्थात भाव पुजा सो सुध धम हे मात मातगामी अथात धमारसे विमुख होनेस य दानो गाथाका केख अमरविज का हिंय धम मुल्से ही कट गया है परन्तु ज्ञाननेत्र मद होनेसे इनका सुन्ता नहीं सो क्या माछुम इनका कोनसा मिथ्यात का उदय है

पृष्ठ २ ९ मी २ मीं दोहाराका अथ मे अमरकुमती छिखता ह कि साधु मी ता स्यामाव पुमा करत ही हे (माष) द्रव्यका कमाव होनस ही द्रव्य पुजा करनेकी मनाइ कि गइ ह (उत्तर) तुमार यस पाथादी उपादी द्रव्य हे के भाव मधु पद्य वगेरे मिथ्या अवे हो तो द्रव्य ह क भाव अनक प्रकारका मानन स्थान हा या पणी पित हा य द्रव्य हे क भाव श्याम पुकारा पिना स्वाकादि मवा स्वाद हा सो द्रव्यहे के भाव तुमारे माकाम

धर्म खाता माना है पिताम्बरी भाइयो कि मुसैरिक लज्या करे ये भी तने धर्म खाता माना है तथा माता बहेनकी छबिनीर कन्जताके समय इनके कोष करना ये भी तेने धमका खाता माना है तथा मल्लिनाथ भगवान कि छबी दसके छे राजा मोहोवसी मुत हुवा था भी तेमे धर्म खाताही माना होगा (समीक्षा) अरे मुढ तेरे का था दिखता नहीं क्योंकि हृदयका नेत्र तेरा फुट गया है परन्तु देख मन्द मल्लिनाथ भगवान छ राजाओने उपदेश देके वराग प्राप्त कराया था ही धर्म खाते मे है इन मुजब सब समाप्त तेना ओर तुमारा धम खाता ह था इस मुजब तुमको सममाते हे तेरा गुरुका बनाया मैन तत्वादर्शक ४१२ प्रष्ट पर लिखा है के दान तप पुजा समापक करे कपटेसे करे तो निसफल ये तुमार धर्मका खाता है फिर ४१८ पत्र पर आतमाराम लिखता है कि बिघन दुर करणी ते अग पुजा ओर पुन्य वर्णवि नाम पुजा ये तुमारे धमका खाता है फिर ४१२ पत्र पर लिखता है के घर देहेरकी पुर्व उत्तर ओर मुख करके पुजा करते ता चायी पिटीस विच्छ द होय व्यागका मुख करके पुने तो संतान नही होय आर विदिशामें मुख करके पुज तो घन पुत्र ओर कुलका नाश होय आर ४७८ प्रष्ट पर लिखा है के देहेरेके पास रहे तो हानि होय ४७९ सी सि प्रष्ट पर लिखा है के वृक्षकि भवनाकी ओर मंदिरके शिखरकि बिचले दो पहेरकि छाया पडे वारा वस तो हानि होय ओर फिर एसा लिखा है कि जिनेश्वर कि शिखर द्रष्टि हाथ ऊपर वस नहीं सो क्या पितांम्बरी भाइयो यह तुमारा धर्मका खाता है के इनसे धमका खाता आर है फर तुमारा ग्रंथामे लिखा है के प्रतीमा दाय चार के आट दस बारा अंगुलकी घरमे रख तो असुभ तथा जिन तथा सि तिर्थंकरोके पूरा नहीं हुवा उन तिर्थंकरोकि प्रतिमा घरमें रखे ता असुभ है यह भी तुमारा धर्मका खाता हे तथा मृतका उग मा कर मंदिरमे ले जाते हे ओर धुप मुर्तीका करावे हे यह भि तुमार धम का खाता ह तथा मृतके बारम राज पुपकि घाति वगेरे तथा शि की साडी

चुनडी वगेरे प्रतीमा के आगे धरत हे यह भी तुमारे धर्मका खाता हे तथा ध्यानमे तिर्थंकरोका नाम लेके गाते हे यह भी तुमारे धर्मका खाता हे

(समीक्षा) अहा हमारे पितास्मरी भाइयो ऊक्त पातामे हम समारक खाता समजत हे और तुम भाइओने इसमे धर्मका खाता माना होगा कोइ ? सम्प्रमानी जीव मशीर मुर्तीको मानत हे परन्तु समारक खाते समजत हे एस शास्त्री प्रतीमा पुर्जी वो भी समारक खाते हे तथा सुरीयाभविन वगता वी प्रतमा स्युम धाव प्रमुस्को पुजा करी सो भी समारक खाते म हे

नर्थामन द्वितिया भागकी प्रष्ठ ७८ मे अमरविजय कुतर्की लिखते हे कि य छबि हे सा ढुंडनीजीका स्थापना निक्षेपाका उनके स्वरूपकी ही है मन इसमे दर्शाये के कोई बदमाश पुरु कामचेष्टा रूपक दिखाव करके और ढुढनिनी की छबीके सामने खडा होके और दुसरी छबिको अर्थात मुर्तीको उनाता करायके आगे नग पर वे अदबी करता फिरे तब हे ढुंढक भाइया तुमको और हमको विमगिरी उत्पन्न होगी या नहीं इत्यादि उत्र—हां हावगी एसी ब अदबिको करना व न करविना लिखना तथा माहात्मा साधु साध्वी की निंदा करना यह सब बदमाशोका ही काम है क्योंकि उन बदमाशोका निंदा करना ही पसंद है और उनके लिये शास्त्र—व्यराम शास्त्रमे श्लोक द्वारा या दुनियामे बुरिस बुरी बिन है उसका समतुल्य स्व न्यि है

श्लोक

ममृवि कूर्णा हीनं असूर्चा नौग्प मैथुन ॥
ममूर्ची परी परवादं मसुषा पर्न्नीदकः ॥१॥

फर दुनियामे भी निचस निच शाती चांडालकी है मा मंय कर्तानि उन निंदा करनवाले को उस भातीक बराबर रखा है

रूप है वनका तदरुप नामका सकरुप प्रत्यक्ष से अवलोका करना तथा तद्रुप स्थापन करना वह भी य समन है नब पितामंबरी भाइ कहेंगे की हम ता मुर्तीका वदन पुजन सत्कार करते है (उत्तर) अहो पितामंबरी भाइ तुम जिनवर स्वामी व अदनी यान अमातन करनवाले हो क्योके श्री माहावीर स्वामीजी तो ग्रहवासमें रहे हुए भी दो वरस कुछ ज्यादा अग्मे तक कचा गल्य सेवन नही किया हाथ पाव धोनके लिये भी फ्रासुक यान निर्जीव पानी बापरया उन तिर्थंकर देवो की मुर्ती परम शान्ति ध्यान रुप माकुनी कक फिर सचित पाणी फुल धुप दिप वस्त्र आभुषण पहेराणा यह बडी अमातना यान य अधनी है जैसकि सुणो जैसे एक सेठका मुनिम मुन्ल मिन था मगर यकिन वाला बाहात विनास दुकान प था मन सर गुनरचा रुम सेठका फोटु बनाके दुकान प रख दिया जब वह मुनिम दुकान प आता तब उस फोटुको सलाम याने नमस्कार कर फिर दुकान का काम प लगा था इसि सेठका फोटुका इस मुनिमको मना नही करता यह समजता कि इस मुनिमकी एसी मरजी है परन्तु केइ दिनाके बाद तहवारका दिन आया जब वह मुनिम मक्ती समझके दुकानमे नही आव स्थयक पुरी वगेरु यह मुनिम लाके सेठ के फोटु आगे मेट की जब सेठका मालुम नाराज हो उस मुनिमको दुकानसे अलग किया

प्यार मुरब पितामंबर भाईयों इसी तरहसे हमारे जिनवर देव ता परम दयालु परम त्यागी वैरागी है उसकी माकनी बनाके इसके आगे अयोग्य वस्तु सचित तथा अचित भाग भर करना यह से अवनी यान बडी भारी अमातना है क्योकि पुर्वे स्थापनाका द्रव्यरुप सत्य मानन है ॥

अब निक्षेपाका वर्णन सारुप शास्त्रानुसार भवजीवोका समजानका और मिथ्यात्वरुप अंधकार दुर करनके लिये किंचित यहां लिख दिखात हैं ॥

जा जो जगतमे पदार्थ हैं उसका चार २ निक्षेपा अवश्य ही करना

चाहिये प्रथम उस वस्तुका जो नाम दिया गया तथा अनादि नाम उसकी सहित या वस्ती रहित गुण सहित या गुण रहित नाम है उसका नाम निक्षेप कहिये उसप अनुयाम द्वारका पाठ लिख दिखाते है ॥

। पाठ ।

जस्सणं जीवस्सवा अजिवस्सवा जीवाणवा अजिवाणवा तदुभय स्सवा तदुभयाणंवा (इत्यादि)

अर्थ—जिसका मनुष्यादिका अजीव काष्ठादीकका अथवा बहुत जिवा का अजिवोका अथवा दोनो मिले हुए एकत्र बहुत्व नाम दिया जाता है उसका नाम निर्देश कहेना चाहिये

स्थापना निक्षेप किसको कहेना की जिस वस्तुका स्वरुप याने आकृती करके थाप होय उसका स्थापना निक्षेपा कहेना

। पाठ ।

कट्ठकम्मेवा चीत्त कम्मेवाजाव एगोवा
अणेगावा सब्भाव ठवणावा असब्भाव ठवणावा इत्यादि

अर्थ—काष्टक चित्रक लेपक गुथीमके मून किरियाके वालुक मणीक पाषाणक कोडी प्रमुखके यह दश प्रकार की एक अथवा अनेक सम्भुत या असम्भुत स्थापना की जाती है उनका स्थापना निक्षेपा कहेना

अब द्रव्य निक्षेपा किसको कहना की जिस वस्तुका जो भाव प्रयायस अतित अनागत द्रव्य अभिषायकाके मानना याने कारण रुप है उसका द्रव्य निक्षेपा कहना चाहिये

वस्तुका वर्तमान गुन रहित अतित अनागत सहीत सो द्रव्य निक्षेप ता अब मिरगीके कुंभमें अतित अनागतम मिश्रीपनका गुण दुढनीजीम र्यां वला जो कुंभे को द्रव्य निक्षेपा लिखती है और क्या मिरगीके कुंभेको अतित अनागत कालमे मिश्री कलक खाया जायगा जो मिश्री वस्तुका द्रव्य निक्षेप कुंभेम करती है समीक्षा—पाठक वर्ग विचार करोके सत्य वादिनी सती पार्वतिजीका लेख और इस अमरविजे कुतर्कीका लेख इन दोनामस किसका लेख सुत्रस मिलता है फिर अमरविन भी पृष्ट १९ म लिख आया हैं

दोहा

करणसे कार्य सदा सो नहीं त्याज्य स्वरूप
द्रव्य निक्षेप वाम कर सर्व तिर्थंकर भूप ॥१॥

अर्थ—वस्तु मात्रकी पूर्व अवस्था अथवा अपर अवस्था है सो ही कारण रूप द्रव्य है ऐसा अमरविजेन लिखा है सो इनका ही लेख इसका उथपने सुर नैराता है

क्योंकी अतित अनागत वस्तुस्वरूपको करके द्रव्य माना है ऐसे ही मिश्रीके कुंभका द्रव्य माना है सो ये पार्वतिजीका लेख सुत्रसे कैसे विरुद्ध हुवा किंतु शास्त्रानुसारही है और तेराही लिखना सुत्रसे विरुद्ध है क्योंकि तरी इत्यादि कुतर्क करके पृष्ट ४९ की पंक्ती समिक्षाकी १२-११ मे लिखना है की मिरगीके कुंभे को अतित अनागत कालम मिश्री कलक खाय जायगे क्या?

उत्तर—भला यही खाया मानेगा तो अनागत कालमें तिर्थंकर होनेवाले हैं वो कैसे वंदनिक पुजनिक होवगे और तुं पृष्ट ११ की समीक्षामें मिश्रीके

मिश्रपण होता है सो तो भाव निक्षेपा है मगर कुंजा जो मिट्टीका है उस मे मिश्रपणका भाव क्या है जो तुमरी मिश्री वस्तुका भाव निक्षेपा मिट्टीके कुंजमें करती है क्योंकि कुंजा है सो तो एक वस्तु ही अलग है उनके तो ४ निक्षेपा अलग ही करने पड़गे तब—जो तन मिश्रीका च्यार निक्षेपा अलग करना कहा और कुंजेका च्यार निक्षेपा अलग करना कहा जब तो तर कहन अनुसार जिनरूप मिश्री शरीर रूप कुंजादि दोनो वस्तु अलगही है तो शरीरका निक्षेपा अलगही किया जायगा और चेतनका निक्षेपा अलग किया जायगा और मुर्ती जो एक अलही वस्तु है उसका तो निक्षेपा अलग हीं किया जायगा अब तो तुमार कह मुतविक ही जिन प्रतिमा जिन सरीखी मंडन हो गइ और तु जो कहता है के मिश्री म मिश्रपणा वो तो भाव है और मिश्री द्रव्य निक्षेपा है और मिट्टीका कुंजा वो वस्तु अभेदी है तो कहा भासमित्र ! तिर्थंकर उनका चेतन द्रव्य और तिर्थंकरके अनन्त गुणरूप भाव निक्षेपा है और शरीर वस्तु अभेदी है क्योंकि शरीर तो पुद्गलरूप है जग पक्षपात छोड़के विचार करो की जस मधुरा कुंभ को द्रव्य माना है सो मधुका मिश्रपणा कुंभ नहीं है परन्तु कुंभका मधुका भाजन रूप शास्त्रकार ने द्रव्य माना है ऐसे ही मिट्टीका कुंजा है और तू जो कुतर्क करके मनी पाषाणीमीका सखा उनका झूठा ठेराता है सो वैसे ही बेरस दोस रूप है अगर तु मिश्रीके निक्षेपा अलग मनेगा तो तेरे ही कहनसे एक ही वस्तु का निक्षेपा उसी वस्तुमें मानना तो इस मुजब होगा जसे तिर्थंकर माहाराज का जन्म समय माता पिता का नाम स्थापना किया वो तो नाम निक्षेप है और जिस समय थी भगवान समवसरण सहित अष्ट माहाप्रतिहार संयुक्त सुशोभित आकृति वो स्थापना निक्षेपा है और जो भगवानका शरीर परम उदारीक है एक हमार आठ लक्षण युक्त भाव वस्तुका भाजन रूप द्रव्य निक्षेप है अब भाव निक्षेप अनन्त चतुष्टय है ये च्यार निक्षेप किया सो एक ही वस्तुमें प्राप्त होत है और भावयुक्त तिनही निक्षेप यथा योग्य

उपादय हैं इस सुमन साधुका च्यार निक्षेप हाता हैं कोइ पुरुषने संयम लन का विल किया और कुंभस भगया मांगी सा नाम निक्षेप है और साधुका वाना (वेस) रजोहरना मुखपति भक्तपात्र सहित रूप वो स्थापना निक्षेप है और साधुका गुण रहित द्रव्य लिंगी है आर सावद्य का त्याग किया मगर सयमसे समझे नहीं उसको द्रव्य निक्षेप कहेना अब भाव निक्षेप साधुके गुण उपयोग सहित है उसको भाव निक्षेप कहना ऐसही समायकका च्यार निक्षेप करना समायक करनका नाम लिया सो नाम निक्षप हैं मव श्रावक आसन उपस्थित हाके मुहपती लगाके पुंमणी सहीत हा वो स्थापना निक्षेप हैं आर सावद्य यागके त्याग उपयोग शुन्य द्रव्य निक्षेपा हैं और सावद्य वृति उपयोग सहित वो भाव निक्षेप है अब अगसक सुत्रके च्यार निक्षेप अक्षर सुत्र जिसका शुरु किया सा नाम निक्षेप हं आर स्थापना निक्षप ताडपत्र आदी अक्षर आकार लिखा वो स्थापना निक्षेप हैं और सुत्र को उदातादीका उचारण करे उपयोग बिनाका द्रव्य निक्षेपा हैं और उपयोग सहित है वो भाव निक्षेपा हैं वस्तुस्वपगा समज लेना इस सुमन तो मुर्ती की माफली बनाना तिर्थंकरोसे भिन्न वस्तुकी है वो उपादय रुप नही होगा आर जो तुम स्थापना निक्षेपा भिन्न वस्तुम आरोपन करोगे तो मामादि निक्षेपा भी अन्य वस्तुमे मानना पडेगा जैसे गुलाबचंद नामका च्यार पुत्र हैं अब एकको बुलाव तब च्यारो बोल उठेगा क्यों की नाम निक्षेपा चारोका ही सरीखा हैं अब द्रव्य निक्षपा हैं सो भाणग सरीर भविय सरीर और इनसे वति रिक्त तथा आगम पढीना आगमवकी एस भेदान्तेन श्रस प्रस उम सुच समुम बहु उसका भी द्रव्यसुत्र सुत्रकारो ने माना है तथा मध्यके निक्षेपामे भावी व्यतिरिक्त का भेदामे सचीत मचा धाकाका स्कंध हस्तिका पुषमादिका इत्यादि द्रव्य स्कंध सुत्रकारने माना हैं (समीक्षा) इसमें पाठक वर्ग विचार करोको सुभ ज्ञन शास्त्र आदिके और सुत्रके पाना सेवा हैं जो सुत्रकारन म द्रव्य सुत्र माना तथा स्कंध

कहे सो देखा वो मुर्ख कैसा हैं अथात महा मुर्ख हैं तथा पांच प्रतिक्रमण सुत्र की प्रष्ट १२ मे लिखा हे की नाम्मदी १ मतच्छिकस काई भी बांधी ताथ की सिद्धि होणा कहा ऐसे ही माव जिन की सेवा पुजा करण से अनत लाभ प्राप्त होता है और माव जिन हे सो वो ही माव सम्यक्त्व है अब ऐसे मंगलिक भाव जिन श्री वितराग देव परम वैराग्य शांति स्वभाव सहित तथा सचित भोगोपभोगका सर्वथा त्यागी जो जिनराज देवाधीदेव की सेवा पुजा कैसे कि जाती है की ज्यो समवसरणमे लाभ याग्य तथा श्री परमसरोक वंदनीय द्रव्य और सुभ ध्यान रुप पुष्पकनास ही श्री जिन राज की पुजा करणा एसा कथन आत्मारामजी संवेगीकी बनाई हुई जैन तत्त्व दरानाम मथकी प्रष्ट ५९३ मे लिखा है वृद्धवादी गुरुजी अपना शीस सिद्धशान दिवाकर को कहेत है तथा अणकुस्सिम तोड हिंमाराता माअहिं मण कुसुमहि अच्चिय निरंमण जिणहिइ हिंम इयअगमण ॥१॥ अथ अणफु माफ्कक अनंत दानेस अप्रास फुल फलो का मत तोड भावार्थ यह है की योग जा हे की सहरे की निम योग वृक्ष में यम नियम तो मुल है और ध्यानरुप श्रण स्कंध है समताप्णा कविपणा वक्षपणा यश प्रताप मारण उच्चाटण स्थमन वशीकरणादि सिद्धियोकी जो सामर्थ सो फुउ हैं अरु केवल ज्ञान है अपि तो योग कल्प वृक्षक फुल ही क्यो है सो केवल ज्ञानरुप मत्त फलके आगे फलेंगे इस वास्ते तिमे का प्राप्त फल पुष्पोका क्या ताडता है अर्थात मत तोड एसा भावार्थ है तथा मारोवा माने हिं ॥ व्याख्यार्थ माहात्म्य आइापा है तिनका मत मराह मणकुसुमे मनरुप फुले करी निरंमन जिन पुज्य (निरंमन जिनको पुज) स्नातकने किंहिंडसे ॥ परन्तु वनवन मे क्यों भ्रमता है ॥ इत्यादि

श्री जिनेन्द्र की पुजा पुष्पमय तथा ध्यानस्य दि थ इसवर पास मि इसी ग्रंथ कि १८७ मी प्रष्ट पर आत्मारामजी लिखते है

श्लोक

पुजा कोटी समस्तोत्रं स्तोत्र कोटी समाजप
जप कोटी समध्यान ध्यान कोटी समोलय ॥१॥

अब येलिये की अगर तगर चन्दन केसर धुप दीप नैवद्यादि द्रव्यो करके जिन प्रतिमाकी पुजा करणेसे कोटी गुण ज्यादा फल जिनस्तोत्र पढनेसे है और स्तोत्रसे कोड गुण अधिक फल जाप करनेसे है और जापसे भी कोटी गुण ज्यादा फल ध्यान लगानेमें अर्थात ध्यान करनेसे है और ध्यान करनेसे भी क्रोड गुण फल लय लगानेसे अर्थात चित्त एकाग्र करनेसे है (समीक्षा) द्रव्य पुजा करणेसे क्रोड गुणा क्रोडा क्रोड गुण अधिक ज्यादा सम ध्याना दिक भाव पुजामें है सो सुज्ञजन कहेते है कि श्री जिनेंद्र भगवान के समय सरणमें वृक्ष फुल पुष्प सचित है हे विपर्य य तुम्हारा कहना सत्य नहीं क्योंकि श्री भगवानके समवसरणमे कदापि सचित द्रव्य नहीं हो ना सकता तो फिर समवसरणके फुल सचित कैसे हो सकता इसलिये पुर्वाचार्यमें भी इस धनसारोद्धारकी पृष्ठ ११६ में समवसरण के फुल अचित लिखा है तथा इसी ग्रंथकी प्रष्ठ ११९ पर नव सुवर्णके कमलन पुष्पा पर श्रीं जिनेंद्र भगवान पदारविंद रखत है तथा श्री मान तुंगाचार्य कृत भक्तामर स्तोत्र की ३६ मी काव्यमें कहा है ॥ उन्निद्र हे मनव पंकज पुंज कांती ॥ इत्यादि ॥ इसमे भि नव हेम सुवर्णके फुल कहा सो अचित है अर्थात सुवर्ण मयी है तो फिर समवसरणमें सचित फुल कैसे हो सकेगा अपितु कदापि नहीं समवसरणके वृक्ष फुल पुष्प सबहि अचित है

मगर सिताम्बरी पराजय

मिथ्यात्वसतकी पृष्ठ २८८ में समरपिन लिखता है की तुतीये वर्गमें हर

जग सग्र परामय हाव है एसी कहेस्र ---७ उग भाग नावग्र इल्मा यान मूंत्र तोहमत लगाव है मगर दुनियां म कहत है क पानीमि मुहनाते क थोर समीप वाम्सीचाड क काइ देवी नहीं है परंतु अक्सर व हार्मिया मनुष्यको ऐस छुटे फेसका कभी सचा नहीं समजगा वलिय ! जिम कि जोप पितांम्बरी परामय हुवे है वोह हम निष लिरर विस्तार ही अब मर जिगर के पक्के सात्के पितांम्बरी की वेला और बांचो बांचा बांचा---

प्रथम तो अहमदाबादम श्री स्वामी वेठ मलजी माहाराज्स सम्वत १८११ में चर्चा हुइ उसम पितांम्बरी परामय हुवा हैं और साहेम लागोंने इस्नाप करके विनयपत्र कर लिया उसमें लिखा है की दुंडीये सच हैं और पिताम्बरी पाखंड दुनियादार हैं उसकी नकल हमारे पास मौजुद है १

फिर सम्वत १९ ९ के साल चैत सुदी १२स वसाख वदि २ तक म हाराजा पितांम्बरी रत्नविजे और श्री स्वामी रत्नचंदजी आगरवाले क साथ चर्चा हुइ उस वक्त भी पितांबरी परामय हुवा उसका विजयपत्र महाराजके पंडिताये गिरधरजी पंडित रावाचार्यने श्री स्वामी रत्नचंदजी को कर दिया सो मौजुद है २

फिर अब नागोर शहेरमें तेरा गुरु आत्माराम चर्चा मगुरी कर (कवत चदजी महाराजस संवत १९४१ के साल) भग गया अब उस वानसी भावजन प्रीति करके करनी गाई वह यह है

सवैया छोटी करी.

ज्युं कुमति कुसाज कठोर सदाका येती
चर्चा नहीं किनी थाप गई सब सेखी -- १
ज्युं घमंड करिने सेर नगीने भागा.

और यां प हुवा पदनाम वाजा वजवाया —२
अठे आदुयी मरजाद जी कीये आंगी
नहीं मानी संपकी आण साधु नहीं सामी —३

इत्यादि और भी इसकी गाथा है मगर लिखन में क्या फायदा अवल मानका इत्याहि अच्छा है फिर समत १९१ के सालु पाली सहेर म श्री मदु जैनां चार्य पुज्यवर श्री १ ८ श्री उदयचंदनी माहारानने पितांम्बरीयों को पराजय इकर समेगी किमनमागरजी का आपना वेसा अन्याय कर पाली शहरसे विहार किया यो बात कइएक श्रावक जानते हैं ४

फिर समत १९३० के सालमें शहर आगरमें भी स्वामी पुज्य श्रीपरमलजी माहाराजसे सम्वेगी बुतनमविजय ... मंदिरमें चर्चासे पराजय हुवा ५

फिर पन्नाब नाम्न शहरमें राजा और मन्यम्य श्रावक समक्ष पितांम्बरी यौस श्री स्वामी उदयचंदजीनें विजयपत्र पाया जो गुरु मुखि विपामे का विचार सभी है ६

फिर अमरावतीमे श्री स्वामी पुनमचन्दजीस पितांम्बरी पराजय हुवे ७

समत १९४४ के माल मन्दसार शहरमें पितांम्बरी—प्रधानविम और समत १९४९ के माल सहेर निम्बाहेडमें स्वेमसी तिन मुखवाला रतनसुरी संवगी पराजय हुवा जिसकी मिसल टोंक सहेरमें मोजुद है अगर देखना हम जो उमेद वाता तलाम करके देख लेव ८

इत्यादि बोतसी जगा पर पितांम्बरी मुर्तीपुजक पराजय हुवे और हो रहे है और फिर भि होव तो होंगे

नोट—ना वेरको पराजय कि तमशा करना हो तो श्री स्वामी रतनचंदजी पंजाब वाले कि बनाई हुइ किताब संवेगी मुख मर्दन नाम कि उरदु म छपी

और फिर भी तुमको धर्म करने कि उम्मेद हो तो काठियावाड़, गुजरात, पंजाब, मारवाड़, मेवाड़, मालवा, वगैरे २ देशामें बड़े २ विद्वान मुनि महाराज तथा सतिजी व श्रावक साधु तेरी उमेद को पूर्ण कर सकते हैं

जहां तेरी खुशी हो वहां हो धर्म करके देख ले

इति दुरवादी हित-शिक्षा सुमती प्रकाश का द्वितिय

भाग समाप्तम्

ॐ शांति ॐ

अथ

दुर्वादी हित-शिक्षा सुमती प्रकाश का तृतिय भाग प्रारंभ्यते

श्री श्री १००८ श्री ऋषि हिरालालजी महाराज वगैर
वगैरे अनक माहा पुरुषों कृत किस्या धर्म संदन
स्तवन सवणिया पद तृतिय भाग

——:o:——

(स्तवन–अशी)

जगत गुरु त्रसला नंदन विर ॥ चाल ॥
शासिन माजि नरानीयानी नाम श्री वधमान
तिन पाठ हुवा कवलीजी चौसठ वष प्रमान १
चतुर नर मत करो खेंचा ताण. आगमकि साखनाशि
करणा वचन प्रमाण चाल–टेर.
गौतम स्वामि पुछियोजी पुत्र मगावति मनार
एकविस सहस्र वर्षे स्योंनि सासण वर्ते भीकार ॥च ॥२॥
भस्म ग्रहे लागा तिहांजी वष दोय हजार

शास्त्रमे तो छ नही दिया मनका अडंगारक ।।प०।।२७
कहे द्रोपदि श्रावग पुनीजी श्रावम शास्त्यात
श्रावगको पाठ बनाय दो ता मानकता भारी बात ।।च ।।२८।।
नाक्रिम कारण मिथ्यात्व हनी नहीं समका काम
जिन प्रतिमा कही केहनिजी नहि निर्थकरको नाम ।।प ।।२९।।
शक्र स्तवन कयो केहने जी दिस श्रावग आचार
निनवादीक सब देसको कर नमोथुणा उचार ।।प ।।१ ।।
प्रश्न व्याकरण अधम सुवागम भी मंदिर प्रतिमा नाण
मद बुद्धि कयो केहन छुट पृथ्वी कायाका प्राण ।।प ।।११।।
चैत्य शब्द कयो ग्यानका भी व्याख्या करे अणगार
तिहा पिण प्रतिमा इम कहे देखो भरा छुट बमार ।।प०।।१२।।
उवाइ भगवाइ उपाशग दशाजी ज्ञाता विपाक अभीराम
चैत्य भाख्या भग देवका नहीं जिन प्रतिमाका नाम ।।प ।।१३।।
कल्पित करने पर दियाजी उत सूत्र पाठ अनक
मत प्र सिमद बुधिया माने सही मिथ्यात की टक ।।प०।।१४।।
बलि कर्मका कर्थमजी जिन प्रतिमा ठेराय
अथ जुगन बेस नही मदि स्वामी भिक्षुगा भाय ।।प ।।१५।।
पाठ सुलक्ष्मा शास्त्रम भी नही क्रिया जिनराम
कसा श्रावग चैत्य किया कहाग साधु प्रतिष्टा करी आन ।।प०।।१
आनन्दादिक श्रावका दशाजी और अगादि माम
चैत्य जुहारी यात्रा करिता शास्त्रम बताबो माम ठाम ।।प०।।१७
समन्यजीक अभिग्रहम जी चैत्य शब्दके माय
मागस साधु जिन्मार्गका, म ज्यानवा सुनाय ।।प ।।२८।।
कसा भाग्य माउपास्तरे जी कहे चैत्य जुहारी माय

पानी ढोल ताइ फुल पाव मुगत करि मासुल
विपक मोष धुप स्याय प्याम हिंस्या मिखकी थाय ॥५॥
घ्यान धरिन पेठा दव प्याकी उपसातना कर भद मव
जो काहो साधु घ्यानके माय संवरण नर मुक्त थाय ॥६॥
जिन प्रतिमा कोन सरकी कहे हिंस्यामे धम समजी लहे
ऐसा भग्यानी जन्मकर अप दिनको गत बताव मद ॥७॥
उउय मिथ्यातका दिसे मोर कर पापी पाप अघोर
अप पाठक ही भोम्या तोर, ठम ठाम सुणकर चोर ॥८॥
दया धम भगवत कि वाण ए कथया कर छुटे प्राण
धम अथ हिंस्या जो करे, नांको न्याव आचारग मेरे ॥९॥
प्रश्न व्याकरणम एवो कया मंद बुद्धि मुल मो भयो
मंदिर प्रतिमा आभखार, कयो जीन म्वर करा विचार ॥१ ॥
हिराकाल कहे सुण गो सही जीन धनाम सका नहो
तम मिथ्यात को समकित धार, प्रतमा नही तारे ससार ॥११॥

अथ दया धर्मके निंदक पितांबरी विसा ११॥चाल चमत

कसा कम गति दखो कुमती पितांबरी नाम धराया है
जैसी साधु भाम कहलावत है ढोंगी ढोंग चलत है
दया धर्म की निंदा करते हिंस्या धम गुण गाया है
मिस्न मानो सत गुरु की मुख माहक जनम गमाया है ॥१॥
सला सोन ना धर्म की कुम्बंग हुमका पाया है
माता धर्मी मामन लावे मुधा पंथ बोलाया है
धुर्न मुहम बोले स्वछसा कुबिक्त कर रंगाया है ॥मी ॥२॥
गम मप केढ रपते पाग गम पाप कमाया है

केहि नगे प्रायज हाथ है तो सठता नही जाया है
सुत्र मुहसे सावम भारबा भगवति सुत्र फरमाया हैं ॥सी०॥२७॥
पथा वटे अन्के माही द्रोपदी निद्वाण कराया हैं
अंबे हाथ फिरे नचर्मे थावग्र नाम कराया हैं
शत्रुमय पुंड/रेक मात्रा किमका सुध कराया हैं ॥सी ॥२८॥
ममत्त मंचनभी सुध माग फोरुवि/रव संनाया है
मरतक्षकि कहे माया, एसा सुर नमाया है
मुच माप नही दिसे नेना, उसुको उल्ठ सुझाया है॥सी०॥२९॥
दहा हिरद बुद्धि जिनका, हाते मलिन मलाया है
दस्म होव मथाई मुरख, मुंत्ताभिम नाच नचाया है
सुध मार्गका हास ह्यका, चउ गति चक्र चडाया है॥सी०॥३ ॥
पितांबरीयोको सिक्षा देक, सुध माग बतलाया है
मा जो निंदक पुनक प्रतिमा, तिनको ग्यान सुनाया हैं
कम्मन हमारा सुध मावस, मिथांत वचन जो गाया हैं॥सी ॥३१॥
इसको पढकर अपने हृदये, वक्तको ग्यान समाया है
दया धर्म की करी घतिसी, सुचना मात्र दर्शाया है
हिराबाल कहे नीन मफीसे, दीन दुनि जस सवाया हैं
सिस मानो सद्गुरुकी मुखे, नाहक जन्म गमाया हैं॥सी ॥३२॥

इति वचन पितांवरी उवेसिन केमठ निंदक पितांबरीयाका याद
मा की बतीसीस समनाय हैं

॥ इति संपूर्णम् ॥श्रीः॥

मंदिर प्रतिमाका कराना प्रथम अथम गुणारमे करणी सुत्र प्रश्न व्या-

धर्म कहेवे हिंस्या करसी बोध बीज नही पायो
जन्म मरण बहु भमसि भवमे आचारग एम बहायो ॥सु ॥१६॥
तिनो कालकर हुवा तिर्थकर, ऐसमयों फुरमायो
पापिकर प्राण नहण्या काइ योहिज धर्म सुहायो ॥सु०॥१७॥
मदिर प्रतिमा आस्रव दुवारे, प्रश्न व्याकरणमे गायो
लोका रूप्प हियाके अधे व्यथ क्यों जन्म गमायो ॥सु ॥१८॥
हिंस्या धर्मके केहे होहे वेकिम मोक्ष सिधायो
साठ नाम दयाकर दिसे यापहिज पुमा पुजायो ॥सु ॥१९॥
शिक्षा इक विसी लिखण करवे श्रवण अमृत पायो
तहभी आतम अवध विमासी सुख अनंतो हि आयो ॥सु ॥२ ॥
समन उगणीसे सतक्के मोर्वी भीवा गजे सुख पाया
या मासा किनो गुरु परसाद, हिरालाल इमगायो ॥सु ॥२१॥

॥ इती मनु सिक्षा सपूणम् ॥

हिंस्या धर्मके पखने वासकम बेहाल आचारग सुयगडांग प्रमुख सूत्र भी प्रमुभिन फुरमाया है

(अथ स्तवन-राग-ईद्र समाके)

मानव भव पून्य जागसे. पनि कुल दरम्यान
अपनि आतम वारस्य प्रगट किया है स्थान ॥प्रा॥
पुग्गल की पुजा करी. अनंत अनंती बार
ग्यान दर्शन चारित्र बिना नही सरि गर्ज लगार ॥प्रा ॥१॥
आनंदा दिक श्रावक, हुवा केई हजार
किणका पूमि प्रतिमा पुमा अरस उवार ॥पा ॥२॥

क्या किमीय कंगाल आस भाव सारे ॥भ०॥१॥
मो प्रेम सागर प्यासा पिक प्यास क्यों मरे
गुणकंन साधु देखके फिर. दूर क्यों टरे ॥भ ॥२॥
चिंता मणि चिंता मेटे. काच क्या करे
मो काम धेनु दुग्ध पीया मह क्या चरे ॥भ ॥३॥
किसकी सवारी त्याग रासम क्यों चढ़
निज घर रानी महत रानी भाय क्यों मरे ॥भ ॥४॥
असली की मो होवे दास. नकम्स ना सरे
अंक्की होम असलीस पार नी परे ॥भ०॥५॥
भव नन भेन ओर फन क्या दुःखका हरे
दया दान तप मप स्मरण बातया सरे ॥भ ॥६॥
दया धर्म दिल रास नर्म पाखंड क्यों कर
हिरालाल गमल गाया उमग नचके तरे ॥भ ॥७॥

॥ इति संपुर्णम् ॥ श्री ॥

भारत राजा महेल बनाया पापच शास्त्र बनवाई पापच शास्त्रम तथा किया ऐसा शास्त्रम कहा लेकिन मंदिर बनवाया प्रतिमा की पुमा करी ए मा किसी भी सूत्रम नहीं कहा है

॥ अथ लावणी—रूदा राहाम ॥

भयम. धर्म मिन राम आम सब कामन सुधारणा करा विचार
हिम्या धर्मका उनकट प्यार दया धर्मका हो दिग्दार ॥टे॥
श्री महावीरजी होवा तिर्थंकर चाविसमा अवतारजी
निनका दास है आज दिनतक. दम वरिस अग्र हमारजी ॥

तिन वर्ष और साढि आठमास. रया था चोथकारमी
गौतम स्वामी केवल उपमा प्रभु पहोंचा मोक्ष मझारमी ॥
उसि समयमे भस्म ग्रहेकर भाग भिन्न होन हारमी
दोय हजार वर्ष की स्थिती शासनमे होवा बेकरारमी ॥
इतनामे केइहि भये पाखंडी, जिसका दिलमे करे विचार

हिंसा ॥१॥

माहावीर निर्वान गया पिछे वर्षे छसय परमानजी
बारा वर्षका काल पडा था दुनिया गई घबरानजी ॥
साधुको नहीं मिले सुजता छिन पाडे भजन मारजी
बहु मुनी तो किया संथारा बहु दिया भेख उतार जी ।
मस्तक राखि वह हाथमे था विष माथ घर २ घुमारजी
मति माहात्मा नाम धराया छोड दिया आचारजी ॥
अपना २ अस्थान बनाया जिन प्रतिमाका किया आधार

हिंसा ॥२॥

हिंस्या धर्मकी करि स्थापना नवा २ केइ ग्रंथ किया
पुजा शांति मठ यात्रा इत्यादिक केहि चलन दिया ॥
संस्कृत और प्राकृतमे केइ ग्रथ को बना लिया
उन ग्रन्थविच करे भाईंवर कोकोड बहेकाय दिया ॥
चार खान और गच्छ चौरासि गुरुकुलमे गुरुवाद किया
अपबस गोमाल बनाई. अपना २ गछ बांध लिया ॥
केइ गच्छ इसमे पड गया भामी केइ पड गया मर्म जंजालमा ॥

हिंसा ॥३॥

दया धर्म और हिंस्या धर्मकी हम दुनियाम लगर पडी
इम भतका बयान सुनको पक्ष पातको दुर करी ॥
समन पंवरासे षष इगतीसे मस्म ग्रह पिणगया उत्तरी
छाकर साहा परगट होता है दया धम कि मस्त करि ॥
कडक साधु परदेस रया था सनम पाल्हा म्वरोसरी
ओषि साधु आ पोहोचे है आपसमे विवाद परी ॥
अब इसि भातका पद्या तफावत जो याहि समजो चीत मनार ॥

हिंसा ॥४॥

कैसे शास्त्रम कोन श्रावक- पुजि प्रतिमा चोडा फुल
धुप दिप और ढोल नगारा बाजा गाजा क्रिया मस्मुल ॥
केशर चंदन करे विलेपन मरजी अपना मन माफूल
बस्त्र भुषण सिणगार करना देवी सुमारी देवता मुल ॥
त्यागी वक्की करि अवस्था नहीं भोग की रही मल्र
मत मुलो काहि मर्म शास्त्रमे दया धर्म को समजो गुर ॥
जैन शास्त्रका पंथ कठन ह करे खात्म ना होवे होसियार

॥ हिंस्या ९ ॥

कहे सुर्याभको पुजि प्रतिमा सुत्र शास्त्र दिखलाते हे
उसी मतका मद् नहा समजे वकरी जो बहेकाते है ॥
अमर दवकी रिप्त अनादि धर्म काहा कहा ठयराते है
तोरण थम ओर बाग बावकी क्या तमका कहीं पुजाते है ॥
उसिवेमानमे केथि होता देवता मिथ्या द्रष्टि पापाते है
या अनादि रित समकी कोंकि कामा मनाते है ॥

गोशाम्र प्रमुम्म प्रमार्दी मार्गमें कही समझाया ॥
अंब धर्म सूत्रीक उपर वैराग भाव कहींका आया
उनको क्या नहीं पुगा भाइ आपि वैराग की ह माया ॥
तप संयमम भार घ्यगाया था ही उतरगा पखेपार ।

हिंस्या ॥९॥

वितराग की प्रतिमा दम्ख्या वैराग भाव जो आते हैं
वो वितरागका सरागि करना वो पी मुख्य कहलाव ह ॥
पाणी फुल और धुप ध्यान वितरागी नही पास है
अंग रचना कशर स्माना भोगी भाग मनात है ॥
नाटक गीत वाजित्र बजाना अपना मन हुलसाव है
वितरागका लिया आसरा करमि धरम मनाव है ॥
पच इंद्रीक दमन करना मुक्त पाई तुम मम भमार

हिंस्या ॥१०॥

सर्चा प्रवका दुरा न्धो मर नारि वंदन आया
य ता पाठ सुत्रमु शास्त्रम तुमका क्यों नही समझाया ॥
जद वह कुमति समामणम सचीत फुल क्यों वरसाया
गा रि मुत्र ह बदनवाकाड़ी जब धम सुत्र बतलाया ॥
मनुष्यका ता मना करी है माफि देवका फुरमाया
ऐसा वचन नही हैवितरागी समज माच वाको वाया ॥
ना तुम दवकी बाउ क्या ता ह अव्रति नाही वर्तत गार

॥ हिंस्या ११ ॥

जनम माप्र बया दिसा अवसर, किया मनुष्यको ना सतमार

॥ हिंस्या १४॥

सुत्र आचारागम फुरमाया श्री सुग्र वाणि श्री वर्धमान
हिंस्याके करण वाळाका सुम्न काग्ण वाइ किया प्रमान ॥
धर्म कहेत संमारक मास. इनका अब सुम सुना मयान
जा करगा हिंस्या धम कहेत नही पाम समगित होव अग्यान ॥
वव गुरु धमके करण हिंस्यां करे वा सुत्र अग्यान
बहोत दुग्न पाकगा मारी चतुर गतिमे भ्रम चागान ॥
सुम्र सिल समज नही दिलम क्यो खाव हा गमकी मार

॥ हिंस्या १५॥

आनंद श्रावक अमड सन्यासिक सुत्र पाठ दरसात है
चईये शब्द वाहा नहीं प्रतिमा सुनी सुगा समात हैं ॥
टिका चुर्णी निर्युक्ती मसाक. गुरुस्याका भरमात है
मुम अधका भेद नही जाण खोत्या ढाल मचात है ॥
वाकि कर्मग्र मधापि सुत्र जिन प्रतिमा ठहरात है
अक्ष्म दिमका दस्म पुझ्कर. समकितसे डिगात है ॥
अगाने पिमसग नाम धताकर आप डुबे आरनका डूबार

॥ हिंस्या १६॥

व्यवहार सुत्रकी करि चुलिका भद्रबाहु मात्र अणगार
चंद्र गुप्त राजाको स्वपा शास्र सुस्पा पोहा सुनार ॥
उन सुपनाका अर्थ कहा हे भद्रबाहु प धुववार
पचमे आर दोसि पाग्बडि द्रव लिंगी भ्रम ग्म्यागहार ॥
थाप्य स्थापना करम चाल म- पाथा टसमन इपकार

एसे केहि करे मर्म जाल्मे मोले का भरमात है
आप डुबे ओरनको लेकर भव कूप गिरवात है ॥
दया धमका रस्ता छोडी उन्मार्ग क्या जात है
अंबोकी सम अंधे हावा वा पि गाता खात हैं ॥
मानो सिक्ष सद्गुरुकी वाणी याहक नर भव जात होहस

॥ हिंस्या २० ॥

केहि सिलाकर पाडी चढाई करि मुरती अपन तयार
किया माल छ गया बजारी जाया दिल्म धम निहार ॥
जदकिंची मतिष्ठा भय सुनाथा पुरुष लगा किउ अनार
भव क्या चरूमे हिल्न लगि जा तुम उनप लाया इतबार ॥
अगर संडित हानाव मुरति. जमिन दफन करल तत्कार
अन हिन जा होव किसिदम वा नहि छोडे निराआधार ॥
जागहि थाप आपहि उथाप आपहि सवग हाव सिरदार

॥ हिंस्या २१ ॥

करि मतिष्ठा मुरत बेठाइ वो जो तुमको तारणहार
किसी औरतका पति को मुर्ती कर प्रतिष्ठा करल भरतार ॥
गाय ममकी करी मुरती कर मतिष्ठा दुध दुधकी धार
तब ता तुमारा सारी मतिष्ठा कमम हान जद तत्कार ॥
कदे नाम स्थापना द्रव्य एतिना भाव हमारा उसि ममार
उनमेपि तुम भाव मिलसमा जभी तुमारा मगा विचार ॥
उन्ह पुन्यकाहेतु मगाकर क्या दुख भर मन मुगा ॥

॥ हिंस्या २२ ॥

हिरालाल कहे जीन मार्मक सरणा छे उतरो पलपार

॥ हिम्या २९ ॥

इति सपुर्णम् ॥ श्री ॥

श्री नमि राज माहाराजने इंद्र प्रश्न पुछके गढ महेल बनाओ तथ नाग शाहुकस करो जमपर बादशाहादिक देवो इत्यादिक प्रश्न कहा परतु मदिर बनाओ जात्रा करो प्रतिष्टा करावो ऐसा पुछा नहीं

ओर प्रश्न व्याकरण वर्तिको चीत मुनि कहा हे राजन आयं बन कर मत मानियोकी रक्षा माने अनुकपा कर तब तु देवता होयगा परतु एसा नहा कहाके शत्रुंजय प्रमुखकी मात्रा कर तो तु स्वर्ग नहीं जायगा

॥ अथ धर्म मुनिकी रत समाय देसी चलत ॥

तु मान कहारे मतवर मगरुरी झुंटी जिंदगी तु मान कहारे
कर छे गुरु अमर की बदगी अकामी
कौन श्रावक चैत्य बनाया कहो उसिका नाम ॥
सपणे श्रावक पाठ दिखावो कोण नगर कोण ठामरे ॥तु । १॥
आनदादिक कहावे श्रावक वंदन गया जिन राम
और गाथा कोय करि सरे. सुत्र पाठ दिखावरे ॥तु॰॥२॥
ईद प्रससा करि सरे. मरि समाक पाया ॥
कय देव पोया किया सर. कोण ठिकाणे बनायरे ॥तु॰॥३॥
पोसाये वंदन गया सरे. फिर ओलंदसन पाय ॥
श्री सुत्रसे प्रसथीय सर मरि परस्त्या मायर ॥तु॰॥४॥
काढा श्रावक हो गया सरे चैत्यालय नहीं बनाया ॥

मुक्ति गया आराधन हावा तग्या कुगुरुका सार ।।तु ।।१७।।
तुंगिया पुरका श्रावकास सूत्र भगोती माय ।।
तपे समभका फल पुछिया सर पताछा पुछा नायर ।।तु०।।१८।।
सूत्र भगोति वखला सर प्रश्न पुछ्या छत्तिस हजार ।।
घस्य तणि पुछा नही सर अधर्मका दुवार र ।।तु ।।१९।।
साध श्रावक का साता वहर होय ईन्द्र अवतार ।।
वव जीव तिनाका ठाकुर, भगवतिमे अधिकार र ।।तु०।।२०।।
वव लोकमे अवतर सरे प्रत्यक्ष मोटे हाथ ।।
क्या कारणि करतुत करिसरे होवा हमारा नाथ र ।।तु ।।२१।।
भवाजकी मेहर सर हम होवे तुमारा नाथ ।।
प्रथम वदु मे नाटक सरे तुम करो हमारि साथरे ।।तु०।।२२।।
मवासारण विद्या चारण घस्य वदनका पाठ ।।
भगवतिमे क्या विराधक मत कर मन कि आंटरे ।।तु ।।२३।।
मल्ली कुवरिका या फुरमायी ज्ञाता सुत्रमे जाय ।।
रुधिरका वस्त्र रुधिरमे धोया कभी सुध नही होयर ।।तु ।। ४।।
सूत्र निसन्मे वामादि सरे हिंस्या धर्म नि होय ।।
सूत्र साल विरोधक मरे, वे दियो सम्यक्त्व खोयरे ।।तु ।।२५।।
मणी धर्म और अधर्म दुवारमे, खुब खुला अधिकार ।।
आचारंग मोर प्रश्न व्याकरनमे, देख भव मागे दुवारर ।।तु०।। ६।।
प्रश्न व्याकरणका धर्म अधर्ममे, देख हिये विचार
घस्य प्रश्नया माहि पाल्या फल अधर्म दुवारे ।।तु ।।२७।।
त्रिलोक दिपा पच्चांगीकी मनी बताता मार्ग
दसामा अंगके माहि वसको कोगुरु लगाया रोगर ।।तु ।।।।२८।।
कृत्य वणाया कारण सरे करे जिवाकी घास

साद्य फम मगमवि कहा सरे मरे नगम बासर ॥तु०॥२९॥
उत्तरा ध्यन सुत्रने सरे छटि गाथामे आय
बिगडखिवी हिंसा कराव पापी समझा हायर ॥तु ॥३०॥
उत्तराध्यन गुणतिसम सरे मुन्ना चित्र छगाय
तीमोस्त्र मोलद्य फल चाछिया चेरफ्का फल नायरे ॥तु ॥३१॥
मिर्मा पुत्रनि महलमे सरे किवा पए पा ध्यान
माधु दरशनसे क्रिया सरे माति मनर्गे ध्यानर ॥तु ॥३२॥
मुहा दार दुला हास मुहा मिवी विस्तन
चस्य दुलहम कया सरे दसमी कालिक दगेरे ॥तु ॥३३॥
भीत हणा मत नाण तासरे मत कोहि हणो अनाण
छटे अधन दसमि कालिकम या मगवट बखाणरे ॥तु ॥३४॥
आद न। समयाहि रहेगा कर का वचन प्रमाण
दस अभिनम दमझा सरे नही चेत्यका नामरे ॥तु०॥३५॥
चार निक्षेपा कया सुत्रम एम स्वरूपा आकार
नाम स्थापना सुन्न है सर, तु दस अण मोग दुवारे ॥तु ॥३६॥
नाम इद गुवा किया सर गऊ बगवण हार
आनाकष्ठ बितराम दगजे गरम सरे निक्षगारे ॥तु ॥३७॥
मक्तकि लिंब मार नही सर सुध न दर गाप
प्रादु दरस भर गारका सर विदवा मुगागम नही पायत ॥तु ॥३८॥
पाम्बहि भौर मिदा चारि दष निक्षेपा माण
माधु भावक भाव निक्षेप किया भी मस्तानरे ॥तु ॥३९॥
मनाव। निर्गे कर गया सरे क्यो कर्ता ह दास
अशुम कर्मका भार सनारे. नहीं किमी का दापर ॥तु ॥४ ॥
नरी माव दरयाम गरे वटि भमर क दिप

मान गुण पाव किसाजी कसो पाव गुणस्थान ॥द०९॥
तिर्योग बाजका फल कथा भी उस धन सुनार
पुना फल चाख्यो नही देख्या अंतर नण उघाड ॥द०॥१ ॥
धर्म कारण हिंस्या नहीं भी. हम रया छेउसमय
मंद बुद्धि कथा तहनभी ता वा मन व्याकरण माय ॥द ॥११॥
त्रिक भूण पहना मंयम सुण आगमकि नाण
अंग उपांगम जा होय वा म्हे करा षचन प्रमाण ॥द०॥१२॥
भाव पुजा साधु तणीभी श्रावकके द्रव भाव
दानां की करा ओळखना बता शास्त्र की न्याव ॥द ॥१३॥
समन अठारसे वर्ष श्राणुमे मेडते सहर चामास
कारतिक सुद सातमके दिवस मको स्तवन किया प्रकास ॥द ॥१४॥

॥ इति संपूर्णम ॥

तुगिया आलंबिया-शावंथि-प्रमुख नगरियोके अनेक श्रावकोंकि अधिकार म कहा हे आटम्य चोदस पखिसा पापाक करत थके तथा श्रमण निमपन्त चौद प्रकारका सुनता आहार देता विचरे परतु एसा नहीं कहांकि पुजा म निग्य करता विचरे

कभो अबोध पत्थरीके मोक्षक किये ॥द०॥
कुगुरुक पड मर्म, मुकत आते सरसन्य
सुम हाक आरंभको करे फर मोक्षके लिये ॥द ॥१॥
करोंक फल अकर, फुलोंकि मंडप ठांकर
अग्निकी करे रोशनी फेर मोक्षके किये ॥द०॥२॥
आरंभ बीतरागे कण गुंगस धन नाव
पूर्वग करत है ताउ फल मोक्षके लिये ॥द ॥३॥

सुब नृत्य करते परमसे नही करते
करोंके देव मान्य फेर मोक्षके लिये ।।झ०॥४॥
हिंस्या धर्म मान. ध्यावे हे पुप ध्यान
झुक २ सीस नमावे फेर मोक्षके लिये ।।झ ॥५॥
शास्त्र सीख नामाने अपनी रुइ को तान
एसे मिथ्याती बन गये फेर मोक्षके लिये ।।झ ॥६॥
चाथमल कहे गुरु. हीरालाल मुनीवरू
फुरमावे हैं तरस खाकरजीव, मोक्ष के लिये ।।झ ॥६॥

॥ इति सपुर्णम ॥

॥ राग—कवालीम ॥

अर अज्ञानमे रहेक क्यों नर मव गमाव हो टे ॥
सचा दया धर्म श्री जिनका अमलम क्यो नी लाव हो
छ कारणस कर हिंस्या आचारंगम कही जिनवर
अहीत समकित का होव नास. पाठको क्या छुपावे हो ।।अ १॥
असग हे सिव फुरमामे प्रसगा मत फुरमाया
जातो सोच एवीदर. अनाथको क्यों सताव हो ।।अ २॥
धाइयेसा भय एक प्रतिमा फक्त दुगउस करते हो
कहा आचस य हमस क्या मुढकी बाव बनाते हो ।।भ ३॥
प्रतिष्टा नही करी साधु नही श्रावक करी पूजा
नही है मुल सचाम क्या मुर्खोका बेहकाते हो ।।अ ४॥
दुब बाल रेखम गुरूज्ञान नही मानोगे तुम हरगीज.
अब तुमारी वास्तनामकी क्यो हर्षा इय बहान हो ।।अ० ॥
मैन धर्मी कहलाक तुम बीसय बीसरम करचो

चोथमलजी माहाराम गुनी नन माहा वीराम गुरस्यानी
मिन भासण करणे लगा था खिवी मुन अवसरमानी ॥
किया चोमासा निंवाहेडे अदर प्रगट होइ सममेनानी
पथ माहामत मितरके गुन, नही पावत हे सयसानी
धुर प्रणाति पात मिनकी हंस्या मृसावाद बरवे द्रगछन
दान भद्ता उनेसचा महिचुन कि करत वछा मिखत
मिमहसे तीमती प्यारहे, कहि लिया कांह लगा दिया की ॥१॥
नयमलजी आर भोगीदासमी, सावरमी दोनो माया
चत्र मासा की सत्ता द्धरि मद बेठ रेल मावरे आया ॥
रत्नचंदनी माहाराम आदर्श सरे ठाणा दर्सन पाया
तिरुताके पाठ वदना कर विनती सम गुण गाया ॥
माहारसलजी ओर नदलालनी हिरालालमी खिस थाया
रत्नचंदमी माहागन हुक्म दीया करके व्याहार कास व्याया ॥
धुर-धरके व्याहार नरसको आग्रा निंवाहेड चोमासा ठाया
पथ माहामतक गुण गाया श्रावनी सम सिस नमाया
मीठ्त न्याव नीन और रित्त मारगसे
बखानम नन लगा पिया ॥की २॥
सुनी हकिगत सभी समेगी प्यार दास्त्ना मने नगर
न्याय इसर गम दिल्लभो ऐसो दिसमे करि मगरूर ॥
भालि दुनिया समया नहती याहवार रामेन्द्र सुर
नदराम मुनी देस दामकर नवाब द किया दूर धुर ॥
ना प्रम मदरामनी पुना हाना समेगी चकना नूर
म हि नग जिन ममा जीनान नही पाया कुछ परा सुर ॥
दुर ना ममका नवाब गामी सुम पतिम मिस्ता करार्मा

इम अमको समजो आम चंपा पुरी इम्मारजी
सुण प्यारे उत्तरको मम देश सावथी नगरी
सुण प्यारे पश्चम कच्छ हे देश धुणाकि डिंगरी
सुण प्यारे दक्षण कच्छ हे देश कशुबी नगरी
मिस्त इनके आगे सभी अनारज
शास्त्रके प्रमाणजी ॥त० ८॥

भाव मति इमको यि सुना हे उसी मुल्क मुनारजी
जनी एसा नाम धराता मलाकम करे आहारजी ॥
पांच कल्याण हावा प्रभुनका आजम सुख कारजी
जिन मंदिर वाहां नहीं हे प्रतिमा सुना सब इकरारजी ॥
जिन मंदिर बिम्बोंका दरशो इमि मुल्क मुनारजी
बिन सांजे बिन फिर भटकता कुछ नहीं निकले सारजी ॥
सुण प्यारे इष्ट देवके चरण सदा रहेना
सुण प्यारे तिरथ का दाव रखा तो समज कर छेना
सुण प्यारे श्रीकमाल जोर्ण कालेका कहेना
मिस्त तासम तेवीसकी करी जवनी
सुण मा चत्र सुजानजी ॥त० ९॥

इति सपुगम ॥श्री॥

अन्य मतवमें [illegible] साहान कवी और परम भक्त करके "कबिर दासजी" हे उनाने मं[illegible] [illegible] एक इर नम बनाया हे सो निच मुजब—

तिन सार [illegible] ना[illegible] वर्णिज, अनंत गुणका धामी—राम—
पाक सु [illegible] बनाया, गुरु मिल्या कमीन हरामीर ॥१॥
मंदिरमं बाहे बाजता [illegible] प्यारा भगम बिराज श्री भगवान ॥टे०॥

इण रस्तानें पडिया रेव यम दुवारे नारेरे ॥१३॥मं ॥
असल छोड नकलको ध्याव या मुरखकी बुद्धि—राम-
रत्न चिंतामण हाथमें फेंक कांच महे मं शुद्धिरे ॥१४॥मं ॥
कहेत कबीरा सुन भाई साधु यो पद हैं निर्वाणि—राम-
या पदकी जो निंद्या करे, हाथ बाकि धुल धानीरे ॥१५॥मं ॥

॥ इति ॥

—पुज्य चोथमलजी माहाराज कृत् स्तवन—

सासण नायक न्यो उपदेश धर्म करा मिट जाय कलेस
ग्यान दर्शण चारित्र तप भाव यान अराध्यां भव जीव तिरण्रो दाव ॥१॥
थ जिन जीग वचन हिये धरोजी तुमें जिव हणिनें पुजा कांई करोजी ॥टे॥
सतर भेद लई पुजारा नाव, छ काय किवारो कांईयरोजो हाण
इमकिमरिनें भा वितराग जिके पाप अठार राकर कछा त्यागा॥था॥२॥
पुजा करावा साधु नाम धराय इसडा अंधरो नहीं जिन धम मांय
माहरि माता पर कहिनजी बांस दिन टो फरा किम थावजी मांसा॥था॥३॥
प्रभुके अंगिया रचो वल गहेणा पहिराय. नाटक करावसे ताल बजाय
धमक पैसा कर बावानी मोल पिण संजम पडियो जाजल दव लोळ॥था॥४॥
प्रभु त्यागी हुवा ज्याने माग जमाय लख गुण किवाय धूजम भाव
माज्म नवी आणा गादरि प्रवाह शिस दिमा चोर देवे नाराहभजी॥था॥५॥
सतरे प्रकार करि मिवान रास ए पुजा कही सूत्र निजी सास
मादर्सु पुजा श्री अरिहंत दव, सत्य शिल चंदन अगर अभव ॥६॥थ ॥
आचारंग प्रथम ध्याकर्णमें पाठ दया पाल ज्युं बंधे पुजनों थाट
साठ नाव दया राजी होय जिणमें जीव रत्न पुजासे ज्याजी जाय ॥७॥थ ॥